श्रीमन्नागपुरीयबृहत्तपगच्छाधिराज

सूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमो नमः

श्री
श्री पा श्री
श्री पा स पा श्री
श्री पा स च स पा श्री
श्री पा स च द चं स पा श्री
श्री पा स चं द सू द चं स पा श्री
श्री पा स च द सू री सू द च स पा श्री
श्री पा स चं द सू री श्व री सू द चं स पा श्री
श्री पा स चं द सू री श्व र श्व री सू द च स पा श्री
श्री पा स चं द सू री श्व र स र श्व री सू द चं स पा श्री



गुरुभ्यो नमो नमः





श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वरना शिष्य.

पृष्ठ (१२४)मां रहेल परिशिष्ट.

वाचक श्री कुंभकरण महाराज, वाचक श्री कर्णराज, वाचक श्री वरदराज मुनि, वाचक श्री राज, वाचक श्री वीरजी मुनि, पंडित हांपराज, पंडित माल मुनि, पंडित हाम मुनि, पंडित दूणचंद्र, पंडित किकचंद्र.

आ नाम पछीथी जाणवामां आवेल छे.

अर्पण पत्र.

जेओ मान्यवरो साचा जैन छे. दृढ धर्मानुरागी छे, अचळ श्रद्धामयी मनवाळा छे, कसोटी थतां उमदा सोनानी साक्षी आपवा सरखा निर्मल नियमादि धारक छे, सदैव करुणा मैत्र्यादि सद्भावनाओ युक्त छे, सदाचारमां अडग चरित्रवंत छे, भेद बुद्धि तथा ममत्वना संस्कारथी रहित छे, अने हमेशां सुरंगमां रंगायली वृत्तिपूर्ण पवित्र सुमनसो छे तेओ नेज आ मनेच्छापूरक चरित्रनुं पुस्तक अर्पण करी तेमनां हस्त मन वाणि अने नेत्रोने शोभा मह निहाळी ज्ञानानंदी थउं छुं अने इच्छुं छुं के आप ज्ञाननी आशातनाथी अलग रही आ चरित्रने वांची मनन करी आनंदोर्मीओने उत्तेजित करी मार्ग श्रमन साफल्यता बक्षवा सदैव कृपाळु थशो.

क्षमापना.

आ संक्षिप्त चरित्रनी अंदर जे कंइ समज फेरथी किंवा आलंबननी अपूर्णताना दोषथी लेखमां भूल चूके के वृत्ति दुभाय जेवा शब्द प्रयोगों हाजरी आपी होय तो ते माटे आप सर्व सुज्ञ पाठको प्रत्ये पुनः पुनः क्षमा याची त्रिकरण शुद्धिवडे थयेला दोषोनी निर्जरा थवा मिथ्यादुष्कृत दउं छुं.

सत्य संतचरणोपासक.

प्रकट कर्त्ता.

सत्पुरुष अने सुज्ञानी साधुओना सद्गुणो.

स्वधर्ममां तत्परता, सुखमां माधुर्यता, दानमां उत्साह, मित्रमां निष्कपटता, गुरुओमां विनयपणुं, आचारमां पवित्रता, गुणमां रसिकता, चित्तमां गांभिर्यता, शास्त्रमां ज्ञातापणुं, रूपमां सौंदर्यता अने प्रभुभजनमां तल्लीनता ए सर्व सद्गुणो सत्पुरुषमांज हाजरी आप्या करे छे !

जेओने सत्य एज व्रत छे, जीव मात्र ऊपर समान दृष्टि छे, दयामय छे अने काम क्रोधादि कषायथी विरक्त छे, तेओज साधु कहेवाय छे ! मुंगा रहेवाथी, भस्म लगाववाथी, कायाकष्ट करवाथी, जंगलमां रहेवाथी के जटा नख वधारवाथी मुनि गणातो नथी; पण मनने काबुमां राखी सर्वथी समभावे वर्ते तेज स्थिर बुद्धिवाळो मुनि मनाय छे. जेओ कोइ काळे पण मन, वाणि के कर्म वडे कोइ प्राणि प्रत्ये पापबुद्धि चिंतवता नथी तेओज सुज्ञानी साधु पुरुष गणाय छे !

(सद्गुण संग्रह.)

जीवनचरित्रो वांचवानी जरूरियात.

जीवनचरित्रो--वांची मनन करवाथी-सारासार, कृत्याकृत्य, गम्यागम्य, भक्षाभक्ष-अने-योग्यायोग्य आदिना तफावतनुं ज्ञान मळे छे. भाषानी, मनना-व्यापारनी अने आचारनी शुद्धि थतां प्रशंसापात्र थाय छे. अनीति--अनाचार--अनिष्ट रीत रिवाजोने लीधे थतां नुकसानोनो मार्ग- बंध-पडे छे. देव गुरु धर्म ए त्रणे तत्त्वनुं रहस्य समजवामां आवतां आत्मोन्नतिक्रममां विचारी उभय जन्म सफळ करवानां साधनो रजु थाय छे.-विविध वृत्तान्तोनी खुबीओवाळी मजा प्राप्त थतां एक सारा अनुभवीनी गरज सारनार नीवडी उत्तमजननी ओळमां पद मळे छे. संसारनी असारता, स्वार्थनी सगाइ, आधि, व्याधि, उपाधिनी वेठवी पडती मुशीबतोनो चितार निहाळवानो समय दृष्टिगोचर थाय छे. दाखला दलीलनां दर्शन थतां मननी अंदर सचचोट असर थाय छे. जीवन साफल्यताना नियमो तेमज सत्कर्म वडे प्राप्त थतां स्वर्गापवर्गादिनां सुखो स्वयमेव मेळे छे. माटेज

जीवनचरित्रो जरुर वांचो जन्म सफळ थवा जनो !.
एथी अवश्यज अटकशे दुष्कर्मरूपी दुश्मनो !
आ जन्म ने परजन्ममां मळशे महा शांति नक्की !
मुक्तिवधू मनमोद सह-वरशेज अंते ए थकी !

कंठमणिरूप कथनो.

प्राणि मात्रना प्राणोने पोताना प्राण समान प्रिय गण, सदा सत्य बोल, वगर आपेलुं कंइ पण ग्रहण न कर, परस्त्रीनो सर्वथा त्यागकर, पारकुं धन पत्थर समान गणी तेनी ममता छोड, धर्माचरण कर, अधर्मने तिलांजली दे, विद्याभ्यासमां तेमज धर्म करणीमां किंचित् पण प्रमाद न कर, विद्यागुरुनी तथा सद्गुरुनी सेवामां तत्पर रह्या कर, आरोग्यता जाळववामां उगुक्त रहे, उत्तम वैभव प्राप्त करवामां उत्तम विचार बळनो उपयोग कर अनिंदित कर्म करवामां निरालस्य था, दुष्कर्मोने दमन करवामां वीरमणि नीवड, सद्गुण ग्रहण करवामां चानकदार ग्राहक था, अनाचार अवगुणने अनादर आपवामां बिलकुल बेदरकारबन, साचानो संगी था, मनुं संगनो उमंग साथ रंग लगाड, पापथी विरक्त रही पुण्य-मां रक्त रह्या कर, गुरुनी वाणी श्रवण करी तेनो सार ग्रहवामां विवेकी नीवड, देवदर्शन, तीर्थाटन, जप, तप, ध्यान प्रभुभक्ति वगेरे मां उलट इच्छावंत था, दीन हीन दुःखीना तरफ दयानी लागणी भरी दिलसोजी बतावी तेमनी सार संभाळ ले, मळेला धननो सद्गु

उपोद्घात.

सुकृपा वांच्ये सर्वदा, सन्मति थाय सहाय;
दुर्मति दुर्गति दूर थइ, आनंद मंगल थाय.

प्रिय पुनीत पाठक वर्ग ! पूर्ण प्रभावशाली महदात्माओनां जीवन वृत्तान्तो अत्यंत लाभदायी होवाथी आ उत्तमोत्तम बोधदाता श्रीमान नागपुरीय बृहत्तपगच्छाधिराज मंगल मूर्तिरूप पार्श्वचंद्रसूरीजीना संक्षिप्त जीवनचरित्रने गुर्जरी भाषामां गद्यपद्यमय तैयार करी प्रगट करवा मारुं मन ललचायुं. कारण के-शो रचना सोनाने, सुगंधीदाता पदार्थोने, कीमती कोहीनूरने अने उमदा पदार्थने, ग्रहण करवा कोनुं मन नही ललचाशे ?

ललचावानो हेतु एज हतो के—बीजी नकामी कुथलीओ, विकथाओ, नाटक चेटक अने शृंगारी लेखोमां अमूल्य वखतनो भोग आपी महामूला जीवनने गुमाववा करतां आवां अत्युपयोगी प्रमाणभूत चरित्रो वांची विचारी मनन करवामां समय व्यतीत थाय तो ते लेखे थयो गणाय छे.

जे पुस्तक वांचती वखते अनीतिने अनादर, सुनीतिने आदर, सद्ज्ञानने सन्मान अने भाइ बहेन पासे बेसी वांच्या छतां मनमां कशो पण संकोच क्षोभ न थाय तेज पुस्तक उत्तम लाभदाता मनाय छे. पण आ वृत्तान्त आत्मकल्याणमां प्रवृत्ति अपावे छे. जेथी प्रत्येक आत्मकल्याणेच्छु भाविकजनोए अत्यंत मानपूर्वक आद्योपांत लगी वांची विचारी तेनुं मनन करवानी अत्यावश्यकता छे।

कोनुं जीवन सफळ छे ?

जन्म धरी आ जगतमां, भर्यां सुगुणभंडार;
  सुयश मेळव्यो सर्वस्थळ, एज सफळ अवतार !
प्रतिदिन पावन मनवडे, करी सुकृत्य अपार;
  उभय जन्म उज्वळ कर्या, एज सफळ अवतार !
दुःखी दीनजन देखीने, दया धरी दिल सार;
  दूर कर्यां दुख सर्वदा, एज सफळ अवतार !
गुण जाणी गुणवंतना, पेश वनीज उदार;
  उत्तेजन आप्युं अधिक, एज सफळ अवतार !
सद्गुण धन संतति अने, अधिक मळ्ये अधिकार;
  नम्र रही नित जय वर्यो, एज सफळ अवतार !
संत अतिथि कवि सुजननो, स्नेहे कर्यो सत्कार;
  आशिप व्होरी शुभ सदा, एज सफळ अवतार !
दुर्व्यसनो दुर्गुण अने, दुर्नीति दुखकार;
  तिरस्कार ते तरफ नित, एज सफळ अवतार !
सुगुरु सुदेव सुधर्मपर; पूर्ण राखी उर प्यार;
  भक्ति करी शुभ भावथी, एज सफळ अवतार !
फटीवद्ध रही मति पळे, वर्याज पर उपकार;
  पूर्णचंद्र ए पुरुषनो, सदा सफळ अवतार !

भूमिने भाररूपकोण छे

जेओ विनय विवेक विद्या विमल व्यापार अने विनीत वाणिथी
वाकेफ थइ विशुद्ध वैभव युक्त जीवन गुजारी वाद वाद वरी शक्या
नथी, जेओ सदाचार, सुनीति, सद्विद्या, सद्धर्म अने सत् शास्त्रथी
विमुख रही पापाचारमां प्रवर्त्तन राखे छे जेओ अढारे पापस्थानकना
आराधक बनी नरकद्वारमां जवानी निसरणी रुप थइ रहेल छे. जेओ
नास्तिकताने स्वाधीन थइ सत्य वस्तुने असत्य मानी प्रशंसनीय
सिद्धांत वाक्योने पापरुप माने छे. जेओनुं मस्तक शुद्ध देव, शुद्ध
गुरु, सत्पुरुषोना चरणोमां नमतुं नथी, लोचन तीर्थ, भगवंत अने
साधुमुनिराजना दर्शन करवा चाहतां नथी, हाथ सुपात्रमां दानदेवा
तत्पर रहेता नथी, चरण पवित्र तीर्थस्थळो तरफ गमन करता नथी,
मन विमळ वासना युक्त परमात्मानी भक्तिमां लीन थतुं नथी, अने
वाणी आगमोनां फरमानो उचरवाने उजमाळ बनती नथी. जेओ
तप--जप- दया--ध्यान--ज्ञान--अने स्तुत्य क्रिया कांडमां अडग रही
एक रस थता नथी जेओ धनवान छतां धननो सदुपयोग करवामां,
विद्वान छतांविद्यानो प्रचार करी अविद्यानो अंत करवामां, अधिकार
छतां अन्यायी अने अनाचारियोने योग्य शासन आपवामां अने गौरवता
पूर्ण गुरुपदना भोक्ता छतां शिष्योने सन्मार्ग स्वाधीन करावामां बेद-
रकार रहे छे. जेओ शक्तिवंत छतां परोपकार वृत्तिमां पछात रही
अर्थीनी आशा पूर्ण करता नथी तेओ भमीने भाररूपज छे।

आ चरित्रमां चरित्रनायकना वृत्तान्त अंदर जोडतो परिश्रम लेवा जतां पण क्रमवार वर्षोनो अहेवाल यथास्थित हाथ लागी शक्यो नथी; केमके बीकानेरना खरगच्छी उपाश्रयना भंडारमानां पुस्तको रक्षकना अभावथी वर्षाकाळमां पावसना प्रतापवडे कागळना पींडरूप बनी गयां, जेना लीधे योग्य आधार हाजरी आपी शक्यो नही; तथापि बनता प्रयासे अन्य ग्रंथोमांथी तत्त्वग्रहण करवानी सुविचारणा प्रयोग विषय हाथथी जवा दीधो नथी. तेमज पूज्यपाद आचार्यवर्य्य श्री भ्रातृचन्द्र सूरीश्वरजीना साक्षर शिष्य मुनि महाराज श्रीसागरचन्द्रजी साहेबे केटलीक हकीकतमां उपकार करेल छे तेथी तेमनो अंतःकरण पूर्वक आभार मानुंछुं. तेमज अन्य जनोये सहायता आपी छे तेओनो पण उपकार मानुछु.

जो के में ग्रंथ पूर्ण कर्यो छे; तदपि तालावेलीनी तृप्ति पूर्ण थवा पामी नथी, एज महान् प्रभाविके चमत्कार प्रदर्शित करेली करणी तथा करेलां चोमासां अने रचेला ग्रथो जेम बने तेम शोध खोळ द्वारा हाथ करवा यत्न प्रयत्न चालुज रहेल छे. आशा छे के प्रत्येक निर्मलमतिवंत वाचको सुविचारणानुं वातावरण सबळ करी अमारा मनोबळने पुष्टि आपी धारणाने सफळता अपावशेज अने जनसमुदायनु विशेष श्रेय चाही एज इच्छशेकेः—

सर्व जीवनुं शुभ थजो, जजो कलेश कंकास;
तप जप सजजो सदा, भजजो पुण्यप्रकास

मौन एकादशी स. १९७१	सर्व जीवहित चिंतक शाह मंगळदास लल्लुभाइ

प्रस्तावना.

प्रियवाचकवृंद ! परमकृपालु परमात्मा वीरभगवानना शासनने दीपावनार अने शासन द्रोहीओने विजय करी शासनने टकावी राखनार श्रीवीरशासन विजयकारी धुरंधर घणा आचार्यो थइ गया छे. तेमांना आ एक धुरंधर पूर्वाचार्य श्री पार्श्वचंद्रसूरीश्वर के जेओ " युगप्रधानपद " भूपित थइ भारतभूमि निवासी भव्य जीवोना उद्धारक थया. ते महापुरुषनो जन्म कइ सदीमां थयो, वली कया देशना कया शहेरमां, वली तेमणे दीक्षा क्यारे अंगीकार करी, अने पदांकित क्यारे थया विगेरे सविस्तर वीना तेमनुं जीवनचरित्र अवलोकवाथी जणाशे. तेमनुं जीवनचरित्र अन्य महात्माओ करतां विलक्षणज छे. तेमनुं जीवनचरित्र भव्य जीवोनुं उद्धारक छे. तेमनुं जीवनचरित्र घणुं विशाल छे. छतां अत्रे अनुकुल साधनना अभावे स्वल्प

साधननी सहायताथी स्वल्पज छे. छतां कोइपण महात्मा सानुकुल सामग्रीना संयोगे करी वहोला विस्तारथी लखशे. तेमना जीवनचरित्रमांथी आपणने हीतकर घीना वहु मली आवे छे. तेमनामां उत्तम उत्तम गुणो आपणने शिखवा लायक वहु विद्यमान हता. तत्त्वशोधकता गुण–ने तो एमनी मान्यताज कही बतावे छे; कारणके एमणे जे जे मान्यता करेल छे, ते ते मान्यता अगाध बुद्धि वडे आगम उदधिने मथन करी करी होय नहि? एम सर्वकोइना हृदयमां भान करावे छे. मतलब के एमनी मान्यताने तत्त्वशोधक मतिवडे मतिमान् मतिमां ज वारे आणे छे त्यारे तेमने अत्यानंद उत्पन्न थया विना रहेनोज नथी. कह्युं छे के:-

> द्वाभ्यां यन्न हरि स्त्रिभि र्न गिरिशः स्रष्टा न चैवाष्टभि
> र्न द्वादशभि र्गुहो न दशकन्धरेन लंकापतिः ॥
> नेन्द्रो दशभिः शते र्न जनता नेत्रै रसंख्यै रविः
> तत् प्रज्ञानयनेन पश्यति बुद्ध श्चैकेन वा तु स्फुटम् ॥१॥"

तत्त्वज्ञ पुरुष प्रज्ञारुप एक चक्षु वडे ते वस्तुने खुली रीते जुवे छे, के जे बे चक्षु वडे विष्णु जोतो नथी, त्रण चक्षुथी महादेव जोतो नथी, ब्रह्मा आठ चक्षुथी जोतो नथी, बार चक्षुथी कार्तिकेय जोतो नथी, वीश चक्षुथी रावण जोतो नथी, हजार चक्षुथी इंद्र जोइ शकतो नथी, अने असंख्याता लोचनथी मनुष्यनो समुह जे वस्तुने जोइ शकतो नथी, ते वस्तुने मात्र ज्ञानरुप एक चक्षुथी विद्वान् पुरुष स्पष्ट रीते देखे छे. "बुद्धि मात्रा त्रयोदशी." अपूर्व तेरमी मात्रा बुद्धि छे. तो ए आचार्य तेवी तीव्र बुद्धिना धारक हता. तेनी साथे उत्तम प्रकारनी विचार श्रेणिने धारण करनारा हता. त्याग वैराग्य संपन्न मिथ्यात्व अंधकारक आचार्य-श्रीने क्षमागुणतो अपूर्व शोभावतो हतो.

अने दयालु गुणे तो एमना रोमरोमने विषे निशंकपणावडे करी निवास कर्यो होय नहि, तेम एमना प्रतिवचनमां प्रत्यक्षज प्रतिभाष थाय छे.

निष्कपटता–सरळता–आर्जवता गुण एमनामां प्रशस्य हतो. एम एमना दरेक ग्रंथ कही बतावे छे. केमके कोइ पण ग्रंथमां " मारुं साचुं " ए आग्रह देखातो नथी. किन्तु प्रमाणिभूत अने स्वमत अभिनिवेश रहित एवा गीतार्थ कहे ते सद्दहवुं एवो उल्लेख दरेक स्थळे (ग्रंथे) देखवामां आवे छे.

मृदुता–गुणने अंगिकार करेल तेथी मान राजानी फोजने–जाति लाभ, कुल, मद, तप, विद्या, प्रभुता अने रुप ए मदोनुं जोर तेमनी पासे चाली शकतु नहतु एम तेमना वचनो कही बतावे छे.

भवभिरुता गुण–एमनामां केवी रीतनो हतो ते पण तेओश्रीना रचेला ग्रंथ जणावी दे छे. तेथी वाचकोने ते ग्रंथो वांचवाथी अथवा श्रवण करवाथी आपों आप मालूम पडे तेम छे.

शुद्ध प्ररुपकता गुण ते समयमां तेमनामां जेवें हतो तेवो अन्योमां कम हशे. एम कहेवामां कंइ अति

शयोक्ति गणाशे नहि. कारणके कोइनी दाक्षिण्यताथी वा कोइना संबंधथी अथवा दबाणथी पण उत्सूत्रनी प्ररुपणा करी नथी. किन्तु उत्सूत्र खंडन करी सूत्रपक्ष स्थापन करवामां कटिबद्ध थइ भव्य जीवोना उपकारार्थे श्री सिद्धान्तना बालावबोधादिक संपूर्ण श्रम लइ करेल देखाय छे.

दीर्घ दर्शि गुण—बालावबोध करवामां जे वापरेल छे ते आधुनिक समयमां श्री जैनशासने बहु उपकारक थइ पडेल छे. उदाहरण तरीके संवत् १९५५नी सालमां युरोपिअन पंडित हरमनजेकोवेए श्री आचारंग सूत्रनो तरजुम्मो अंग्रेजीमां करेल तेमां लखेल के " जैन मुनिओ मांस अदन करता हता " ते वखते न्युसपेपरोमां तेमज श्री जैन संघमां बहु चरचा चालेली हती. अंते आ आपणा पूज्य आचार्ये करेल अर्थथी पंडित हरमनजेकोवेनी भूल सुधारवामां आवी हती, अने आचार्ये ते पदोनो अर्थ वनस्पति विषयमां करेल ते सर्व

जैन कोमने उपकारक थइ पडेल हतो. तेथी ते वीनाना अनुभवी भव्योने आ आचार्यश्रीनो अर्थ करवामां दीर्घ द्रष्टि भविष्यकाल माटे केटली लाभदायक थइ ते स्पष्ट जणाइ हती.

सम्यक्त्व गुण–ने तो तेमनां उद्गारज कही आपे छे के–

श्लोक–त्वतःपरं न देवं, मनसा ध्यायामि सर्वथा नाथ ॥
वचसापि न स्तवीमि, प्रणमामि न मस्तकेनाहम् ॥१॥

–आपनाथी अन्य कोइपण देवने मनथी ध्यावुं नहि. वचनथी स्तुति करुं नहि. कायाथी नमन–प्रणाम करुं नहि." एटले वीतराग देवाधिदेवनेज हुं देव तरिके स्वीकारुं छुं.

"भाव विशुद्धिं स्वामिन्; मम विज्ञाता त्वमेव सर्वज्ञ ॥
किं बहुना गदितेन; प्रभु रेको मे त्वमेवासि ॥ १ ॥

हे सर्वज्ञ हे स्वामिन् मारी भाव विशुद्धिने आपज जाणो छो. अधिक कहेवा वडे करीने शुं? एकज तुं

मारो प्रभु छे." इत्यादि वचनोथीज आपणने खातरी थाय छे के एमनामां सम्यक्त्वदृढता संपूर्ण हती. वली जैनोमां अंदर अंदरनी कटाकटी जोइ श्री जैनशासन उपर अनुरागवाचक वचनो पोते लखेला छे के-

" सुतीक्ष्णापि कृपाणीया, स्वं कायं नो छिनत्ति सा ॥
यो जैनो जैन विद्वेषी, सतस्या अति रिच्यते ॥१॥

बहु तीक्ष्ण एवी जे तरवार ते पण पोतानी कायाने छेदन करती नथी, तो जे जैनी थइने जैननी साथे विद्वेष करे तो ते तेनाथी पण अधिक गणाय. "

जिनमति जिनमति नवि मीले, निंद ए माहोमांही रे;
छंडी समता ममता ग्रहे, पांड ए लोक प्रवाहरे.
शांतिजिन सांभलो विनति

इत्यादि वाक्यो उच्चारण करेला छे.

सद्देशना-तेओश्रीए मरुधर (मारवाड)मां सद्देशनाना प्रतापे बावीश गोत्रीओने प्रतिबोध आपी जैनधर्मी,

कर्या. ते हाल सुधी पण विद्यमान छे. तेओना गोत्रोनां नाम नीचे प्रमाणे–

१ बांठीया, २ दफतरी, ३ वेगवाणी, ४ तातीड, ५ लोढा, ६ छोरिआ, ७ नवलक्खा, ८ खटोल, ९ बरडीया, १० राखेचा, ११ रामपुरिया, १२ दुगड, १३ मणोत, १४ आंचलीया, १५ गोगड, १६ भणशाली, १७ श्री श्रीमाल, १८ भंडारी, १९ टेटीया, २० चोधरी, २१ सोनी, २२ घोमावत, उपला गोत्रीओने शुद्ध श्रावक धर्म अंगीकार कराव्यो. वली कडवाने मीठा कर्या. तेमज मालदेव राजा अने मेवाडाधिपति तेमज सालवपति तेआने पण देशनाना प्रतापे जैन धर्मपर पूर्ण श्रद्धावंत कर्या. परन्तु हालनी पेठे तेमणे जैन धर्ममां ने जैन धर्ममां खटपट करी नथी.

संवेगता गुण–तो एमनामां एवो हतो के जेथी मनुष्योना हृदयमां एमना वचननी छाप पडली हती. मोक्षाभिलाष सिवाय कोइ जातनी जेमने इच्छा हती

नहि. शम, शील, सौभाग्य, औदार्य, धैर्य, गांभीर्यादि गुणना समुह वडे जेमनुं शरीर घणुं सुंदर अने जीवोने आदरणीय, सेवनीय, उपासना करवा योग्य, नमवा लायक, स्तुति लायक हतुं. तेमनी अगाध स्मरणशक्तिथी जीवो आश्चर्य पामता हता.

वली युगप्रवर आचार्यश्रीये घणां काव्यो करेल छे. तेमां पण केटलांक काव्योमां घणी चमत्कृति जणाय छे ते अवलोकवाथी अनुभवाशे. वळी विशेषमां जाणवानुं ए छे के आ महान् पुरुषमां कवित्व शक्ति केवी रीतनी उत्तम अने मनन करवा योग्य हती. तेना एक नमुना रूपे नीचेनो एक छंद छे. के जे वांचवाथी सुगुण वाचकवृंदने आनंदोत्पत्ति थया विना रहेशे नहि, ते आ–

छंद–" जनहरंजन जनहरंजन कवण जगे होय,

" पूजा कारण कवण गुण, "

" कवण देह विद्याविभूषण, जलतारण नर कवण ",

" कवण केकि कुल नट्ट पोपण. "

" त्रिहुं त्रिहुं अक्षर पद ठवीय, पढमक्खर जस नाम."
" तास जिनेसर पय नमति, लप्भय निर्भय ठाम ॥१॥

मज्झक्खर इत्यपि पाठ ॥१०।१७। अंतरक्खर इत्यपि पाठ ॥६।१५।१९।२३॥ इति श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वरकृत २४ जिनानां वस्तु प्रबंध स्तोत्रांतर्गत त्रयोदशतम जिन वस्तु-मध्यात् २४ जिननामार्थ प्रकटनं पं० लक्ष्मीकल्लोल गणी कृतं श्रायसे श्रीवृद्धये स्यात्.

आ काव्य समजवानी रीत आ प्रमाणे छे–

" १. जगतमां मनुष्यने रंजन करनार कया गुण छे ?
२. जगतमां पुजाना कारण कया गुण छे ?
३. जगतमां देह अने विद्याने शोभावनार कया गुण छे ?
४. जलमांथी तारनार कोण पुरुष छे ?
५. मयूरने खरेखर आनंद उत्पन्न करावनार कोण छे ?

आ प्रकारे पांच प्रश्न प्रादुर्भाव करेला छे. तेमां एक एक प्रश्नना उत्तरमां त्रण त्रण अक्षरनो उत्तर आववो जोइए. तेमां पण पेला प्रश्नना उत्तरमां चोवीश तीर्थकर-

ना नामनो पेलो पेलो अक्षर आववो जोइए. तेवा चो-वीश उत्तर पांचे प्रश्नना उत्तरमां आववा जोइए. तेनां उदारणो तो नीचे प्रमाणे आपेलाज छे. ते ध्यान दइ वीचारी लेवा."

१	२	३	४	५	६
द जुत्वं.	अ धित.	शां पाक.	अ याऊः	सु भग	वाक्रो प
द छाद्रि.	जि नरम.	म भान.	भि[1]पक्ता.	म[3]नन	सुधी -
म णन	द पित्र.	प क्षमं.	म प्रना.	ति[4]तिक्षा	शीधा म
दे याचर्य	मा विक	मा विकः	द मीशः	मा विकः	अक म.
घ नद्	घ णिय.	य णियं	न[2]र्भीतन्.	घ णिग.	शपा[5]भः

७	८	९	१०	११	१२
सु बुद्धि	श्री प्रद्रः	सु भ्यरः	सु श्री दः	ये मस्वी.	श्री युतः
पा लन	च[7]गत्व.	वि रतिः	शां त ता.	यां[10]भ्रवः	पा विमता.
स त्योक्ति	द्र विणं.	धि षणा.	क लधाव्.	स मता	सु बुद्धि
ना विक	प्र वीणः	ना विक	स ना थः	ना विकः	पू[11]र्णश
ह[6]विर्द्रः	स[8]व्यांम	थ णिषं.	पा थ[9]स्तत्	य णियं	शि[12]तार्ति

१ भिषक्ता=वैद्यत्वं २ नर्भीतन् विस्तारयतीति नर्भीतन् मेघ ३ मननं=ज्ञानं. ४ तितिक्षा=क्षमा. ५ शंपाभः=विद्युता भातीति शंपाभो मेघ. ६ हवि जलं ददातीति हविर्द्रः मेघ. हविर्द=निर्धंटा पुरुं. ७ चंगत्वं=रम्यता. ८ सव्यक्षुसमर्भमो अकं यस्य समव्यांमः मेघ. ९ पाथं पानीयं तनोति विस्तारयतीति पाथस्तत. १० यां रम्यं प्रकर्षेण ददातीति यांभ्रव. अनुस्वारस्य चित्रत्वाश्व दोषः ११ पूर्णशः=सर्वेशः १२ शीताजगतामर्ति येन स शीतार्तिः मेघ ॥

१३	१४	१५	१६	१७	१८
वि नयः	ञ मरः	दत्त श्री.	श्री दायी.	सु श्री दः	श्री प्रदः
म र्यादा.	नं[13]दिरं.	सुघो षः	शां तता.	माकुं[16]ठयं.	अ[17]शाठ्यं
ल क्षणं.	त थोक्तिः	सुध र्मं	ति लकं.	पृ थु श्रीः	र म्यता.
ना विकः	ना विकः	सुम[14]ना.	ना विक.	स ना पः	ना विकः
प्र प्रिय.	ध प्रियं.	सुरा[15]पः	य प्रियं.	पा प स्ततः	य प्रियं

प्र

१९	२०	२१	२२	२३	२४
दत्त श्रीः	सु प्रियं.	श्री प्रदः	श्री प्रदायी.	पुण्य श्री.	श्री प्रदः
प्रदा म	नि मायी.	न मनं.	मे[18]दुरं.	सुन या.	म नीषा.
सुध श्रि.	सु रूपता.	मि तवाक्	मि तभा.	सत्पा[19]र्श्वः	हा दर्पं
सुम नाः	य शसः	ना विकः	ना विकः	सुम ना	धी मतिः
सुरा धः	स हिष्णान्.	य प्रियं.	य प्रियं.	सुना भ	र सितं.

१३ मंदिरयं=स्मृधियरत्न. १४ सुष्टुरुपायमनो यस्य स सुमना जिनः १५ सुराप=मेघ ॥ १६ मकुंठस्यभावः माकुंठयं सुकुंठिता. १७ अशाठस्य भावः अशाठ्यं. १८ मेदुरं=वाडवाग्रं १९. सता सुषमानां पार्श्वे यस्य स सत्पार्श्वः ॥ इति

करेल प्रश्नोमांथी निकळता जे उत्तरो तेना अर्थो नीचे मुजब छे–

रुजुत्वं=सरलपणुं.
अधीत=भणेलो.
संपाक=मनोहर रसोइ करवापणुं.
अराल=पंडितपणुं.
सुभग=सौभाग्यपणु.
अकोप=शान्तपणुं.
सुबुद्धि=उत्तम बुद्धि.
श्रीमद=दानीपणु.
सुस्वर=सुंदर संगीतपणुं.
सुशील=सदाचारपणुं.
श्रेयस्वी=कल्याणकारीपणुं.
श्रीयुत=धनाढ्यपणुं.
विनय=नम्रपणुं.
अमर=देवपणुं अथवा नहीं मरवापणु.
दत्तश्री=लक्ष्मीने सन्मार्गे आपवापणुं.
श्रीदायी=दानीपणु

सुश्रीदः=सारी रीते लक्ष्मीने आपवापणुं.
श्रीमदः=दातारपणुं.
दत्तश्री=दानीपणुं.
मुनित्व=मुनिपणु.
श्रीमदः=दातारपणु.
श्रीव्ययी=दातारपणुं.
पुण्यश्री=पवित्र लक्ष्मीवान्पणुं.
श्रीमदः=दातारपणु,

ए चोवीश गुणो जनोने रंजन करनारा छे.

पट्टादि=श्रेष्ठपणुं.
जिनत्व=जिनेश्वरपणुं.
भगन=विद्वत्पणु.
भिषक्का=वैद्यपणुं.
मननं=ज्ञानपणुं.

सुधीदः=सारी बुद्धि आपत्रापणुं.
पालनं=पाळरापणुं.
चंगत=रमणिकपणुं.
निरती=निवृत्तिपणुं.
शान्तता=शान्तपणुं
यांमदः=अत्यंत रमणिकताने आ-
पत्रापणुं.
वाग्मिता=वक्तृत्तपणुं.
मर्यादा=मर्यादापणुं.
नंदिस=समृद्धिपणुं.
सुनोध=सदबोध देनापणं.

भणनं=भणवुं
तपितं=तप करवापणुं.
वसनं=वस्त्र.
नम्रता=नम्रपणुं.
तितिक्षा=क्षमा राखरापणुं.
श्रीधाम=धनवंतपणुं.
सत्योक्ति=सत्य बोलवापणुं.
द्रविणं=लक्ष्मीवनपणुं.
धिषणा=तिक्षण बुद्धिपणुं.
कल्पाक्=मनोहरवाचापणुं.
समता=समतापणुं.

मित्रता=मित्राइ राखवापणुं.
सत्पार्श्व=सत्संगतिपणुं
हाटकं=सुवर्ण.
ए चोवीश देह तथा विद्याने
शोभावनार छे.

देवार्च्य=देवनी पूजा.
नाविक=नाव चलावनार.
नाविक=नाव चलावनार.
दमीश=तिर्थंकर.
नाविक=नाव चलावनार.
अकंप=निडर पुरुष.
नाविक=नाव चलावनार.
प्रवीण=डाह्यो माणस.
नाविक=शास्त्र चलावनार.
सनाव=नाववाळो पुरुष.
नाविक शास्त्र चलावनार.
पूर्णज्ञः=सर्वज्ञः
नाविक=शास्त्र चलावनार.
नाविक=शास्त्र चलावनार.
सुमना=दयाळु पुरुष.

नाविक=नाव चलावनार.
सनाव=ज्ञानवाळो पुरुष.
नाविक=शास्त्र चलावनार.
सुगना=रूपावंत पुरुष.
ब्रह्मज्ञः=आत्मने जाणनार.
नाविकः=नाव चलावनार.
नाविक=नाव चलावनार.
सुमना=दयाळु पुरुष.
वितारि=वीतराग.
ए चोवीश पुरुष जळमांथी
तारनार छे.

घनदः=मेघ.
जणियं=मेघ.
थणियं=मेघ.
नदीतत्=नदीओने विस्तारनार(मेघ)
थणियं=मेघ.
शंपाभ=मेघ.
हविर्दे=मेघ.
मत्स्यांभः=उत्तमजळआपनार (मेघ)

जैना अजैना उभये स्वरायं,
संगृह्य मह्यां च विराधका स्युः ॥
आराधिका वा जिन पर्युपास्ते.
स्तदन्तरं शुद्धधिया कृतायाः ॥ ५ ॥
यावन्तः सन्ति विख्याता, अवर्जा नामिनः प्रभो ॥
तावन्तः शत्रवो दूरं, त्वयासुन्तत्प्रसादतः ॥ ६ ॥
आद्यन्ताभ्यामर्हतां सुप्रसिद्धौ,
यौ चक्राते वार्षिकं सामि वर्षम् ॥
विश्वाधीशौ वंदनीयौ जनानां,
नित्यं वंदे तावहं भक्ति युक्तः ॥ ७ ॥
भूयांसीहाऽनेहसा व्यंजनानि,
भुक्त्वा भुक्त्वा द्व्यसा नैव तृप्तिम् ॥
याता जीवास्तत्प्रमो तावकीनां,

जायते यदि सामर्थ्यं,
त्वत्स्वरुपं लभेत्तदा. ॥ ९ ॥
आमा शृण्वन्तु मोदाद्या, अरेदोन्नामिनो गुणः ॥
यथाऽयुर्वेदिनो जन्तो स्तथा वीरो मयेक्षितः ॥ १० ॥
एवं कल्याण निर्वाण कल्याणिक तपोहनि.
संस्तुतः पार्श्वचंद्रेण, श्री वीरो दिशतु श्रियम् ॥११॥ इति.
आ स्तुतिनी टीका स्तोत्रसंग्रह प्रथम भाग जे काशीमां यशोविजय पाठशाला तरफथी बहार पडेल छे तेमां छे त्यांथी प्रियवाचक वृंदोए जोइ लेवी.

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र प्रारंभ ॥

प्रणम्य परमात्मानं, श्री पार्श्व तव दर्शनात ॥
पवित्रयामि सद्योहं, ग्लानवासो जलादिव ॥ १ ॥
चरीकति नमस्कारं, बालधीवृद्धिसिद्ध ये ॥
श्रीमत्पार्श्व जीनेंद्राय, तेषां जन्म फले ग्रही. ॥ २ ॥
उत्थित स्तव घाताय, श्रीवामानंदनो जिनः ॥
सारस्वती मृंजुं कुर्व, गतिं त्रस्त सतां न सा ॥ ३ ॥

थणियं=मेघ.	थणियं=मेघ.
पाथस्तन्=जलनेविस्तारनार(मेघ)	सुपाथ=सारुंपाणीछेजेनुंएवो(मेघ)
थणियं=मेघ.	तडित्वान्=विजली करनार (मेघ)
जितार्तिः=घामने जीतनार (मेघ)	थणियं=मेघ.
थणियं=मेघ	थणियं=मेघ.
थणियं=मेघ	सुपाथ=सारा पाणीवालो (मेघ)
सुपाथ=सारुं जल आपनार(मेघ)	रसितं=गर्जारव करनार (मेघ)
थणियं=मेघ.	ए चोवीश मोरना कुलने
पाथस्तन्=पाणीने वधारनार(मेघ)	नचावनार छे.

आ वाक्योनो अर्थ सामान्य जाणवा सारुं करेल छे विशेष एमनो अर्थ गीतार्थ गुरुमहाराजश्री पासे समजी हृदयमां धारण करवो.



वली संस्कृत काव्य करवानी खुबी आचार्यश्रीनी केवी हती. तेने माटे नीचेना स्तुति स्तोत्र अवलोकवाथी स्पष्ट मालुम पडशे–

॥ श्री महावीर स्तुतिः ॥

कल्याणमाला मणि सन्निधानं,
श्रीगौतमाद्यै मुनिभिः प्रधानम् ॥
यशो गुणैः संप्रति वर्द्धमानं,
स्तवीमि भक्त्या जिन वर्द्धमानम् ॥ १ ॥
अ इ उ ऋ ऌ समानाः सन्ति लोका इदानीं,
मघनसरलभूता वक्रभावप्रभूताः ॥
कथमिह हि लभन्ते प्राभवं शुद्धमार्गं,
प्रचुरतरविशस्ते तेन तुच्छा नु चित्रम् ॥२॥
ऽभ्मवर्णादयाऽनेके, वार्धिपक्षमिताहताम् ॥
ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदाः ॥ सवर्णा इति मे मतिः ॥३॥
ासासन्धि वुधा ए ऐ, ओ औ संध्यक्षराणि च.
व्याकुर्वन्ति यथा भावं तथाऽहं वीरदर्शनात् ॥ ४ ॥

हे आश्वसेने सिद्धान्ताराधनं तारकं विना ॥
विद्वानोपि ना सिध्येत्, प्रक्रियां नाति विस्तराम् ॥४॥
इन्द्रादयोपि यस्यान्तं, फणिनां त्वमनुग्रहात् ॥
कृतवानुत्तमं तस्य, युक्तं क्रमचणो भव ॥ ५ ॥
पारदृश्वा शुभोदर्को, न ययुः शब्द वारिधेः ॥
ऋद्धिवृद्धिनिधि· सिद्धिं, भजते पार्श्व सेवकः ॥ ६ ॥
पादप्रसाद पार्श्वस्य, श्रीमतो हि ममैनस· ॥
प्रक्रियां तस्य कृत्स्नस्य, यस्मात् क्लेशो भवे भवे ॥७॥
सुधांवसां गुरु· पारं, येषां नाप समायुषा·
तान् गुणान् पार्श्वदेवस्य, क्षमो वक्तुं नरः कथम् ॥८॥
इति श्रीमान् जिन· पार्श्वो, जीरावल्ली पुरी प्रभुः ॥
फणित· पार्श्वचंद्रेण, भूयाद् भूरिविभूतये ॥ ९ ॥ इति·

आ स्तोत्रनी अवचूरि सूरदीपिकादि प्रकरण संग्रह नामाग्रंथ के जे श्री पार्श्वचंद्रसूरि पादपद्मोपशेवी श्री हठीसिंग सरस्वती सभा तरफथी बहार पडेल छे. तेनी अंदर प्रगट थयेल छे त्यांथी जोइ लेवी.

॥ श्री संखेश्वर स्तुतिः ॥

श्री संखेश्वर पुरवर, समलं करणँ सरणं ह्यघहरणं ॥
सुरसंसेवित चरणं, श्री पार्श्व स्तौमि जय धरणं. १
रण निर्ज्जित मार बलं सबलं, बल वज्र समान शरीर विभं ॥
विभयं भगवंत मिभेंद्र गतं गत दुर्गति दुर्मति दूरतरं. २
तरणाय भवांबुनिधौ तरणिं, तरणींदु समद्युति सौम्यकलं ॥
कल कल्पित कल्पतरुं गुणिनं, गुणनंदि करं करणै रजितं. ३
जित पंचमकाल विलास फलं, फलवत्तर पादपयोजनुतिं ॥
नुति संस्तुति तत्पर नाकपतिं,पतिताखिल भव्य समुन्नतिदं.४
नतिदं कमठस्य शठस्य कलं, कलभावमुपेयुप इति हरं ॥
हर धातु हरि भ्रम भेद बुधं, बुध लक्षण लक्षित लक्ष्यपरं. ५
परमात्म जल प्रति बिंब तुला, तुलितं यति योगि गुणै रमलं॥
मलशालिनिभालनतोविमुखं,मुखदिप्तितिरस्कृतपूर्णविधुं.६
विधुरेपि जन स्मृति सौख्य करं, करणत्रय शुद्ध विशुद्ध हृदं॥
हृदयंगमसंगमरंगधरं, धरणेंद्र सदाश्रित लोक भरं. ७
भरतांतरवर्त्ति निकाशि पुरे, पुरतःकृतकृत्य जनेषु चरं ॥

चरणौ द्युमनं दमिनां भवरं, वरविश्वरि कर्म्मि जिनाधिपतिं.'
श्रीशंखेश्वर मंडन, खंडन घनविघ्न विघ्न राशीनां ॥
श्रीपार्श्वचंद्र प्रणत, सदा जय करो भूयाः प्रभो. '. इति.

वली प्राकृत भाषामां पण सरलपणुं आचार्यश्रीये केवुं वापरेल छे. ते आ नीचेथीज जणाशे.

सुर दीपिका.

सुणंतु भोभो असुराइया सुरा,
जे वंतरा जोइसियाय देवा.
वेमाणीय कप्पग कप्पनीया,
जे मंति सम्मत्त विशुद्ध चित्ता. १
नामारिहंते ठवणारिहंते,
दव्वारिहंते जिण सासणम्मि ॥
हीलंति मन्नंति न पूयणिज्जे,
न मन्निया भाव जिणावि तेहिं. २
देषाय चालाय असंजयाय,
मुत्ता अधम्मी तह मंदबुद्धि.

असंवुडा नो विरइय तेसिं,
किंचित्ति भासंति सभा समख्ख
वयंति नो किचि विशेष नायं,
सामन्न भावेणय पन्नवंति.
मिच्छत्त समत्त गुणेग बुद्धिं,
कुणंति नेयाउय गेव नेयं. ४
गुरुण पासंमि सुयं सुणेमो,
वयं नु एयं न पडिरसुणेमो.
सुत्तंपि मन्नंति न तेण तुम्हे,
पुरो जिणुत्तं वयणं भणेमो. ५
देवा जिणंदे पडिवोहयंति,
लोगंति याणाइ अणंति काले.
तिथ्थं पवत्तेह हियं जणाणं,
भणित्तु सामी भयवंति सव. ६
अंगंमि एयं पढमंमि वुत्तं,
पुणो दसाणं ज्झयणे छमंमि.

अंगंमि छउंमिय तेण देवा,
मन्नामि वुद्धाणथ वोहगाणं. ७
शुक्रो वयेसेण जिणा सुराणं,
वुझ्झंति सुज्जंति न ते सुहेहि.
जेठेण तम्हा गुरु कारणेणं,
वाला भणिझ्झंति कहं नु देवा. ८

॥ श्री नेमीश्वर स्तुतिः ॥

जीणंद नेमि इह विन्नवेमि,
माणुस्सयं सप्पणयं करेमि.
जणा जिणाणा सहियं महंति,
किं नु विहिसा अजया गिहंति. १
रुद्धेय वाडेहिय पंज्जरेहि,
दट्ठूण दीणकरुणस्सरेहि.
एतेसु जे ते नपुणो हवंति,
वेराणु वद्धा नरयं उवंती. २
तम्मोयणेणं इति सिख वित्ता,

परे विनेमि करपवइत्ता.
दिक्खं विणा आह पुरा भवेसु,
कड़ाण कम्माण न मोक्ख अत्थि.
रे जीव नेमितर पाय सारं,
सेवेसु पावेसु भवोह पारं.
कम्मारिणो तुज्झपरा हणंति,
न बंधवा बंधवयं उवंति. ४
राई मई रायमई सुचत्ता,
सिद्धि पुरंद्धि जिण तेण पत्ता.
सुत्तं परे ते भयणेण देव,
नेयाउयं दिट्ठम दिट्ठ मेव. ५
भमिसु भग्गो तुह पाय लग्गो,
सिद्धं न मोक्खं किमहं अजुग्गो.
भणिज्जसे नाह कहं खु तत्तो,
भारंड पक्खीव चर प्पमत्तो. ६
धम्मंतरो रोगहरो जिणंदो,
लद्धो मए ताकहमत्थि मंदो.

को तस्स दोसो नयकम्म दंसी,
पच्छा परिन्नाय मलावधंसी. ७
जिणुत्त तत्तं न समायरेसि,
सद्दं कहं सिद्धि सुहे करेसि.
जउ सदुःखं कुणइ तितिक्खं,
तम्हा मुणी खिप्प मुवेई मुक्खं. ८
कोहं च माणं तह लोह मायं,
एगं खणं कुज्जसि नोपमायं,
चित्ते जिणाणं न धरेसि सत्ती,
काव्रो वणीए सरीस्स भेए. ९
अहं शिवानंदण राय पाय,
प्पसाय पेही अलि नील काय.
सुरक्कणिज्जो सरणंमि पत्तो,
अप्पाण रक्कीव चर प्पमत्तो. १०
दिक्कं गहेउण गउ सुसाणे,
गओ गओ सिद्ध महोवसाणे.
पाणंतगेवि पंहु भत्ति मिस्से,

न तेसु भिक्खू मणसा पउस्से. ११
कहं तहा नाह पहु पयाणे,
सिद्धीइ मझं परमिथ्थ जाणे.
जिणप्प दोसं सुयदिन्नसोहं,
मायं न सेवे पय हिज्जलोहं. १२
काउं तवुत्तं सयलं समथ्थो,
नाहं पहु मोह गहेहिंयथ्थो.
करेमि इक्कं तुह होउ सेउ,
कंखे गुणे जाव शरीरभेउ. १३
आबाल वंभं विमलं चरित्ता,
अच्छेरयं सव्वजणे करित्ता.
नेमी निरीहो दसचाव देहो,
पत्तोय सिद्धिं सुगुणाण गेहो. १४
कलश–सिरि नेमि जिणेसर पणय
सुरेसर वंदों भावें भो भविय.
समसिय पयछंदें मन आणंदे
इम संथ्थविय श्रीपार्श्वचंदें. इति. १

वली प्रतिमा उत्थापक जीवोना उपर करुणा लावी तेमने बोध करवा माटे घणा ग्रंथ प्रकरण, स्तवनो, सरल गुजराति भाषामां बनावेलां छे. तेमांना बे स्तवन अत्रे हुं लखवा धारुं छुं. ते अस्थाने नहिज गणाय.

१ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन.

सोल वचन अंगे भण्याजी, दसमें तसु अनुसार. सुण. ६
लिपि बंभी गणधर नमीजी, पंचमे अंगे एह.
अक्षरनीए स्थापनाजी, जिनप्रतिमा गुणगेह. सुण. ७
वलि अजीव स्थिति सांभळोजी, कागल आगम नाण;
जागे इम किम जोवतांजी, द्रव्य सूत्र ए टाण. सुण. ८
दोइ दीसी पूरव उत्तराजी, वली जिन वचन विमास;
टळे पातक जीवनांजी, किम सुणतां हुल्लास. सुण. ९
पर्व दिवस आराधवुंजी, ए पण छेय अजीव;
ए काले आराधवुंजी, कहीं केम छुटे जीव. सुण. १०
इम जाणी आराधवीजी, वीरजिन प्रतिमा ठाम;
त्रिय उवंगे सारखीजी, ठवणा त्रिभुवन स्वाम. सुण. ११
जे फल जिनवर वंदतांजी, ते फल ठवणा जाण;
पंचमअंगे आसातनाजी, जिन जिन प्रतिमा समान. सुण. १२
लंछण सिंह विसेषीयेजी, सोवन्न वर्ण शरीर;
गंभीरमां सायर समाजी, मंदर गीरीवर धीर. सुण. १३
संयम अवसर आदरीजी, जीत्यो मनमथ वीर;
अहर्निश स्वामी वंदीयेजी, जगनायक श्रीवीर. सुण. १४

(कलश.)

इम वीर जिनवर सयल सुखकर, तीर्थनायक सुरतरु;
जन आश पूरण दुरित चूरण, रूप त्रिभुवन मनहरु.
नागोर महिमा जासु पूरण, तेह स्वामी संस्तव्यो;
मनरंग छंदे (सूरी) श्री पार्श्वचंद्रे मुक्ति कारण वीनव्यो.इति.

२ ॥ श्री धर्म शांति पार्श्व जिन स्तवन.॥

मेडते नयरे मुझ चित्त आणंदिय,
धर्मजिण शांतिजिण पासजिण वंदीये;
त्रिहुय प्रसादहि तिन्नि तिथ्थंकरा,
नामने ठवण अरिहंत जण सुहंकरा. १
ठवण विणुं नाम हुवे ठवण तिणि विणु नही,
दुन्निनिक्षेप इणे नयरे लहीये सही;
द्रव्य अरिहंतनो मरम केवली लहे,
भाव अरिहंतनो विरह सहुये कहे. २
भावसुं भाव अरिहंत आराधिये,
सूत्रनी साखनो मुक्ति सुख साधिये;
त्रिणि निक्षेप नामादि त्रिण जोडीये.

तो कहो कांइ भव बंधन त्रोडिये. ३
नाशिका अग्रथिर द्रष्टिमांडी रह्या,
मौनकरी ध्यानवसे पद्म आसन ग्रह्या;
निरखतां एह कुण भाव आवे हिये,
चित्त चोरीतिजी किसो उत्तर दीये. ४
आण जिणभावए ठवण ठामे ठव्या,
असुर सुर नरवरे भक्ति भाव स्तव्या;
भाववसे तेहने तेहीज फल जाणज्यो,
एह परमथ्थ समथ्थ मन आणज्यो. ५
काष्टनी गायकरी कोइ शस्त्रे हणे,
तेहने गायनो घात जिनवर भणे;
अरथनी फलसिद्धि गणे जे स्वारथी,
निरमली निर्जरा थाय मन भावथी. ६
हय गय नारि मृग पमुह सहुये कहे,
एक अरिहंत इम भापतां लहवहे;
जाणीये दरसणा वरण वलतेहने,
निरखी प्रभु हरख न थाये मन जेहने. ७

भाव जिन शकस्तव सूत्रे दीसे नहि,
तेह कारण कहो कोइ गुरु मुखे लही;
त्रणजिग संख नहु लाभिये जेहनी,
जेहथी पापमति जाय सवि देहनी. ८

द्रष्टिथी पुंडीनो राग अधिको गणी,
भगतिने भाव इम थुण्यो त्रिभुवन धणी;
पनरमो सोलमो देव त्रेवीशमो,
मूरति जोवतां चित थिर वीसमो. ९

वज्र मृग भुजंग जसु लंछग सोहये,
निरुपम रूप जग त्रिभुवन मोहये;
स्वामिय मागिये एह सुपसाउलो,
भवि भवि थाइज्यो तुम्हे मुझ राउलो. १०

कलश–एणीपरे श्रीमेदिनी पुरि त्रिणे तीरथ वंदीये,
त्रिहु भवने महिमा जासु दिपे देखी मन आणंदीये;
श्रीमानु विश्वसेनराय अश्वसेन कुले दीपक अवतर्या,
तेमनआणंदे सूरि श्रीपार्श्वचंद्र भावजिन जिम संस्तव्या.११

तेज विषयनी एक सज्झाय पण वाचकवृंदने

वांचवी जोइये. कारणके तेथी वाचकवृंदने खातरी थसे के ते सदीना भव्योने सन्मार्ग दोरवा माटे अने तरतमांज उत्पन्न थयेला लुंपकने जडामूळथी दूर करवा माटे आचार्यश्रीये केवो उत्तम प्रयत्न करेल छे.—

॥ श्री जिन प्रतिमा सज्झाय. ॥

(महाविदेह क्षेत्रमां श्री मंदरस्वामी, सोनाना सिंगासणजी; ए रागमां)

सांभलो भविक जन चित्त चेतन धरी,
जिनवर आगम वाणीजी;
भवसायर तरवा तरणी जिम,
लहिज्यो उत्तम प्राणीजी. ए ठेक.

जिनवर जिन प्रतिमा वंदन फल,
समवड हियडे आणोजी;
रायपसेणी सूत्रे वखाण्यो,
चतुर विचारी जाणोजी. सांभलो. १

छेद ग्रंथे जिनवर विधि वादे,
प्रतिमा भक्ति प्रकासीजी;
व्रतधारक श्रावकनी करणी,
जोजो हृदय विमासीजी. सांभलो, २

सप्तम अंग लीयो विचारी,
आणंदने अधिकारेजी;
जिन प्रतिमा नमे कदाग्रहवारी,
धनधन ते नरनारीजी. सांभलो. ३
पडया पछी सहु कोइ प्रतीजे,
पहिलुं आप संबाहोजी;
प्रतिमा वंदो उववाइ उवंगे,
अंबड जेम ल्यो लाहोजी. सांभलो. ४
अवधि असाधु तणी बहु देखी,
डाह्या तमे कांइ डोलोजी;
किणहि कुसंगे कनक मल लाग्यो,
पीतल तोले म तोलोजी. सांभलो. ५
सोना जेम नीरमल कस लीजे,
दोप प्रवाहे न दीजेजी;
वीतराग प्रतिमा वंदीजे,
राउ राखी खेलीजेजी. सांभलो. ६
मिथ्यामतशुं मकरो सगाइ,
प्रभुसुं केसी सबलाइ जी;

जिनप्रतिमा निंदो नहि भाइ,
स्वामी द्रोह इम थाय जी. सांभलो. ७
आमातना अजीव पदारथ,
जिनवर नाम प्रसंगेजी;
गौतम आगल वीर जिनेश्वर,
बोल्या पंचम अंगेजी. सांभलो. ८
इम जाणी जिन प्रतिमा वंदो,
सूत्र तहत्ती करी जाणोजी;
श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वर जंपे,
मुक्ति रमणी वस आणोजी. सांभलो. ९ इति.

आ आपणा पूज्यजीना गुरुवर्यने पूर्वाचार्योए तेमज वाचकमुनिवरोये केटलाक ग्रंथोमां सूरि लखे छे अने केटलाक प्रकरणोमां पंडितशिरोमणि पंन्यासगणी विगेरे पदवीओनो उल्लेख करेलछे. ते वय अवस्थाना भेदेकरी भेद मालूम पडेछे. किन्तु परमार्थमां भेद छेज नहि.

वली पूज्यपाद मुनिमहाराज श्री कुशलचंद्रगणी साहेबना शिष्य साक्षर मुनिमहाराज श्री गुणचंद्रजीये आचार्यश्रीना आ चरित्रनेमाटे भव्यजनोने उपदेश आपी

भव्यजनोना सद् द्रव्यने सद्ज्ञानमार्गे उपयोग करवानुं अने तेथी अपूर्व अप्रगट महात्माओना प्राचीन इतिहासने भव्यजन समुदायना हस्तकमलमां समारोपण करवानी जे भावना अंतःकरणमां अंकुरित करेल छे. ते माटे तेमनो उपकार मानी आर्थिक सहायने आपनार भव्यजनोना नाम नीचे प्रमाणे प्रगट करुं छुं –

२०० कच्छ गढशीशानिवासी शेठ देवराज टोकरशीना भाइ पांचुभाइए पोताना वडील बंधुए ज्ञानखातामां काढेल तेमांथी ज्ञानउद्धार माटे आप्या.

२५ शा कानजी रतनशी गाम देवपुरवाळानां मातुश्री बाइ चोथीबाइ तरफथी भेट.

२५ शा. भाणजी भीमजी हा. बाइ नाथीबाइ.

२५ बाइ कुंअरबाइ गाम देसलपुर.

५० शा. हीरजी पुनशी. गाम नवावासवाळानां धर्मपत्नि बाइ गंगाए आप्या.

७५ शा. जेतसीभाइ गोसरनां धर्मपत्नि हांसबाइए पोतानां पतिना पुन्यार्थे ज्ञान खाते आप्या.

१० एक देवपुरवासी गृहस्थ तरफथी भेट.

कुल रु. ४१०

उपरना सद्गृहस्थोए ज्ञाननी वृद्धिने माटे जे उदारता बतावी छे ते मानपूर्वक स्वीकारी तेमनो आभार मानवामां आवे छे. अने तेवीज रीते बीजा गृहस्थो पण तेमनुं अनुकरण करशे. एम हुं आशा राखी वीरमुं छुं.

वली आ प्रस्तावना लखवा तथा सुधारवामां तेमज आ ग्रन्थमां पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय विजयवंत जंगम युगप्रधान श्रीजैनशासन पुंडरिक कमल विकाश मार्तंड तत्वज्ञानी महाराज करुणानिधि आचार्यश्री १००८ श्री भ्रातृचन्द्र सूरीश्वरजी पादपद्मोपसेवी साक्षर मुनि महाराजश्री सागरचंद्रजीये जे श्रम लीधो छे तेथी तेमनो सविनयपूर्वक उपकार मानुं छुं.

ली. शा. मंगळदास लल्लुभाई.

अमदावाद.



श्री सदगुरुवर्य

श्री पार्श्वचंद्रसूरीश्वरजीनुं.

संक्षिप्त जीवन-चरित्र.

वस्तुनिर्देशात्मक—मंगलाचरण.

(शार्दूलविक्रीडित-छंदः)

तीर्थंवरजिनेश्वरस्यविदिते श्री कोटिकाख्येगणे।
श्रीमच्चन्द्रकुलेवटोरुह वृहद्गच्छे परिम्लायिते ॥
श्रीमन्नागपुरीय कायद्ध तपा प्रासावदातेधुना।
स्फूर्जद्भूरिगुणान्विता गणधरश्रेणी सदा राजते ॥ १ ॥

अर्थ—चरम तीर्थंकर श्री वीरजिनेश्वर देवाधिदेवना तीर्थशासनने विषे विश्वविख्यात श्री कोटिकनामना गच्छमां श्रीमान् चंद्र

कुळनी अंदर वडगच्छ परिम्लान थवाने लीधे सांप्रत काळमां (हालमां) श्रीमान् नागपुरीयतपा विरुद् नामथी जेनी कीर्ति निर्मळ छे एवा तप गच्छमां सुविहित गीतार्थ गुणोए करीने देदीप्यमान भवभीरु उत्सूत्र पापपंक दूरवर्ती, स्याद्वादशैली अनेकांत जयपताका धरनार गुणगणान्वित गणधर सितपटाचार्यनी जे श्रेणी ते सदाकाळ अपरंपार गुणोए करीने शोभती विराजमान छे.

(ए गुच्छनो विशेष अभ्युदय करनार कया आचार्य प्रगटया ?)

यो लेभे गुरुसाधुरत्नकृपया पारंश्रुताम्भोनिधे ।
यो जैनागम संगतां सुललितां चक्रे हितां देशनाम्॥
यःस्वान्योपकृते निमित्तमकरोद्ज्ञानक्रियास्वादरं ।
तं सूरीश्वरमुत्तमं युगवरं श्रीपार्श्वचन्द्रं स्तुमः ॥२॥

अर्थ—सुविहित सितपटानुयोगाचार्य गुरु साधुरत्न मुनिराज श्रीनी कृपावडे जे सिद्धांत रूपी समुद्रनो पार पाम्या, तथा जे उत्सर्ग १, अपवाद २, व्यवहार ३, निश्चय ४, विधिवाद ५, चरितानुवाद ६, यथास्थितवाद ७, हेय ८, ज्ञेय ९, अने आदेय १० विगेरे अनेक नयनिक्षेप सप्तभंगी स्याद्वादशैलीमय जैनागमोने अनुसरती अतिशये करीने लालित्यवंत हित भरेली देशना प्ररुपवा लाग्या, अने जे पोताना अने पर (बीजा) ना उपकार माटे ज्ञान तथा

क्रियाने विषे आदर करवा लाग्या, ते श्री पार्श्वचंद्रसूरींद्र युगमधान भट्टारकोत्तम मत्ये अमो स्तविये छीए. कारण के जे गुरुना परिचयथी लोह रूप प्राणियो पण पार्श्व (पारस) मणिरुप गुरूनी उपासना वडे स्वप्रकाशमय स्वस्वरूपनो लाभ पामे छे, अने जे गुरुना मुखचंद्रना दर्शनथी सांसारिक त्रय तापथी संतप्त थयेला जगत् जीवोने शीतळता-शांति प्राप्त थाय छे, ए माटेज ए पार्श्व अने चंद्रनी पूरेपूरी गरजने सारनार श्रीपार्श्वचंद्रसूरींद्रजीने अमे स्तविये छिये.

(दोहरा-छंद.)

सुरमणिसम श्री सद्गुरु, छो शाश्वत सुखसद्म;
प्रतिपळ प्रणमुं प्रेमथी, परम पूज्य पदपद्म. १
प्राग्वट जाति प्रभाकरु, विमळा मात मल्हार;
परचा पूरण गच्छपति, जिनशासनशृंगार. २
परम पुनीत [1]हमीरपुर, विश्वविदित वर वंश;

---

१ ॥ विंछियानी देशी. ॥

हांरे लाला पासचंद्रसूरीसरु, वडतपगछनभदिणकाररे लाला ॥ आबूतीरथ पासमें, पुरहमीर जनम सुखकाररे लाला ॥पा० ॥ १ ॥ वेलगवंशे दीपता, शाह वेलग पितागुणवंतरे लाला ॥ विमलादेमाता सही, सुत तेहना तेज अनंतरे लाला ॥पा० ॥ २ ॥ पंदरहसें साडत्रीसमें, शुभ चैत नवमी भृगुवाररे लाला ॥ उत्तम लगनमें जनमिया जग जागती ज्योति अपाररे लाला ॥ पा० ॥ ३ ॥ जिनवाणी सम

भक्टया वेळग पिछु ग्रहें, मुनिमनमानसहंस. ३

साधुरत्नसूरीशना, दीक्षित दक्ष प्रत्यक्ष;
वहु भविजनने वूझव्या, लाभकारि दइ लक्ष. ४

समकितवासित संघनुं, कर्युं अतिशय कल्याण;
शासनोन्नति शुभ परें, कीधी कृपानिधान. ५

धर्मबीज धरती विषें, वाव्यां नाय ! विशेष;
फळ मेळवि ये फूटरां, इजुए अमो हमेश. ६

भावसें, श्रीसाधुरत्नगुरु पासरेलाला ॥ तजि संसार असारने, लियो संयम मन उल्लासरे लाला ॥ पा० ॥ ४ ॥ आगम वचन प्रमाणसें गुरु आणाधर शिर आपरे लाला ॥ भूतल भवि प्रतिबोधता, करता सूरीमंत्रनो जापरे लाला ॥ पा० ॥ ५ ॥ वश किये बावनवीरकुं चौसठजोगणि साधिरे लाला ॥ जोधपुरें वरसावियो, मेघ-सुरपतीनें आराधिरे लाला ॥ पा० ॥ ६ ॥ द्राविडदेशें विचरता, वश किया चौवीश पीररे लाला ॥ त्रिकूट नदी वहती तिहां, यत्न कीनो रोकी नीररे लाला ॥ पा० ॥ ७ ॥ धांगधरे बामण घरे, दोय कन्याकुं प्रति-वोधिरे लाला ॥ नीबडी गामे नदीतटें, एकजोगीनें देइ सिद्धिरे लाला ॥ पा० ॥ ८ ॥ इम घणा परचा पूरिया, परतख होइ इण कलिकालरे लाला ॥ आनन्दघन तुम दासहैं, मोने दीजो सुख सुविशालरे लाला ॥ पा० ॥ ८ ॥

ए उपकारज आपनो, भगवन् ! केम भूलाय ?
अनुभव अंकुर ऊगियो, विभु ! ते केम विहलाय ? ७
आभारी कीधा अती, इत्यादि करि काम;
स्मरण थवा ए सर्वनुं, लखुं चरित्र ललाम. ८
गुण गरिमा गावा विषे, उर इच्छा छे इष्ट;
कृपा करी द्यो पूज्यजी ! वाणि विशिष्ट अभिष्ट. ९
भविजनमनभावनि कथा, कलिमळहारि कवीश !
मुद मंगलमय आपनी, कृति संक्षिप्त कहीश. १०
भयहर भैरव हर्षभर, हाजर रहे हमेश;
सफळ संघना सर्वदा, कापे सर्वे क्लेश. ११
ए पण महिमा आपनो, सत्यपणें सुप्रसिद्ध;
नाम जप्ये नित प्रति रहे, ऋद्धिसिद्धि सान्निध्य. १२
जयति जयति जगतंत्र प्रभु, धर्मधुरंधर धीर,
जंगमतीर्थ जयंकरु, जय जगवत्सल वीर ! १३



वीरप्रसविनी मरुधर भूमिनी सुंदर शीतळ सुखद सुविदित अर्बुदाचलनी तलेटीना प्रदेशनी अंदर शूरवीर महाराजा हमीरसिंहे पोताना नामथी वसावेल हमीरपुर नामनुं शहेर के जे पोतानी भव्य रोनकतावडे स्वर्गने पण शरमावी रहेलुं हतुं; केमके जे जे वस्तुओ हमीरपुरमां दृष्टिगोचर थती हती ते ते वस्तुओ स्वर्गमां पण न होवाथी स्वर्ग हमीरपुरनी स्पर्धामां शरमने शरण थयुं हतुं. मतलब एज के हमीरपुरनी अंदर आलिशान मकानो, विविध मालथी परिपूर्ण देदिप्यमान दुकानो, व्यापारी अने खरीददारोनी चालती धमाल, घोडागाडी, व्हेलगाडी, घोडा, ऊंट, हाथी, पालखी, म्याना वगेरे वाहनोनो चालतो जणातो छडादार व्यवहार, भातभातनां भोजनो तैयार थवानी चाली रहेली तारीफलायक तदबीर, पानसोपारी एलची आदिना मुखवास, मादक पदार्थ सेवनाराओनो उभराइ रहेलो उत्साह, दुर्व्यसनोने तावे थयेला दुर्गतिग्राहकोनी दुर्मदता, अने एवांज अन्य सांसारिक सुखोने साथ आपनारां साधनोनी सगवडता वगेरे वगेरेनी छत हमीरपुरमां हती; परंतु स्वर्गमां ए बधानी अछत हती, एथी के हमीरपुरमां हतुं ते स्वर्गमां पण न हतुं. विशेषमां हमीरपुरनी अंदर तप, जप, योगक्रिया, संयमसाधना, अने व्रत पचक्खाण आदि करणीनो अनुभवयुक्त प्राप्त थतो अमूल्य लाभ, तेमज गुणी-ज्ञानी-गुरुओनी सद्ज्ञानगर्भित जिनेश्वरप्रणीत दान, शील, तप, भावनादिथी भरपूर मधुर वाणीनो निरंतर मळतो योग

इत्यादि पण स्वर्गमां न हतां; परंतु हमीरपुरमां ए सघला विद्यमान हतां जेथी स्वर्ग हमीरपुरनी हरीफाइमां पछात पडी जतां चर्मचक्षुओथी अदृश्य थइ रहेल जणाय छे !

हमीरपुरमां अढारे वर्णो पोतपोताना धर्मनियमने अमलमां आणतां आनंदमां निवास करतां हतां. श्रावकोनो पण पुष्कळ जत्थो हतो. जिनमंदिरो पण भव्यतायुक्त विशेष हतां अने अन्य धर्मस्थळो तथा अन्यधर्मनां देवळो, बागबगीचा अने आनंददायी आश्रमो नाम प्रमाणे कामना उपयोगमां आवतां जणातां हतां.

हमीरपुरमां आ वार्त्ताना समये राज्यकर्त्ता तरफथी कर दंड न हता, पण जैनसाधुओ अने संन्यासियोना हाथमां दंड (करदंड) हता. बधबंधन फकत पुष्प गुंथन अने स्त्रीओनी वेणीबंधनमांज जणातुं हतुं. कठोरता शैलोमां, गळाफांसो पाणीआरीना जळपात्रमां, मार शब्द सोगठाबाजीमां, वक्रता कामिनियोनी भ्रमरोमां, निष्ठुरता दुष्कर्म छेदन करवामां अने ममत्वता सत्कर्म साधनमां मालूम पडती हती.

हमीरपुरनी आसपास कुवा वावडी कुंड वगेरे पुष्कळ मनहर जळभरित जळाशयो जणातां हतां अने स्थळोस्थळ पाणीनी परबो, दानशाळाओ, पाठशाळाओ, उद्योगशाळाओ, हुनरशाळाओ, तथा वांचनगृहो आदि दृष्टिगोचर थतां जिज्ञासु जनने अति आनंद प्राप्त

चतो हतो. एथी एकंदर जोतां हमीरपुर शहेर लक्ष्मीनी लीलाल्हे-रथी भरपूर होवाने लीधे सर्वांग सुंदर स्थळ भासतुं हतुं.

वाचकवर्ग ! जगतनी वस्तुओ मात्रनो परिवर्त्तनशील स्वभाव होवाथी कंइक समय जतां तेमां स्थित्यंतर थया विना रहेतोज नथी, ज्यारे जगतभरना पदार्थो माटे आ कायदो वायदा वगर लागु थनारो छे त्यारे पछी हमीरपुरने आ कायदो केम लागु न थाय ? अलबत थायज ! एथीज कहेवानी फरज पडे छे के–

जे हमीरपुर शहेर सर्वांग सुंदरता अने लीलाल्हेरथी ल्हेलूर हतुं ने आजे काळनी विषम फाळथी वेहालना गालमां समाइ रह्युं छे. न्हाना गामडा जेवुं पतीत दशावाळु, बे त्रण पुरातन अने ते पण सुंदर कोरणीवाळां छता प्रेक्षकोने आनंद तथा खेद करी रहे-नारां जिनालयो, अने निर्माल्य वस्ती वगेरे युक्त थइ रहेलुं छे. जे शहेरनी रौनकता निहाळवा देशीविदेशी आतुर बनतां हतां तेज स्थळनी स्हामे जोवा आजे कोइ चाहतुं नथी. जे हमीरपुर पुर मनातुं हतुं ने आजे परुं थइ रहेल छे. जो के ते गमे तेवी पडतीनी स्थितिये पहोंचेल छे, तथापि त्यां थइ गयेला प्रभावशालि पुरुषो-ने लीधे ते स्थळने आजे पण केटलाक भाविकजनो भाव सहित निहाळशे, अरे ! तेनी रेणुकाने माथे चडाववा जाय छे; केमके मह-दात्माओना चरणतळना स्पर्शवडे परमपवित्र थयेली रजना रजकणो

अद्यापि पडी रहेला छे, तेनो स्पर्श थतांज हजु लगण पण दानव जेवा मानवना अंतरमां जरा वार पण सद्भावनाना अंकुर स्फुरायमान थया विना रहेताज नथी !

पाणीपतना मेदानमां, चित्तोडना किल्लामां के हलदीघाटमां शांतरस चाहनारो पण वीररसनी ल्हेर युक्त थइ रहे छे; केमके ज्यां बेसुमार वीरमणियोना धगधगता रेडायला लोहीनां, मार ! पकड ! छेदीनाख ! आविज पुकार उठावनार रजकणोज भरपूर छे, त्यां रौद्रता वगर शांततानां अणुंओ क्यांथीज होइ शके. वस्तु-प्राप्तिनो स्वभावज छे के माळा हाथमां आववाथी भजन स्मरण अने तरवार हाथमां आववाथी छेदन भेदन वगेरेनुं स्मरण थया विना रहेतुज नथी ?

ए इमीर स्थिति समयना हमीरपुरमां वेलगवंशावतंश नरोत्तम शाहना कुळदीपक श्रीमान् वेलगशाह श्रावक, श्रावक शब्दना साचा महात्म्यने जाळवनार वसता हता. तेओ ज्ञातिना वणिक, जातिना वीशापोरवाड अने धर्मे श्रावक हता. एटलुंज नहीं पण श्रावकना एकवीश गुणोथी वेलगशाह अलंकृत होवाथी परमार्हत श्रावक हता. तेमना गृहनो सत्यशृंगार विमळादेवी ते पण परम श्राविका हतां अने सुरूप, सद्गुण तथा सद्धर्मानुरागिणी होवाथी सोनामां सुगंध मात्र थया सरखो संयोग प्रतीति आपतो हतो.

सरखा स्वभावनां, समान गुणवाळां, सरखी करणीनां अने सरखी धर्मदृढताराळां दंपति दैवीसंपत्तिनी कोटिनां मनाय छे !

दैवीसंपत्तिवान् दंपति (वेलगशाह अने विमालादेवी) स्वधर्माराधन पूर्वक सांसारिक सुखानुभवतां केटलोक समय लाखीणो लाभ माप्त करवामां गुजारतां हतां. दरम्यान आनंदकारिणी रात्रीना योग्य समयनी अंदर एक वखत विमळ भावनावाळां श्रीमति विमलादेवीश्रीए पूर्णिमाना मकाशित चंद्रने आकाशथी ऊतरी पोताना वदनकमळने विकश्वर करतो अंतरमां दाखल थइ जमणा पडखामां स्थिति करी रहेलो जोयो, जेथी तंद्राने दूर त्यजीने आनंदकारी स्वप्न पोताना प्राणसंजीवन पतिदेवने कही संभळाव्युं अने ते सांभळीने वेलगशाहे हुल्लासनी उर्मियो युक्त कह्युं के ' आजथी पुत्रनो गर्भ माप्त थइ (२८०) दिवसे परिपूर्णपणे पुत्र रत्नरूपज जन्म आपी कुळने दीपावशो. जमणा पडखामां निवास करवाने लीधे पुत्रज थाय छे ए अटल निश्चय छे; परंतु ते पुत्र शांतरसनो विलासी थशे, केमके पूर्णचंद्र शीतळता मसारक शांत मूर्तिवंत होवानां लक्षणोवाळो होवाथी ते लक्षणोनी आगाही सूचवे छे. चंद्र पूर्णिमा पछी क्षीणतावाळो जणाय छे जेथी ते पुत्र थोडीज वयमां संसारनी ममतामां क्षीणता वनाववनार नीवडी अनमां बीजना चंद्रनी पेठे दर्शन रूप गणाशे ! तेमज वदनकमळ विकश्वर करतां अंतरमां मवेश करतो जोवाथी ते पुत्र भविकजनो रूप कमळोने विकश्वर करतो—आनंद

आपतो प्रतिबोध पमाडतो गणाइ पूज्य मनाशे! अने जेम चंद्र मृगांकथी ओळख आपनार छे, तेम ते पुत्र माये विपत्तियोना अपवाद वडे विशेष ओळखमां आवशे. प्रिये! स्वप्नानुसार ते पुत्रनुं मुबारक नाम 'पार्श्वचंद्र' एज राखवुं एवो मारो निश्चय छे, कहो ए विषे तमारी शुं सम्मति छे ? '

प्रियप्राणेश्वर! अभिन्न प्रेममां भिन्नतानो भास संभवेज नहीं? तेम हुं तो आपनी अनुगामिनी छुं जेथी सदा आपना विचारने आधीन रहेवाज लग्न समयनी जोडायली ग्रंथीथी प्राणांत लगी बंधायली छुं. छेडा छेडी बांधवी ए कांइ ओछी महत्तावाळो विषय नथी. ए तो कपडानी गांठ वाळवा साथे मन अने शरीरना सघळा व्यापारोने एक रूपे रहेवा गांठ पाडेल गणाय छे. हालमां थतां लग्नो लग्न शब्दना गांभिर्य अने गौरवता सूचक अर्थथी केवळ शून्य होय छे; केमके ढींगला ढींगलीनी पेठे अलहेती उम्मरमां लग्न शब्दनो अर्थ पूरेपूरो समजाया वगर वर कन्यानो संबंध जोडी देछे, एथी अंते ए अनिष्ट परिणाम हाजरी आपतुं रहे छे के दंपतिना धर्मथी विमुख रहेलां धणीधणीआणी जूते दाळ पिरसी के नसीबनां रोदडां रोते जन्मारो पूरो करी उभयभव भ्रष्ट करे छे. परंतु मने तो कुळगुरुए लग्न शब्दनो संपूर्ण अर्थ समजावेल होवाथी तेना कायदाने पूर्णपणे ध्यानमां राखी वर्तु छुं.

स्त्रीनो स्तुत्य धर्म एज छे के—पतिनी पहेलां ऊठी इष्टदेवनुं स्मरण करी राइ प्रतिक्रमण के सामायिक करी नवकारसी वगेरे

व्रत नियम धारण करी दिवसनी सफळतानुं चिन्ह सूचित करवुं. तदनंतर पतिने जोइतां साधनो हाजर राखी घरना कामर्मा जोडावुं ते पछी पवित्राइ सह देवदर्शन, गुरुवंदन अने वीतरागप्रणीत वाणीनो लाभ लेवा जवुं, अने ते पछी पुनःगृहस्थियोना नित्यक्रममां तत्पर रहेवुं.

ज्यारे रसवति तैयार थाय त्यारे प्रेमयुक्त सुसाधु साध्वी अभ्यागत आदिने आहार पाणीथी प्रतिलाभी पुन्यभागी थवुं. ते पछी ज्ञानगोष्टी, नीति, सदाचार के धर्मतत्त्व भर्यां पुस्तको वांची विचारी मनन करवां.

वडीलोनी आज्ञानुसार वर्त्तवुं ए विमळकुळवंती वनिताओनी उत्तम विभूती छे, जेथी आज्ञा शिरोधार्य करी सदवर्त्तनमां मशगुल् रहेवुं. पोतानी शक्तिना अनुसारे वस्त्रालंकार धारण करवां, आवक खर्चनो विचार खूब ध्यानमां राखीउडाउ खर्चोने अटकाववां, परोंणा पइ सगांसंबंधी आदिनो सत्कार साचववामां विवेकी रहेवुं. कोइ वखते पण उंचे स्वरे, कठोरतायुक्त, अप्रिय अने हृदयी विशेष भाषण करी कोइनुं दिल दुभाववुं नहीं. व्यर्थ विचार करवो नहीं. म्हेणां टोणां मर्मभेदक वचनो के असभ्य भाषणनो उपयोग करवो नहीं. पतिने कोइ वाते कंटाळो आपवो नहीं. तेमने धर्म अर्थ संपादन करवामां विरोधाभास बताववो नहीं. गफलत, अदेखाइ, अतडापणुं, अविवेक, हदपार कंजुसाइ, बेहद उदारता, गर्व, क्रोध,

निंदित विचार, चाडी, हिंसा, असत्य, कपट, विषयवांछना, आत्मश्लाघा, धर्मादिमां अनास्था, साहस, चोरी, अने सांकडा विचारो वगेरेमां तत्पर रहेवुं नहीं. पतिने प्रत्येक कार्यमां मददगार रहेवुं. मधुर, सत्य अने हितकारी भाषणवडे पतिनुं मन रंजन करवुं. पवित्र रहेवुं. पतिनी गेरहाजरी वखते सती स्त्रीए शृंगार सजवो नहीं. संगीतादि मोजमजाहमां मन देवुं नहीं. धनाढ्य स्थिति होवा छतां पण नोकर चाकरोपर काम मात्रनो आधार न राखतां पोताने पूरती देखरेख राखी शरीर तथा मनने कसरत आपी गृहस्थाश्रमने शोभाववो. कोइने रुदि अप्रसन्नता देखाडवी नहीं. स्वामीना सुखे सुखी अने दुःखे दुःखी थवुं. केमके जे स्त्री पति प्रत्ये सारा स्वभाववाळी, मधुर बोलनारी, सारां आचरणोवाळी, सुखरूप चहेरावाळी, पतिमांज चित्त राखी गृहराज्यमां लीन थनारी अने पतिनान विचारोने अनुमोदन आपनारी तेज धर्मचारिणी गणाय छे. पतिये कदाच कठोर वचनो कह्यां होय, गुस्सानी नजरथी निहाळ्युं होय; तोपण पवित्राचारिणी स्त्रीए प्रसन्नता साथ पतिसेवामां हाजर रहेवुं एज पतिव्रतानो धर्म छे. जे स्त्री पतिनी सेवामां प्रसन्न चित्त साथे जोडाती नथी, मर्यादामां प्रवर्त्तती नथी अने विनय जाळवती नथी ते स्त्री अधर्मीएज गणाय छे. पति गांडो, रोगीष्ट, कदरूपो, मूर्ख, दुर्व्यसनी, दुष्ट अने अन्यायनी मूर्तिरूप होय तेने पूज्य मानी सन्मान आपवुं अने तेनी सेवामां तल्लीन रहेवुं एज कुलिनकान्तानुं

भूषण छे. पतिने आवता देखी स्त्रीए ऊठी ऊभा थवुं, नमनताइयुक्त भाषण करवुं, पतिचरणमां नजर जोडी तेमने योग्य आसन आपवुं, अने सेवामां तत्पर रही पतिने सर्व प्रकारे आनंद आपवो; केमके स्त्रीओनुं परमभूषण पतिव्रतापणुंज छे. जे स्त्री पतिने प्रसन्नता प्राप्त करी शकती नथी ते स्त्रीज गणाती नथी. तात्पर्य एज के जे स्त्री पतिने पूर्ण प्रसन्न राखे छे तेज स्त्री उत्तम मनाय छे. जेथी जो हुं तेवी उत्तम कुळशाळी स्त्रीओनी पंक्तिमां आसन लेवा उमंगी होउं तो तेमना उत्तम वर्त्तनने केम मान न आपुं? पतिनी जे विचारणा तेज मारी विचारणा छे. पतिनी अर्द्धांगना कहेवाया पछी विचारनी भिन्नता बतावबाने हकदारज नथी; मतलब के जे अरधुं अंग धारे ते बाकीना अरधा अंगने स्वीकारीज लेवुं शोभायमान छे." इत्यादि स्वधर्म संबंधी वार्तालाप करी दंपति आनंद साथ पोतपोताना नित्यनियममां निमग्न थयां.

प्रभाविक गर्भना प्रभावथी विमलादेवीने देवदर्शन, पूजन, प्रभावना, तीर्थवंदन, गुरुभक्ति, धर्मकरणी, दान देवुं अने सद्धर्मनां फरमानो श्रवण करी तेने अमलमां आणवा इत्यादि इत्यादि डोहला (दृढ विचार) उत्पन्न थवा लाग्या.

ज्यारे उत्तमकर्मी जीव गर्भमां उत्पन्न थाय छे त्यारे ते सगर्भा स्त्रीना विचारो उत्तम कार्यो भणीज दोराय छे, अरे भावाभावा पण उमदा प्रकारना थाय छे.

(हालमां राखोडी फाकवानो, कोलसा खावानो, सराखडो खावानो के माटलीनां ठीकरां अथवा तो सरवी मटोडी खावानो भाव पेदा थाय छे तो, जेवो भाव तेवांज गुणवाळां फरजंदो पण प्राप्त थतां नजरे आवे छे.)

जे जे विमलादेवीना विचार जाहेर थता आव्या ते ते मुजब वेलगशाहे मनोरथ पूर्ण करी गर्भने तुष्टि पुष्टि आपी.

पांचमे मासे शास्त्रविधान प्रमाणे सोल संस्कार पैकी पहेलो गर्भाधान नामनो संस्कार साचव्यो. आठमे मासे पुंसवन नामनो बीजो संस्कार अमलमां आण्यो, अने ते पछी उत्तम विचारवाळा मनोबळवडे भविष्यमां भाग्यशाळी थनारा बाळकने सद्गुणसंपन्न थवानी उमदा योजनाओ योजी मातापिताये पोतानी उत्तम फरज अदा करी.

दिनपर दिन व्यतीत थतां गर्भमर्यादा पूर्णताने पहोंचवा आवी, अने नव मास उपरांत कंइक समय जतां प्रसव समयनी आगाही दृष्टिगोचर थवा लागी. * * *

हमेशां घणुं करीने चैत्र शूदी नवमी जाणे अवतारी पुरुषोना अवतरण माटेज सरजाइ न होय ? तेवो आपणने प्रतीति आपवा विक्रम संवत १५३७ ना चैत्र शुक्ल नवमी शुक्रवारनी रलियामणी रात्रीए पंचांग शुद्धिपूर्वक–सुलग्न–सुसमय विमलादेवीए विमलयशधारी पुत्ररत्नने जन्म आप्यो. * * *

पुत्र जन्म थतांज आनंदनो समुद्र भरतीयुक्त देखावा लाग्यो, मांगलिक वाजींत्रो वागवा लाग्यां, सुंदर सुंदरियो आनंद प्रदर्शित करवा लागी, साकर वेंचात्री शरु थइ अने आनंदनी वधाइ विस्तरवा लागी.

वेलगशाहें पुत्रप्राप्तिना आनंद समय जिनमंदिरोमां अट्ठाइउत्सव शरु कराव्यो. अतिथियोने भोजनादिथी, सुपात्र–शुद्धाचारी साधु मुनिराजोने अन्न वस्त्र पात्र पुस्तकादिथी, याचकोने निवाजसथी, भिक्षुकोने खानपानथी, सगां संबंधीओने सन्मानथी, मित्रो विद्वानोने अतरना आनंदथी अने वडीलोने विनय आदिथी संतोषी संबंधि जनोने चालता रीतरिवाज मुजब वस्त्रपान मुद्रादि आपी पुत्रजन्ममहोत्सवनो ल्हाव लीधो, संसाररूप वृक्षनी सुफळता मेळवी अने वंशवृद्धिनी आगाहुं निशान फरकवा लाग्युं.

जन्मसंस्कारना आनंद बाद चंद्रार्क दर्शननो चोथो संस्कार साचवी पांचमो क्षीराशन संस्कार, छठो षष्ठीपूजन संस्कार, सातमो शुचिकर्म संस्कार अने आठमो नामकरण संस्कार विधान पूर्वक साचवी पोताना निश्चयानुसार पासचंद (पार्श्वचंद्र) नाम राख्युं,

दिनप्रतिदिन बीजना चंद्रनी पेठे अने निर्विघ्नता पूर्वक कडवी वेलीनी पेठे दिवस करतां राते अने रात करतां दिवसे विशेष वर्द्धमान दशावड लालन पालन प्रीणन पोषण युक्त बाळ–लीला अनुभवतो पार्श्वचंद्र कुंवर मोटो थतो चाल्यो.

ते पछी अन्नप्रासन संस्कार, कर्णवेध संस्कार, केशवपन अने उपनयन संस्कारने विधानयुक्त पूर्णपणे उपयोगमां आणी कुमारने संस्कारी बनावी माता पिता पोताना सदाचारथी वाळकना मनमां रूडी ऊंडी छाप वेसारवा लाग्यां.

नियमज छे के, माता पिताना जेवा विचार तथा जेवो आचार होय तेवाज गुण संततीने प्राप्त थाय छे.

वांचनार ! अत्र ए संबंधी दलील सहित थोडा दाखला रजु करवानी विचारणा योग्य धारुं छुं; केमके सही साक्षी शिवाय दस्तावेज पण वजनदार मनातो नथी; माटे ध्यानमां लेवा लायक पुरावा विना ते वात अत्यारे घणाखरा गपरूप माने छे तेमनुं मन समाधानीमां शीरीते आवे ?

ख्याल करो के, अकबर शाहनी माताए सगर्भावस्थामां पोतानी साथळ ऊपर एक सुंदर फूल चित्र्युं हतुं ते एटलाज माटे के आवुंज हावेहुब फूल भावीमां पेदा थनारा पुत्रनी साथळ ऊपर कायम जणाय. एवा फळना संकल्प वडे ए चिन्ह कर्युं हतुं अने थयुं पण तेमज. त्यारे विचार करो के माताना मननी असर गर्भमां रहेला वाळकना शरीर अंदर केटली वधी थाय छे ?

शूरवीर शिवाजीनी माता सगर्भावस्थामां पोताना पति साथे लडाइना मेदानमां शामेल रही शत्रुनां मान मर्दन करनार पुत्र पाक-

वानोज दृढ संकल्प धरावती हती. एथी ते बाळक बादशाह औरंग-जेब जेवाने पण तोबाह पोकरावनार वीरमणि नीवड्यो. एवुं माताना विचारनी असर गर्भमां अने खोळामां रहेनारा बाळक पर ओछी थइ कहवाशे ?

नेपोलियन बोनापार्टनी माता पण सगर्भावस्था वखते लडाइनी तालीम लइ निपुण नीवडी होवाथी तेज संकल्प वडे तेवोज पुत्र थयो के जेणे स्वप्नमां पण फतेह पामवानी शंका उपजे तेवी लडाइओमां तेणे फतेह मेळवी, आ बधो प्रताप मातानी दृढ विचारणानोज हतो.

एक मडम एक सीदी बादशाहना चित्र पर बहुज प्यार राखती होवाथी सगर्भावस्थामां पण तेणीनी तेज चित्र पर लगनी कायम रही हती जेथी गोरांग देवनुं बाळक छतां पण सीदीना जेवा काळा रंगनुं, आंकडीआळावाळुं, झींणी आख्यो अने जाडा होठ आदि चिन्ह-वाळुज थयु शुं मननी असर गर्भ पर केवी थाय छे ए जाणवा आथी पण वधारे दाखलानी जरुर छे ?

पूर्वाचार्यो अने पाश्चिमात्य विद्वानो कबूल करे छे के, जे जे विचारो पिताना अने तेमां पण विशेष करीने माताना जेवा विचार अने तेणीनी जेवी चाल चलगत तथा केळवणी होय तेवोज ओलाद गुणी अगर दुर्गुणी पेदा थाय छे. अने विशेषमा कहिये तो माता पोतानो मनमोज प्रमाणे सतती बनाववी धारे तेवी पेदा थाय छ एटले के जो खोड खापण वगरनी. बुद्धिशाळी, रूपशाळी, कला

कौशल्यतावंत, बहादुर अने दीर्धजीवनवाळी बनाववा धारे तो तेज प्रमाणे थाय छे; केमके गर्भावस्थाना समयमां, धावण धवरावबाना समयमां, रमाडवाना समयमां, अन्न प्रासनादि संस्कारोना समयमां अने फरजंद पूर्ण पणे पोतानी समजमां आवतां लगीना समयमां, माता जेवी विचारणानी अने वर्तणुकनी तालीम आपे तेवीज संतती विचार ने आचारवाळी नीवडे छे.

पुत्र पेदा करवो छे के पुत्री ? सद्गुणी करवां छे के दुर्गुणी ? काणां–रांडां–लूलां–लंगडां–आंधळां–छिद्रा दांतनां–व्यभिचारी–मूर्ख–रोगी के नीरोगी तेमज मर्द के नपुंसक जे करवा धारे ते माता करी शके छे.

जेम खेडुत अनाजने मोटा दाणानुं, भारे जत्थामां अने रस कसदार बनाववुं होय तो ते मरजी मुजब तेना नियमने मान आपी बनावी शके छे. जेम माळी स्वादीष्ट मोटां अने बहोळी संख्यावाळां फळो, तेमज विशेष खुशबुदार मन मानता कदनां फूल बनाववां धारे तो तेज प्रमाणे करी शके छे; जेम कवि पोतानी विचारणा काव्य के लेखमां गोठवी शके छे. जेम कारीगर पोतानी कारीगरी वडे धारेलो वस्तु नियम मुजबज तैयार बनावी अति उपयोगीपणुं आपी शके छे, अने जेम योगक्रियाधारी योग–बळवडे स्वप्नमां पण न मानी शकाय तेवां कामो करी बतावी शके छे, तेम माता पोतानी धारणा प्रमाणेज फरजंद पेदा करी तेमां सारा नठारा संस्कारो

आपी शके छे, अने आ संबंधना सैकडो नहीं बल्के बेसुमार दाखला तैयार छे.

(आ बाबतनी माहेती मेळववी होय तो कल्पसूत्रमां वीरमाताना गर्भसमयनो प्रसंग तथा विवेकविलास ग्रन्थनो पांचमो उल्लास, अने प्रमाण सहस्रीनुं आचार प्रकरण अवलोकन करवु.)

मतलब एज के, गर्भसमयमां के पुत्र होसमां आवतां लगीना समयमां जे जे विचार विशेषपणे करवामां आवे ते ते विचारनुं वातावरण धीरे धीरे वधतां सघन बनी तेज विचारोने पुष्ट बनावे छे.

तेमज प्रत्येक पुस्तको पुकारी पुकारीने कही रहेल छे के, मनोबळवडेज जे सिद्धि के असिद्धि साध्य करवी धारे तेज थइ शके छे; केमके—

मनकी हारें हार है, मनकी जीतें जीत;
वेग परमपद पाइये, मनहीकी परतीत! १

वाचकवृंद! आम होवाने लीधेज माता विमळादे पण पोताना पुत्र पासचंद्रमां उत्तम रूप गुण दाखलकरी शक्यां हतां, अने पोते तेज सदाचार मुजब वर्त्तीं पुत्रना मनमां स्वधर्म वगेरेना संस्कारनी सचोट असर करवा भाग्यशाळी थयां हतां.

भमरी विचारबळना संस्कारवडे इयळने पोताना समान बनावी शके छे, मुंजनी दोरीपर लागेली माखीनी हथारमांथी संस्कारवडे फूंदीनो उगाडी शकाय छे, पहेला दिवसनी वाछडीना छाणथी

संस्कारवडे कणेरनो छोड उगाडी शकाय छे, अरडूसीना छोडने संस्कारो आपवाथी (तेने) मोगरानो छोड बनावी लइ मोगरानां फूल आवतां करी शकाय छे, अने गुलाबना छोडने पांचे जातना रंगनी कलमोनो संस्कार करतां एकज छोडपर पांचे रंगनां गुलाब पुष्पो आवी शके छे. ए बधो प्रताप संस्कारनी पूर्णतानोज छे. अधूरा संस्कार अगर मर्यादाभ्रष्ट संस्कार आपवाथी धारेली धारणा सफळताने नहीं पण अफळतानेज भेटे छे.

माता विमळादेएं पोताना फरजंदने नामांकित करवानी तालीम गुरु मुखद्वारा पूरेपूरी मेळवी हती अने अमलमां पण पूरेपूरी आणी हती, जेथी तेमना पुत्रने आज लगी सद्भावे के दुर्भावे पण लाखो मानव याद करी रहेल छे. तो कहेवुंज योग्य छे के–

जाकी शोभा जगतमें, ताको जीवित धन्न !
जीवत ही मूवे भले, सुणी कुशोभा कन्न !

प्रिय पाठको ! धन्य जन्म तेनोज छे के–

(पटवे ते पहेलुं नोरतुं–ए राह.)

दिल धारी देशनी दाज, धन्य जन्म धरिया !
कर्या देशद्रोहीनां काज, ए शिद अवतरिया !
वावर्युं परहित नित वित्त, धन्य जन्म धरिया !
चोर्युं सुकृतमां चित्त, ए शिद अवतरिया !

जेनो जगत वदे जयकार, धन्य जन्म धरिया !
भर्या शुंडाइना भंडार, ए शिद अवतरिया ? ३
होम्युं तन अवर हितार्थ, धन्य जन्म धरिया !
कदि कर्युं नहीं परमार्थ, ए शिद अवतरिया ? ४
धार्यो जेणे अहिंसा धर्म, धन्य जन्म धरिया !
कर्या हिंसादिक कुकर्म, ए शिद अवतरिया ? ५
छे स्वधर्ममा अति चूस्त, धन्य जन्म धरिया ?
शुभ काममा अतिशय सुस्त, ए शिद अवतरिया ? ६
करे भारतनुं कल्याण, धन्य जन्म धरिया ?
वरनो थइ वाळे घाण, ए शिद अवतरिया ! ७
बोल्या जे पाळे बोल, धन्य जन्म धरिया ?
करे बोल्या बोल अबोल, ए शिद अवतरिया ? ८
त्रे पूर्णचंद्र सद्बोध, धन्य जन्म धरिया !
श्रेयपथनो न करे शोध, ए शिद अवतरिया ? ९

वाचनार ! तात्पर्य एज के जेणे उभय जन्म सार्थक कर्यानो मार्ग मुलनो करेल छे तेणेज धन्यातिधन्य पद वरेल मनाय छे. आपणो चरित्रनायक पण तेवोज हतो एटले के चंद्रनी पेठे शांत दर्शनवंत, जनवल्लभ, मनहर मूर्तिवाळो, मदहास्य, अने रुमक-झुमक ठुमकती चाल सहित घुंघरवाळा वाळनी छटावडे प्रेक्षकोने आनंद आपवा लाग्यो. तेमज ज्यारे पांच वर्षनी वयनो थर्ता

पिताए पूर्ण आनंदथी निशाळ ग्रहण उत्सव करी पुत्र पार्श्वचंद्रने पाठशाळामां पधरावी सुशिक्षित शिक्षकना हाथमां सुंपी विद्यासंपत्ति स्वाधीन करावा मांडी.

प्रियपाठको ! जेम सुवर्णनी अंदर कांति विद्यमानज होय छे, ते फक्त पॉलीस–ओप थतांनी साथेज असल झगझगाटी प्रकटी आवे छे, जेम खाणमांथी निकळेला रत्नमां अमूल्यपणुं विद्यमानज होय छे, ते फक्त नगीनगरने हाथ जतांज ते अमूल्यता जाहेरमां मूकी शके छे, जेम शीशीमां पेक करेली कस्तूरी अथवा कोइ मनहर सुगंधी पदार्थ पोतानामां रहेली जनमनहरण खुशबु जालवी रहेल होय छे, ते फक्त बूच खोलतांज तेनो परिमळ पसरावी मानवनॉ मन पोताना भणी आकर्षि ले छे. जेम एन्जीनोनी अंदर अन्यने गति आपी धारेली धारणा पार पाडवानुं सामर्थ्य विद्यमान होय छे, ते फक्त पावर आपवानी कळनो इसारो मळतांज पोतानी अपूर्व शक्ति आचारमां आपे छे, तेम पूर्वसंचित पुन्यवाळा प्रभाविक पुरुषोमां सद्गुणो, विद्या, आत्मबळ आदि विद्यमानज होय छे, ते फक्त उस्तादना हाथनो स्पर्श थतांज अंतरमां रहेली झवेरात झळकी आनंद आपवा लागे छे.

कुमार पासचंद्रना अंतःकरणमां पूर्वपुन्यसंयोगथी अने साय-न्सना सिद्धांतथी कहिये तो पूर्वना प्राप्त करेला अभ्यासयोगथी

विद्या विद्यमानज हती ते फक्त विद्यागुरुना संयोगथी जाहेरमां आवेली जणावा लागी.

दाखला रजु करवानी जरुर छे के—

नुदियारना रहेनार श्री गौरांग महा प्रभुए पण बाळवयमां असाधारण बुद्धिबळ बतावी महासमर्थ विद्वानोनो जय करी धर्मनी संस्थापना करी हती.

महात्मा बुद्धमां पण बाल्यावस्थाथी अपरिमित बुद्धिबळ हतुं, जेथी तेमणे दुनियाना मोटा भागमां बौद्धधर्म फेलाव्यो हतो.

भक्त प्रल्हादमां पण बाळपणथी अत्यंत भक्तिभाव अने दृढ श्रद्धा हती.

पंडित गट्टुलालजी तेमज शास्त्री कालीदास गोविंदजी पण स्वर्गीज न्हानी उमरमां संस्कृत भाषाना सारा अधिकारी नीवड्या हता.

सूक्ष्म वायुमा अमुक प्रकारनुं स्फुरण थवाथी प्रकाश उत्पन्न थाय छे, ए विद्यानुं शोधन करनार डॉ. यंग बे वर्षनी उमरे तो ते छटा पूर्ण वांची शकतो हतो! चार वर्षनो थतां पहेलां तेणे बाइबल बे वखत पूरुं वांच्युं हतुं! सात वर्षनी उमरें गणित-शास्त्र शीख्यो हतो. ते पछी लेटीन, ग्रीक, हीब्रु, फ्रेंच, इटालियन भाषाओ, गणित नामुं, इजनेरी काम, दुर्बीन बनाववानुं काम संपूर्ण रीतें शीखी मशहूर नीवड्यो हतो, अने चौद वर्षनी उमर पहेलां ते पूर्व प्रदेशनी भाषामां पण शोख धरावतो हतो.

विलीयम रोवन हेमील्टन त्रण वर्षनी उमर पहेलां हिब्रु भापानो अभ्यास करतो हतो. सात वर्षनी उमरे तो ते भापानी वृद्धि विषे डब्लीननी ट्रिनिटी कोलेजना फेलोने कबूल करवुं पडयुं हतुं के कोलेजमां फेलोना उमेदवारोमां पण आना करतां विशेष ज्ञान नथी. तेर वर्षनी उमरे तेर जातनी भापा शीखी निपुण थयो हतो. युरोपमां हाल चालती भापाओ उपरांत अरब्बी, फारसी, संस्कृत हिंदि अने मलय भापा पण सारी रीते मेळवी हती. डब्लीनमां इरानथी एक एलची (वकील) आव्यो हतो ते वखते फारसी भापामां आपवानुं मानपत्र तेणे चौद वर्षनी उमरे लख्युं हतुं जेथी ते एलची अचंबो पाम्यो हतो अने गणित वगेरेमां पण घणो हुशीआर होवाथी सुकीर्तिनो साथी थयो हतो.

एम विक्टोरियन सारडोना प्रमुखपणा नीचे चालती सोसाइटी ओफ ड्रामेटीक ओथर्स नामनी संस्थानी अंदर एक दश वर्षनी छोडी हती तेणे घणां नाटको रच्यां हतां. ते घणीज नानी वयमां लखी शकती हती. तेनी मा पूछती तो ते कहेती के—मने लखतां वांचतां शीखवानी बहु जरुर नथी; केमके हु ज्यां ज्यां दृष्टि फेरवुं छुं अने जे वस्तु जोवा जाणवानी इच्छा राखुं छुं त्यां तो मने तुरतज एनी मेळे तेनुं ज्ञान थइ आवे छे !

न्यु बर्न्सवीक मगणाना डोनाल्ड मरफी नामना छोकराए छ वर्षनी उमरे एक नवाइ जेवा रमकडानुं पेटंट मेळव्युं हतुं.

डुकलीन शहेरना ज्योर्ज ओनस्टेड नामना छोकराए आगगांथी चचवाना सांचानी शोधना संबंधमां १२०००० रुपियानी बक्षीश मेळवी हती.

इलीनो शहेरना ओल्बर्ट स्मीथ नामना छोकराए होडी हलकारवाना एक सचानी शोध न्हानी उमरमा करी हती.

जर्मनिना ल्युबेक शहेरमा क्रीश्चीयन हेइनेकेन नामनो छोकरो फक्त वर्ष दिवसनीज उमरमा वाची शकतो हतो अने त्रण वर्षनो थता पहेला ते लखी शकतो हतो.

वॅरेटीयर नामनो प्रख्यात भाषाशास्त्री पांच वर्षनी उमर पहेला फ्रेंच, लेटीन, अने जर्मन भाषा बोली जाणतो हतो, अने दश वर्षनी उमरे पहोंचता पहेला तो तेणे एक हिन्दी भाषानो शब्दकोष बनाव्यो हतो.

जेम्स क्रीकटन नामनो प्रख्यात बुद्धिशाळी १४ वर्षनी उमर पहेला तो सर्व विद्याकळामा निपुण नीवडयो हतो.

ग्वालीयर स्टेटमां बाबु तोतारामनो पुत्र शंकरानंद चार वर्षनी उमरे वाल्मीकी रामायणना श्लोक मधुर अने शुद्धोच्चारथी बोलतो हतो. आठ वर्षनी उमरे महान् लेखकोना पुस्तक अंदर ऊंडा रहेला रहस्यमां मोफेसरोना कान पकडावे तेवो हुशियार गणायो हतो अने सने १९०७ मा तेर वर्षनी उमरे पंजाबनी युनीवर्सिटीनी

ःकृत भाषानी एमएनी परीक्षामां बेठो हतो अने पास थयो हतो. डाज वखत पछी ते कलकत्तानी युनीवर्सिटीनी काव्यरत्ननी परीमां बेठो हतो.

विलीयम जेम्स सीडीस नामना एक छोकराए अग्यार वर्षनी ामां हावर्ड युनिवर्सीटी अंदर गणितना उंडा विषय संबंधी दृष्टांत, द्धान्त, शंकासमाधान सहित गंभीर विद्वतापूर्वक भाषण आपी टा प्रोफेसरोने पण चकित बनाव्या हता अने गणित-शास्त्रीओने व्रवणमां नाख्या हता. केमके तेओ जे न जाणता हता तेवा शब्दो, त्ररा गणित, अने उत्तम कल्पना पूर्ण अगोचर युत्री भरेल ु व्याख्यान हतुं.

महान् समर्थ ज्ञानेश्वरे बाल्यावस्थामांज गणित-शास्त्र करतां ा अनरा वेदांत शास्त्रमां पारंगता प्रतिपादन करी हती.

ज्यारे आवां मनुष्यो आज काल पण आवी अलौकिक असारग बुद्धिवाळां छे त्यारे पूर्वना जमानामां पासचंद कुमार ज्ञानाणी कर्मथी अलग रहेल होइ सकळ शास्त्रना वेत्ता नीवडे तो ां आश्चर्य थवा जेवुं शुं छे ? ! उन्नतिक्रममा आगळ वधेला प्रभाक्र पुरुषो अगम्य चमत्कृतिवाळा होवाथी प्राकृत मानवो करतां दीज गतिना होय छे ! .

त्यार बाद पूज्य वेलगशाह पुत्रना माटे सारा खानदान कुटुंनी रूप गुण शीळसंपन्न कुमारिकानी शोध करवाना विचारमां

मुंथाया; परंतु भवितव्यतानी प्रबळताना संयोगने लीधे ते अरसान अंदर उपकारी गुरुराज पंडित साधुरत्नजीनुं त्यां पधारवुं थयुं. श्री संघने खबर मळतांज स्हामैयुं करी मुनिराजजीने वस्तिमां पधराव्या विनय मर्यादा युक्त गुरु–वंदन भक्ति वैयावच्चादि साचवी संघ समुदाय आनंद पाम्यो अने गुरुराजनी गुण गरिमामां लीन बनी चंद्र चकोरनी पेठे जिज्ञासुओ जिनभाषित वाणिनो लाभ लेवा उत्सुक रह्या.

योग्य जीवोहितार्थ साधु वर्गमां रत्न सरखा साधुरत्न मुनिराजे समयोचित संसारनी असारता तथा धर्म–साधनथी प्राप्त थता अलभ्य लाभ संबंधी जिन प्ररुपित वाणि श्रवण कराववी शरु करी अने दाखला–दलील–शंका–समाधान–तर्क–वितर्क वगेरेना निर्णय साथ मधुर, अविवादि, मर्मभेद रहित, ममत्व विनानी, सरळ, सर्व हितकारिणी व्याख्या वडे भाविक भक्तोने वडो आनंद आप्यो.

व्याख्यान सांभळवाथी पासचंद कुंवरनी स्वधर्म उपर विशेष रुची उत्पन्न थइ एथी प्रति दिवस गुरराज पासे आवी धर्मचर्चानुं व्यसन अखतियार करवा लाग्या.

गुरराजे तेमनी तर्कशक्ति, ग्रहणधारणाशक्ति, धर्मदृढता, अने न साथे लक्षण व्यंजन युक्त उत्तम शरीरकांति आदि निहाळतां शासनप्रभाविक पुरुषनी लायकात धरावनार जाणी पासचंद कुंवरने अंतरना उमळका पूर्वक गुप्त रहस्य समजाववुं शरु कर्युं.

हमेशानो नियमज छे के, निष्पेहो गुरु गीतार्थ होवा छतां पण
ग्य शिष्य शोधवानी स्पृहा राखे छे. तो पछी योग्य शिष्यनी
माटे मावुरत्न साधुरत्न मुनीश्वर केम स्पृहा न राखे ? अल-
राखे ! उत्तम शिष्य संतती एज स्वधर्मोन्नतिनी पताका दिगंत
फरकाववानुं मुख्य साधन छे ते सर्वथी प्रथम हाथ करवानी
ज होय छे. ज्यारे सुगुरु उत्तम शिष्यनी शोधमां कटिबद्ध रहे छे,
उत्तम शिष्यो सुगुरुनी शोधमां केम न रहे? वेशक रहेज!
ज्यारे उत्तम गुरु शिष्यनो संयोग स्वाधीन थाय त्यारे पछी
णज शी रही ? ? अर्थात् धारेला अर्थनी प्राप्ति एज पुन्य
तेनो परमानुकूळता गणाय छे.

आम होवाने लीधे गुरुराज पासचंद कुंवरनो अन स्वधर्मनो
प करवा तत्पर रही संसारनी असारताना हावेहुब चितार वतावी
चंद कुंवरनुं मन संसारनां क्षणिक सुखो उपरथी उद्विग्न करी
, एथी मन फटकयुं एटले परम वैराग्य प्रकट थतां अकथनीय
टनी रेलम छेल थती जणाइ.

माता पितानो जाण वहार नहतुं के, पुत्र संसार जाळमां फसाइ
? तेओए तो गर्भसमयथीज निश्चय कर्यो हतो के, पुत्र
रनी मोहमायाथी दिन प्रतिदिन क्षीण थइ आखर बीजना
नी पेठे जगवंद्य थशेज! अने तेवुंज थवाना संयोगोए सानुकूळता
र हाजरी आपी एटले पछी प्रतीतिमां शंकाने स्थान मळेज क्यानुं ?

स्वप्ननी आगाही अने जन्मकुंडलीमां पडेला दीक्षितग्रहयोग, निधियोग अने अंशावतार योग आदि शुभयोगी ग्रहो स्वगृहि आदि सु संयोगवाळा पूर्ण दृष्टिवंत (जन्मकुंडलीमां) मौजूद हत खात्रीमां जरापण शंका नहतो के, निग्रंथ-विद्वान्-प्र॰ प्रभाविक, स्पृहा रहित अने मायामयि संसारथी पर थय रहेनारज नथी ?

माता पिताए आत्म-कल्याण अने जगत-कल्याणना ध्यानमां लइ कुळदीपक कुंवरने जैन-दीक्षा अंगिकार करवामां मति आपी अने दीक्षा-महोत्सवनो अट्ठाइ महोत्सव तेओ जैनोन्नतिमां दृढानुरागी थयां.

'भावतुं हतुं ने वैद्ये कह्युं-' एवो संयोग मळतांज कुंवर प्रसन्न थया, अने जेम आलान (हाथीशाळा) नां बंधन गजराज बंधन रहित थवा आतुर थाय तेम संसार-बंधन पासचंद कुंवर अत्यातुर थया.

अने विद्वत्तादिनी माफिना चमत्कारमां मग्न थइ घर घर आनंदोत्सव शरु करी तरियां तोरण–ध्वजा पताका–गीत–वाजीत्र, तथा सुकृत्य अने मिष्टान्न भोजनादिवडे अंतरनो उमळको प्रदर्शित कर्यो. उत्तमकार्य प्रसंगमां उत्तमजनो अत्युत्साह पूर्वक भाग लइ अहोभाग्य माने छे !

दिक्षा-महोत्सवनो छेल्लो दिवस संवत १५४६ ना वैशाख सुद ३ नो हतो, ते दिवसे बहुमूली पालखीनी अंदर किशोर वयना पासचंद्र कुंवर दबदबा सह विराजमान थया अने गाजते वाजते गीत नृत्य संयुक्त पुष्कळ आडंबरथी शहेर बहारना उद्यानमां अशोकवृक्ष आगळ संघ समुदाय साथ जइ पहोंच्या.

गुरुराजे जैननी दिक्षाविधि शरु कर्यो अने क्रमे क्रमे शरीर उपरना वस्त्रालंकारनो त्याग करी वैराग्य पूर्ण महाव्रत उचरावी तेमनुं मुनि पार्श्वचंद्र नाम कायम कर्युं, व्हाला वाचक वर्ग ! ए वखतनो आनंद अने भव्य दबदबा भर्यो मानव–मेदनीनो देखाव, ते वखते हाजर रहेला भाविको अने शुद्ध नव दिक्षित मुनिना अंतःकरण शिवाय वास्तविकरीते कोइ वर्णन न करी शके तेवो असाधारण शोभावंत हतो.

हाजर रहेला भोजको–सेवको–याचको–बिरुदावळी बोलता जनो अने कवियो विगेरेने उदारता साथ दानदक्षिणा आपी. तथा अन्य आनंदप्रद आचारोने आचारमां आणी मनमानती सुकृत्यनी

कमाणीनी ल्हाणी मुनिना संसारिपणाना मातापिताओए, सगां संबंधियोए, अने मेक्षकोए प्राप्त करी पुन्य प्रकृतिने प्रबळ करी.

गुरुराज पण प्रमोद पाम्या. विजयकारी वासक्षेपवडे दिनप्रतिदिन विजय वावटो फरकवाना मनोबळनुं गुह्य तत्त्व मुनिने समजावी कार्यनी सफळता स्वाधीन थइ मानी भव्य जीवो प्रत्ये गुरुराजे संसारनो असार संबंध दर्शावनार अने मांगलिकमाळा प्रवर्तावनाना विचारनो धर्मबोध आप्यो.

तदनंतर महोत्सव पुर्वक सकळ समुदाय आनंदमां गर्क थइ पोत पोताना घर भणी परवर्यो. मात्र गुरु–आज्ञाथी नियम योग्य नवदिक्षित पासे दिक्षितो अने श्रावको रात्रभर शहेर व्हारज रही प्रातःकाळे अपूर्व शोभा भर्या स्हामैया सहित उपाश्रयमां पधार्या अने देव गुरुने मर्यादा प्रमाणे नमन क्षमापनादि करी मुनि पोताना मनमां अहोभाग्य मानवा लाग्या; केमके धारेली धारणा निर्विघ्न पणे सफळ थइ. कार्यनी सफळताएज आनंदनी रेलमछेल मनाय छे.

मुनि पार्श्वचंद्रजी गुरुराजनी साथे भवजलतारक भव्य जहाजरूपश्री शत्रुंजय गिरिराजनी यात्रा करवा विचर्या अने त्रिकरण शिद्धिवडे श्रीमरुदेवीना नंदनने निहाळी पाप पखाळी पुनः विधिपूर्वक विहार करता गुरुजी सहित अनुकूळ स्थळे पधार्या.

गुरुजीनी पासेथी पट्शास्त्र संबंधीनी चर्चावादनां शास्त्रो, वैय्याकरण–काव्य–साहित्य–नाटक–चंपू–संगीत–रसालंकार–नर्ट–योग–स्वमतमंडन, परमतखंडन संबंधी विविध शास्त्रो, जिनमतनां आगमो श्रुति स्मृतियो, गणित, प्रकरण, पट्दर्शनना तत्त्वदर्शक सिद्धांतो अने अन्य विविध शास्त्रोनो गंभीर रहस्य सहित अभ्यास कर्यो. तेमज फारसी तथा ब्राह्मी लिपि, मनहरण विचित्र चित्रकळा, तथा अष्टाविधाननी चातुरीनो पण सारो अभ्यास मेळव्यो. विशेषमां काव्य–चित्र–प्रबंध, राग रागीणियोनुं ज्ञान, कवितामां पदलालित्यता, अर्थगंभीरता अने अदोषता लाववानुं ज्ञान, तथा वैद्यकज्ञान, अने संस्कृत, मागधी भाषानो उच्च अभ्यास इत्यादि इत्यादि विद्या कला उत्तम आचार्यो अने शिक्षको द्वारा प्राप्त करी एक धुरंधर विद्वान् शिरोमणि पदने शोभावनारा नीवड्या.

मुनिश्री पार्श्वचंद्रजी विविध ग्रंथ, चरित्र, प्रस्ताविक श्लोक, स्तवन, स्वाध्याय, स्तुति, चोपाइ, रास आदिनी खुबीवंत रचना रची सरस्वतिप्रसादनुं बिरुद हाथ करवामां, मतवादियोना वाद गाळवामां, जनमनरंजन करवामां, भविकने सुबोधवडे धर्मानुरागी बनाववामां, दैवीचमत्कार देखाडवामां अने जिनाज्ञा मुजब आत्मकल्याणनो शोध करी विचारने आचारमां लाववामां पूर्ण प्रशंसनीय गणाया.

श्री पार्श्वचंद्रजी देखावमां मनोहर, वाणिनो सुकंठपूर्वक समयोचित विलास, अनुभवी, जनमन आकर्षवामां कुशळ, अने उन्नतिक्रममां

आगळ वधरा अत्युत्साही होवाथी रूप गुण संपन्न हिंदना कोहीनूर समान ज्यां त्यां गुणीजन वृंदमां आदर सत्कार मेळववा विश्व-विख्यात मनाया.

नियमज छे के रूप गुण शीळवडे मनुष्य मात्र दरेक जगोए पूज्यपद मेळवीज शके छे! केमके रूप अने गुण मनुष्यनां मन स्वाधीन करवा माटे उत्तमोत्तम वशिकरण छे! रूप ए जोनारने मळवानी आतुरता पेदा करवानुं बीजमंत्र छे! अने गुण ए मेळवेलो मुला-कातने सदैव संजीवन करवानो अमृतकुंड छे! रूप गुणने ओळखा-वनार छे! अने गुण रूपने शोभावनार छे! कदरूपा मनुष्यमां पूर्वकर्मनी पुन्यप्रकृतिनी प्रबळताना संयोगे कदाच उत्तम गुणोनो संग्रह थइ आवे छे; परंतु ज्यां लगी पूरो परिचय न थाय त्यां लगी तेनापर प्यार के पूज्यबुद्धिनो भाव पेदा थइ आवतो ज नथी. पण जो रूपवानमां गुणोनो संचय होय तो दूधमां साकर मळीजवा जेवो संयोग जणातां ते रूप गुण शीळसंपन्न मानव देव, दानव ने केटक मानवने पण चमत्कार पेदा कर्या वगर रहे नहीं. आम होवाथी श्रीपार्श्वचंद्रजी दरेकना मनमां चमत्कृति उपजाव्या विना रह्या नहीं.

जनमनमां चमत्कारनी अगझगाटी प्रकटता श्रीपार्श्वचंद्रजी अति विशेष उत्तर दशाना भोक्ता थाय एवा आंदोलन पूर्वक सघन वातावरण भूमंडलमां वत्वत्तर थतु चाल्यु अने ते वानाबरणे सुद सापूरत्नसूरीजीना मनमंदिरनी अंदर पहोंची सदाने माटे स्थान

कायम कर्युं. आम थवाने लीधे गुरुराजनी वृत्तियो उपर ते आंदोलनोए ए काबु मेळव्यो के, श्री पार्श्वचंद्रगणिने हवे उपाध्याय पदथी अलंकृत करवानी आवश्यता छे, एवी अचळ विचारणाने उद्‌भवावी ते कायम रहे तेवी योजना योजवानी फरज पाडी.

पिता अगर गुरु योग्यतावाळा पुत्र के शिष्यने जो योग्य अधिकारनो अधिकारी न बनावे तो तेमनो घनिष्ट संबंध अने मिष्टतावाळो व्यवहार कदि पण शोभावंत नीवडी शकतो नथी !

संवत १९४९ थी १९५४ लगीना आठ वर्षना टुंक अरसामां शिष्यरत्न श्री पार्श्वचंद्रगणिए अनहद विद्या कळानी अंदर मेळवेली फतेह, तेमज जनसमाजनो प्राप्त करेलो अंतरंग धर्मस्नेह अने विश्वमां विस्तारेली विमळ विख्याति ए त्रिपुटी मायाए गुरुवर्य्य नाणपुरीय तपगच्छाचार्य साधूरत्नसूरीजीने अत्यंत आनंद आप्यो हतो अने तेमां पण जगो जगोएथी संघ तरफनां पाठकपद आपवानां वीनती पत्रो आव्यां, एथी नागोर शेहेरनी अंदर सकळ संघने आनंदी उर्मियोनी जाण करी.

नागोर नगरमां नगीनारूप धनधान्यादि संपत्ति पूर्ण, दृढधर्मानुरागी, ब्रह्मचर्यधारक, मदरहित अने देव गुरु धर्मवाक्योनुं त्रिकरण शुद्धिवडे सेवन करनार शेठ सजलाणी गोत्रीय सहसमुळ वगेरे लाभग्राही भाविक भक्तोए पाठकपदोत्सव शरु कर्यो अने बहार गामोना श्री संघसमुदायने ते शुभ अवसरपर नागोर पधारवानी

निमंत्रणपत्रिका (कंकोत्री) ओ हलकाराओद्वारा पाठवी. जिनालयोमां पूजामहोत्सव. नगरमां अमारी प्रतिघोष, घरघरमां मिष्टान्न भोजन, मनमां आनंदोत्सव. अने निर्मळा स्थळमां गीत, जिनगुणगान, नाट्यारंभ, मंगल्ल वाजित्रनो मधुरो नाद आदि थइ रह्यां हतां.

आमंत्रणपत्रिकाओ पहोंचतां स्थळोस्थळथी श्रावक, श्राविका, यतिमंडळ अने साध्वीगणनां नागोरनी अंदर पावन पगलां थवा लाग्यां, देवगुरुनी भक्तिनो रंग खूब खिलतो जणायो, मनुष्य मात्रना मनमां आनंद छाइ जतां ते रसबस दिलमय जणावा लाग्यां अने ए प्रसंगपर आवेला मानवोथी नागोर शहेर संकीर्ण थयेलुं मालम पडवा लाग्युं.

पंचांग शुद्धिवाळा सुमुहूर्त्त समय गुरुराजे चतुर्विध संघ समुदायसमक्ष उपाध्यायपद आपवाना विधि मुजब विधि अमलमां लइ उपाध्यायपदथी श्रीपार्श्वचंद्रजीने अलंकृत कर्या. व्हाला वांचनार! ए समयनो आनंद अनावधि हतो, जेथी ते समयना आनंदनुं वर्णन लेखकनी लेखिनी पण यथास्थितपणे करवा समर्थ थइ शकती नथी. केमके भाविकभक्तोना मनमां गुरुभक्तिना अचळ रागनो रंग लागेलो तेनी विशेष झगझगाटी थती निहाळतां आनंद वृद्धि पाम्या वगर केम रही शके ? नियमज छे के–मनपसंद वस्तुनी शोभामां वधारो थतां सर्वे जीवमां हर्षनो आवेश पेदा थाय छेज ! एथी

पाठकपदोत्सवमा भाग लेवा आवेलो संघसमुदाय पूज्य श्रीपार्श्वचंद्रजीनी पदवी–ख्याति–उन्नतिमा विशेष वधारो थता अत्यंत आनंदमग्न थइ रह्यो हतो, एटलुज नही पण पाठकपदोत्सवनी पर्णाहुती थया छता पोतपोताने घेर जवानुं पण तेने अणगमा भरेलु जणातु हतु; परंतु न छूटके गुरुदेवना चरण वंदी निज निज स्थानके जवा विदा थयो. अहा ! एज संघसमुदाय धन्यातिधन्य मनाय छे के जे देवगुरवादिनी शुद्ध भक्तिना आनदमा तल्लीन बनी रही व्यवहारिक कार्योनुं पण भान भूली बेसे छे ! शासनदेव ! एवा संघसमुदायनी सदा चडतीज करो अने तेवा आनंदीकल्याणी संघगणना सकळ विघ्न हरो ! अस्तु ! ! !

तदनतर पाठकजी श्रीपार्श्वचंद्रजी देश विदेशमा विहार करता तथा विविध ज्ञानतत्त्व सशोधन करता अने जपतपादिथी संयमधनने शोभावता नारकोट मेवाड वगेरे प्रदेशोना भव्यजीवोने प्रतिबोध आपी तेओए तेमना हृदयक्षेत्र अने पृथ्वीक्षेत्र ए बेउने पावन कर्या. पाठक श्रीपार्श्वचंद्रजीमा वाणीचातुरीनो अनुपम गुण हतो के जेणे एक वार मधुरवाणीनी देशना के वातचीत साभळी के गमे ते ज्ञातिनो अने गमे तेवा कटक मननो होय तथापि ते गुरुगुणानुरागी थतोज हतो. आम होवाथी केइक क्षत्रीओ, असुरो अने हिंसकोने पण धर्मरंग लगाडी अहिंसाधर्मपालक कर्या. तेमज मनीति मळे छे के बावन वीरने अने चोसठ योगियोने पण स्वधर्मसहायक वृत्तिनो

रंग पेदा कर्यो हतो. महत् पुरुषो देवोने पण हाथ करी ले तो एमां कंइ आश्चर्य थवा जेवुं नथी; केमके जेओ असत्यथी अलग, अडग ब्रह्मचर्यधारी, सर्व जीवोने अभयदान देनार, शत्रुमित्रने समदृष्टिथी जोनार, रत्नत्रयीना उपासक, लालच-क्रोध-मान-मायाथी रहित, गूढ ज्ञानतत्त्वनी गरिमाना ज्ञाता अने निरंतर उन्न-निक्रमनेज हाथ करनारी जप तप आदि क्रियाओना उपासी होय तेवा ज्ञानी ध्यानी तपीना देवो दास थइने रहे एमा नवाइज शी ?

प्रभावशालि पूज्य पाठकजी जिनाज्ञानुसार विहार करता, तथा शिष्यसंततीने वधारता अने जैनागमो-सिद्धांतो-सूत्रो-पंचांगी वगेरे पुष्कळ ग्रंथोना गहनभावने ध्यानमां लइ अनुभवता भव्य सुवर्ण सादृश भारत भूमीने पावन करवा लाग्या; परंतु ते समयमां जेनयति-साधुमंडळमा चाली रहेलो शिथिलाचार निहाळी

गुरुराजे कह्युं–"केटलाक समयथी बादशाहो तरफनुं आचार्योने बहुमान मळवाथी धीरे धीरे संयमधारियो पोताना क्रियाकांडमां शिथिलाचारी थता जाय छे. एसआरामधारी यवनेशोना विशेष परिचयने लीधे क्रियानुष्ठान कमी थइ सुखमां लीन थयेला संयमीओ पोतानो सत्यविषय विसरी विषयांतरमां मन दइ रहेला छे. नागपुरीय बृहत्तपगच्छाधिराज श्रीरत्नशेखरसूरीजीए फिरोजशाहने प्रतिबोधी स्वधर्मनो विजय वावटो फरकाव्यो हतो.

एटलेके सूरीश्वरे शहेनशाहना अंतःकरणनी अंदर प्रशंसवा लायक राज्यनीतिनी उंडी छाप वेसाडवा कह्युंके–" पादशाहोने, किब्ले आलम्! (जगतजनोने पवित्र थवा तीर्थरूप) जहांपनाह (जगतजनोनुं रक्षण करनार) खुदाविंद ! अने हझरत परवरदेगार वगेरे महान् इल्कावो (पद्वीओ) आपवामां आवे छे ते इल्कावो लायकी भर्या के न्याजनीपणे क्यारे कहेवाय के ज्यारे ते पोताने मळेल पदनो यथार्थ धर्म बजावे त्यारे !

बादशाहोनो धर्म एज छे के–पूर्ण इन्साफथी अमल चलावी रैयतने जोइये तेवुं सुख आपवुं. रहेम राखी प्राणी मात्रनी प्रसन्नता मेळववी. सारां कामो करी उत्तम नामना मेळववी. धर्म उपर श्रद्धा, कर्त्तव्य सावधानता, खबरदारी, दीर्घदृष्टि मळेली तकनो पूरतो लाभ लेवो, शौर्य, वैर्य, क्षमा, वचनपालकपणुं, सतसंग अने विवेक आदि

सद्‌गुणो दृढपणे धारवा अने तेओने पूर्णपणे अमलमां आणी अन्यने धडो लेवा योग्य वर्त्तन शीखववुं.

इन्साफ एनुं नाम छे के–लोकोमां समानता जाळवी राखवी मारुं तारुं न गणतां एक राहे रही अदल न्याय आपवो, दरेक वर्गनी तेनो पायरी प्रमाणे निगाहवानी राखवी, जेमनापर जुल्म थयो होय तेमने दाद आपवी, अने अहेसानरूप (जुल्मीओना जखमपर राहतरूपो) मलम लगाडवो.

मालिकनी बंदगी करतां इन्साफनुंफळ सातगणुं वधारे छे. केमके बंदगीनुं फळ तो बंदगी करनारानेज मळे छे अने इन्साफनुं फळ तो आखी रैयत वगेरे सर्वने मळे छे. अदल इन्साफनो सारो बदलो बेहद मळे छे. साठ वखत हज्ज कर्यानुंफळ घेर बेठे मेळववुं होय तो जेओनापर गेरइन्साफ थयो होय तेओने इन्साफ आपवाथी तथा तेवा गरीबोने दाद आपवामा जे कलाको नीकळे तेथी हाथ थाय छे. हझरत महंमद साहेबे पण कुराने शरीफमां फरमावेल छे के, सुलतानोने माटे एज योग्य कामनो बोजो छे के,–माणसोने इन्साफ आपवामां मशगुल रहेवुं तथा न्यायपूर्ण जींदगी भोगववी अने रैयत उपर न्यायथी रक्षण करवानी नजरथी जोवुं एनाथी बीजुं कंइ विशेप तेमने लायक नथी. न्यायवडे आखु विश्व तेजोमय थाय छे. न्यायनी महेकथी आखी दुनियां सुगंधित बने छे, अने न्यायथी वर्त्ततां तमाम मुरादो बर आवे छे. न्यायी

जनने सहु चहाय छे, अने जुलमीने दरेक जण धिक्कारे छे. इन्साफथी मुल्क मजबूत थाय छे. तथा ज्यांलगी पादशाहना पग इन्साफरूपी सतरंजीपर होय त्यांसुधी तेना शिरपर मोटाइनो ताज कायम रहे छे. न्यायी राजा ए प्रभुनी दयावृत्तिनी छायारूप छे. जेनामां न्याय छे तेज दयानी मूर्तिरूप मनाय छे. माटे न्यायी सुलताने पोताना छांयडातळे आखी सृष्टीने रहेवानी जगा आपवी के जेथी मळेली मोटाइ आस्मानपर आदर मेळवी शके छे.

मित्र तथा शत्रुने समान मानी ते बेउ जोडे मायाळुपणाथी वर्त्तवुं, रैयतपर रहेमनजर राखवी, दरेक काम विचिक्षण पुरुषनी सलाह लइ करवुं ए पण इन्साफ वृत्तिमांज समाय छे. इन्साफ आ दुनियां अने पेली दुनियामां मान अने सुख आपे छे. वैद्य अने पादशाह स्वभावमां सरखा होवा जोइये एटले के वैद्य, जेम दरदीनी पूरेपूरी हकीकत सांभळी ध्यानमां लइ तेनुं दर्द दूर थवा उत्तम इलाज आदरे छे, तेम पादशाहे दाद मागवा आवनारनी वात तमाम सांभळी ध्यान आपी तेनां दुःख दूर करवा योग्य रस्तो हाथ धरवो. ते रोगी के दाददार वधारे बोल बोल करे तोपण तेथी वैद्ये के पादशाहे कंटाळवुं नहीं, तेनापर गुस्सो लाववो नहीं, अने तेने ममताथी दिलासो आपी तुरत तेनुं दुःख निवारण करवा शोचवुं. पादशाहोना माथे एज जकात छे के फरियादीनी अरज ध्यान दइ सांभळी, तेनाथी सभ्यता साथ ममताथी वात करवी

अने गरीब जोडे वात करवाथी शरमावुं नहीं. पोताथी उतरती पंक्तिना माणसो साथे ममताथी वात करवी ए महानपुरुषोनो सद्गुण गणाय छे. गरीबोपर नेकनजर राखवाथी मोटाई वधे छे. दुःखी जननुं दुःख दूर करवुं, नासीपास थता होय तेमनी इच्छा पार पाडवी. रैयतना कामकाज भणी चोक्खुं मन राखवुं, तथा तेमनुं भलुं करवानोज निरंतर इरादो राखवो; केमके पादशाहोनी सारी इच्छा एज पोताना राज्यनी बरकत वधवानुं चिन्ह छे. खेती के बगीचामां रसकसनुं वधवुं घटवुं, अन्न वधारे थवुं के कमती थवुं, वरसाद आवशे के न आवशे अगर बरोबर न वरसशे, काळ पडशे के सुकाळ थशे अने रोग वधशे के शांति रहेशे-एओनी हानी वृद्धिनो आधार राज्यकर्त्ताओनी रैयतपर रहेती सारी नठारी विचारणा उपरज छे. माटेज न्यायीपणु ए सर्व सद्गुणोमां सर्वोत्कृष्ट छे. राजानी हमेशगी, मुल्कनो विस्तार, खजानानी भरपूरता, अने शहेर तथा कस्बाओनी आबादी पण न्यायथीज आबादपणु

दयारुपी दोलतनी पायमाली करनार छे. बादशाहो जोर जुल्मथी कोइनो माल खुंचावी ले छे के कर वेरा नाखी कोठार भरे छे ते बादशाहो दीवालोनो पायो खोदी अगासीने धोळवा जेवुं करे छे.

रैयत मूळ अने सुलतान वृक्ष छे. ज्यारे वृक्षनुं मूळ नबळुं पडे त्यारे वृक्ष पवनना पहेला सपाटेज जमीनदोस्त थाय छे. एज रीते जुल्म करनार पोतानांज मूळ खादनार मनाय छे. माटे जुल्मगारोने शोधी शोधी दूर करवा अने इन्साफतडे सर्वनी दुवा मेळववी.

बादशाहोनी बीजी फरज ए छे के–सर्व प्राणीपर दयाभाव अने रहेम नजर राखवी केमके कुदरते हाथतळेनी प्रजा ए एक अनामत सोंपेली छे तेने जाळवी राखवीज योग्य छे. ए अनामतना अंगे तेमने निश्चिंत राखी, तेमनी स्थिति सुधारवी, अधीरा बनेला-ओने दिलासो आपवो, दयावृत्ति बतावबी, जुल्मी पुरुषोना हुमलानी बलामांथी छोडवी बेफिकर 'राखवी, अने वारंवार तेमनी संभाळ लेवानी काळजी राखी तेमना सुखना उपायो शोधवा.

जो आपण बीजापर दया राखीशुं तो तेओ पण रहेमनीज नजर राखशे.

जे दयानो झुंडो उठावे छे ते पोतानुं अने बीजाओनुं काम फतेह करे छे अने जे दयाने लीधे श्रेष्ठ थयेल छे तेनापर नशीबनी नजर.सूधी थाय छे. आ दुनियानी सलामतीनो दयावृत्तिपरज आधार छे; माटे रैयतनी संभाळ राखवानुं कदी चूकवुं नहीं. हृदय

पीडित जनोपर कृपा राखी वर्त्तवुं. बापबेटाना जेवो नातो राजा प्रजा वच्चेनो छे जेथी ते प्रमाणेज घनिष्ट संबंध राखवो. आपणे स्हामाने क्षमा बक्षीशुं तो ते पण तेमज करशे, अने क्षमाथीज अदृश्यनु बारणुं उघडशे.

पादशाहोने ए शिकार करवो योग्य छे के रैयतना मननो शिकार करी तेमनां मन पोताने ताबे लेवां. रैयतनां दिल बादशाहनी आबादी भणी कायम थयां के बीजी बधी वस्तुओ तेनी पाछळज घसडाइ पोताने ताबे थाय छे. राजमहेलनो पायो मजबुत करवो होय तो रैयतनी पूर्ण ममता मेळवी ते केलवडे दृढता आपवी. रैयतनो प्रेम एज राज्यसत्ता जाळवनारुं जबरदस्त लश्कर छे. रैयतने जोइतां साधनो पूरां पाडवा माटे घटती योजना योजवी. तेमने पडती तकलीफो दूर करवा पूरतुं ध्यान देवुं, लांचीआ, तोफानी, जुल्मी, वडखोर, लुंटाराओ, चुगलीखोरो, जुठाओ वगेरेनां प्रपंचतंत्र बंध पाडवां.

मुल्कनी आबादी करवी होय तो रैयतनी आबादी जाळववी. पोताना खजाना करतां रैयतने वधारे कीमती खजानो मानवो, अने ते खजानो संभाळी राखवो; केमके खजानो कदी पण खूटी जशे, परंतु रैयतरूप खजानो प्रत्येक पळे नवुं नवुं धन उपजतां वाग खोली पूरुं पाडशे.

रैयतनी मुलाकात लेवा गुप्त दरबारो भरवा, तेने बोलवानी छूट आपवी, तेना पर पडती आफतोनी, लांचीआ जुल्मी अमलदारोथी

थता जुलमनी दाद मेळववा रुवरु वात सांभळी दिलासा भर्यो जवाब आपवो, दरबानो कोइ दाद मेळववनारने न रोकी शके तेवो सख्त बंदोबस्त राखवो, अने दरेक कचेरी दफतर वगेरे तरफ घणी बारीक नजर राखी सर्वनो उपर योग्य दाब राखवो.

जे पोताना उपर जवाबदारी छे ते बीजाने हाथ सोंपी निश्चितपणे एशाराममां पडवुं नहीं. जे शहेनशाह पोते जागतो रहे छे तेनी प्रजा निरांते उंघवा पामे छे, अने जे उंघमां मशगुल रहे छे तेनी प्रजा उजागराज वेठे छे; केमके तेवा राज्यकर्त्ताओना राज्यमां चोर जुल्मगार, लांचीआ वगेरेनुं जोर वधी पडी अंधेरनो अमल छवाइ रहे छे एटले पछी रैयत क्यांथी सुखे सूवा पामे ?

हकुमतना तख्त उपर बेसवुं स्हेलुं नथी; केमके ते जगानो अधिकारी थया पछी सेंकडो प्रकारनो सावधानीओ राखी वर्त्तवुं पडे छे, दुःखी गरीबजननी मुरादो बर लाववो पडे छे, निर्बळजनोपर रहेम राखवी पडे छे, अने जातजातनी जोखमदारी जवाबदारीओ जाळवी पोताना तथा प्रजाना हक्को अदा करवा पडे छे; कारण के न्यायना तख्तपर बेसी सत्य न्याय हाथ धरवो पडे छे.

सारां कामो करवा माटे पादशाहोनी ए फरज छे के- सदाव्रतो खोलवां, बेगुन्हेगार जानदारोना जान वचाववा, मुंगा प्राणीओपर गुजरतुं घातकीपणुं अटकाववुं, देवळ, मसजिदो, धर्म-

शाळाओ वगेरेनी सारवार रहेवानी बंदोबस्ती राखवी, कळाशाळाओ खोलवी, निशाळो मारफत विद्यानी वृद्धि करावी प्रजाने सारासार समजती बनाववी, निमाज पढवी, धर्मना कामोमां मदद आपवी, धर्मांधपणुं छोडवुं, नगरचर्चा जोवी, प्रमाणीक जासूसो मारफत प्रजाने पडता सुखदुःखना समाचार मेळववा, धर्ममां चुस्त रहे तेवी फरजियात धर्मनी तालीम आपवा तदबीर योजवी, अने पोते जाते दया, रहेम, न्याय वगेरेमां वर्ती तेनी सचोट असर प्रजामां फेलाववी.

तेमज धर्म उपर दृढ श्रद्धा राखी वर्त्तवुं. प्रत्येक कर्त्तव्यमां सावध रहेवुं, सुस्त न रहेतां ताकीदे पोताना राज्यधर्ममां तत्पर रहेवुं, दीर्घदृष्टि वापरवी, अने ज्यां जे गुण के फरजनी जरुर होय त्यां तेनो पूरतो उपयोग करवो.

बादशाहाओए प्रतिज्ञाभंग थवुं नहीं, विवेकमां खामी आववा देवी नहीं, सतसंगनो रंग लगावी सदाचारी थवुं, अने आ दुनियांनी मुसाफरी पूरी करी पेली दुनियामां गया पछी पण साधको लेखको, ग्रंथकारो अने दुनियां यादीमां राखी जयवाद वदे तेवा कार्यो करवां एज इन्साननी जींदगीनो सार छे. " इत्यादि इत्यादि उपदेशथी फिरोजशाह तग्लखे सारा बादशाह तरीके नीवडवानी पद्धती ग्रहण करी अने ते पद्धती वडे बादशाह थइ जता ते सूरीरा-

जनी बहु मान्यता वधारी तेमज खुद पोते आधीन रही तेमनो मरतबो अधिकतर वधार्यो.

बादशाहनुं बहु मान मळतां छतां पण ते सूरीशना अमलमां मुनिमंडळ उग्रविहारीपणामांज कायम रह्युं, तत्पश्चात् तेमने पाटे श्री हेमचंद्राचार्यजी थया ते पण महान् प्रभाविक हता; तथापि शहेनशाहना बहुमानना लीधे सहज क्रियानुष्ठानमां ढीला थवा लाग्या, अने तेमने पाटे हेमहंससूरीजी थयां ते पण यवनाधीशना सन्मान युक्त हता जेथी मर्हुम गच्छपतिना समयथी शिथिलाचारनुं रोपायलुं बीज अंकुर रूपथी पांदडादार थयुं जणायुं. एथी विशेषपणे आचारमां ढीला थया. ए कारणने लीधे-यथाराजा तथा प्रजा-न्यायानुसार पोतानो परिवार पण शिथिलाचारी थतो गयो, अने अत्यारलगण तेनोज चेप लागु रहेवाथी दिनप्रतिदिन शिथिलाचारमां उमेरो थतो रहेल छे. आम होवाथी घर करी बेठेलो शिथिलाचार दूर थवो ए अति कठीन छे. माटे समपरिणामवडे धर्मसाधना करी स्वात्मकल्याण करवुंज श्रेष्ठ छे."

गुरुराजना मुखारविंदथी आवी हकीकत जाणी उपाध्यायजीने अतीव उत्कंठा थइ आवीके 'उत्कृष्ट वैराग्यधारक थइ शिथिलाचार दूर थवा उद्यमी थवुंज योग्य छे.' एथी गुरुमहाराजने विनयपूर्वक वीनव्युं के-"जैनधर्मोन्नतिना अर्थे हुं क्रियाउद्धार करवानी अपेक्षा

मरावुं छु अने धारुं छुं के आपना प्रसादथी कार्यसिद्धि स्वाधीन करी जिनशासनो उद्योत वधारीश, अने शिथिलाचारनो मार्ग बंध पाडवानी उत्तम योजना योजीश; माटे आपनी आज्ञा थवानी जरुर छे." इत्यादि विचारणा जाणी तत्त्ववादस्वरूप गुरुराजे शिष्यनुं विद्यावळ-प्रभावबळ-मनोबळ अने पुन्यप्रबळता आदि ध्यानमां लइ आशीष साथ क्रियाउद्धार करवानी आज्ञा आपी श्री संघने ते संबंधी सूचना करी, एटले श्रीसंघना आगेवान गृहस्थोए अट्ठाइउत्सव शरु कर्यो.

दशवर्ष उपाध्यायपद शोभाव्या बाद संवत १५६४ नी अंदर प्रभाविक श्रीपार्श्वचंद्रजी क्रियाउद्धार माटे तत्पर थया; कारण के जिनेंद्र भाषितवाणि मुजब क्रियाओमां थयेली मंदता निहाळी ते चतुर्विध संघमाथी दूर करवा अर्थात् भगवतनी आणाविरुद्ध क्रियानो अंत आणवा (जैनागमानुसार मार्ग प्रवर्त्तावया) हिम्मत पूर्वक दृढ विचारवंत थया. ए जाणी संघसमुदाय अपरिमित हर्षवडे महोत्सवमां जोडायो अने नागोर नगरमाज गुरराजे मुकर करेला दिवसे अपार धामधूम साथे क्रियाउद्धारनी क्रियामां तल्लीन रह्यो— अर्थात् आठ दिवस जीवदया पळावी, अतिथि याचकोने दान मान थी संतोषी गीत-वाद्य-नाट्य आदिथी देवगुरुनी श्रद्धापूर्वक भक्ति साचवी ल्हाव लीधो.

निग्रंथ—त्यागी थया पछी मुनि महाराज श्रीपार्श्वचंद्रजी नव कल्पी विहार करता तथा पंच सुमतिसुमता अने त्रण गुप्तिगुप्ता युक्त मुनिमार्ग मुजब बाविश परिसह सहन करता अमतिबद्धपणे विचरता भवि जीवोने मतिबोध आपी शिथिलाचारने दूर करवा लाग्या.

नागोरथी विचरता जोधपुर समीप आवी पहोंच्या अने ते वातनी श्री संघने जाण थतां अति आडंबर पूर्वक निग्रंथ गुरुने वीनती करी शहेरमां पधराव्या केमके गुरुराजना उपदेश विना कदि पण कोइनो उद्धार थइ शकतो नथी.

गुरुराजनी मधुरी शुद्ध वाणिनी मशंसा शहेरमां विस्तरी अने ते कुंवरश्री मालदेवजीना कान लगी जइ पहोंची जेथी श्रीसंघने सूचना अपावी पोते पण व्याख्यान श्रवण करवा उपाश्रयनी अंदर पधार्या अने विनयपूर्वक गुरु वंदन करी ते धर्मदेशना सांभळवा विराज्या.

वांचनार! दरेक काम सिद्ध करवानी जो साची इच्छा होय तो ते समयनी अनुकूळताज छे. समयनी अनुकूळता मळतां पछी विलंबने आदर आपवो नहीं; केमके तकने आगळ वाळ छे, पण पाछळ टाल छे जेथी आवती तक पकडी लीधी तो बेडो पार थाय छे. जो आवेली तक जवा दइ पाछळथी तेने हाथ करवा जइये तो

ते पछी टाळना लीधे पकडवानुं साधन हाथ न लागवाथी छेक छटकीज जाय छे. जे घडी चाले छे तेनापर आपणो हक छे, पण आवनारी तक उपर आपणो हक नथी; केमके ते तक आपणी थशे एवो कंइ आ क्षणभंगुर संसारनी वार्तानो भरोंसो नथी, माटे हाथ आवेला समयने काबुमां राखी तेनो उपयोग करी लइ कार्यसिद्धिनुं रहस्य मेळववुं एज सर्वोत्तम डहापण छे.

सूरीश्वरजी अवसरना जाण होवाथी पाटवी कुमारश्रीना अंतरमां सदनंतर राज्यनीतिनी उंडी लागणीवाळी छाप कायम रहे तेवो उपदेश देवो शरु करी फरमाव्या के—"आ संसारनी अंदर सार रुप मानव जन्म मेळवी एज वस्तु संपादन करवानी जरुर छे के सद्धर्मने ओळखी, तेनां तत्त्वो सद्दही पाळी उत्तम जन्मने धन्याति धन्य करवो. यांनी मुंठीए आवी खाली हाथे आ फानी दुनीयांनी शरायमांथी कूच करवुं ए तद्दन गेरव्याजवी छे. आवती वखते खर्ची लावेली ते खर्चाइ जतां फरी नवी पुन्य-खर्ची मेळववी अने ते पछी मुसाफरीने लंबाववी एज वहेतर नियम छे.

आवो मानवधर्म छे तथापि ते मानवोने धर्ममां कायम करवा के कायम रहेवा देवा ए राजाओनाज हाथमां छे. कोइपण कोम पोताना उत्तम धर्मथी भ्रष्ट थती राजानी जाणमां आवे तो तेने योग्य समजुत आपवामां आवे, छतां पण तेथी स्वधर्मनी दरकार न राखे तो तेने कायदाना फरमान मुजब सजाने पात्र करी जाग्रती

बतावे. केमके कायदो एज माणसोने सारी नीति रीति प्रीतिमां प्रवर्त्तवानो, अनीतिथी अलग थवानो, धर्म कर्ममां सावध रहेवानो अने व्यवहार आदि बाबतोने मान आपवानो मार्ग बतावनार छे. एटलुंज नहीं पण ते कायदानाज भयथी इलायदा मार्ग न आदरतां वायदा वगर अंकुशतळे आवी उत्तम फायदा उठावे छे अने तेथी मानव मान्यवंत मनाय छे. अंधेरी कारोबारवाळा राज्यमां पण कायदा तो होय छे; परंतु ते नालायक बंधारणना होवाथी कदर विना काममां आवे छे.

भरवाडना हाथमां पारसमणि आववाथी बकरीना कोटमां लटकावे छे, मूर्खने हाथ चिंतामणि रत्न आववाथी कागडो उडाडवामां तेनो उपयोग करे छे, भीलडीने हाथ हीरो जवाथी तेने चणोठीना हारमां जगा आपे छे, अने गमार व्यापारीने हाथ कोहीनूर चडवाथी तेने प्रसंग वखते काममां लेछे. वस्तुनी कीमत कीमतदारना हाथेज थइ शके छे. कह्युं छे के—

(इंद्रविजय छंद.)

उत्तम छे पण श्या उपयोगनि आरसी अंध अगाडि कहोने ?
उत्तम छे पण श्या उपयोगनि सुंदरि पंढ अगाडि कहोने ?
उत्तम छे पण श्या उपयोगनि मूर्ख अगाडि सुबोधि कहोने ?
उत्तम छे पण श्या उपयोगनि वीन वधीर अगाडि कहोने ?

कहेवानो भावार्थ एज के उत्तम कायदो छतां अन्यायि राजना अगाडी ते श्या उपयोगनो गणाय ? शस्त्र शूरवीरना हाथमां, माला संत पुरुषना हाथमां, ताजुडी वाणिज्यकारना हाथमां, अने कंकण सुंदर सुंदरिना हाथमांज शोभा आपे छे.

(इंद्रविजय छंद.)

भामिनिनुं वरभूषण एज सदाय सुशीलवडे सुख आपे,
भूपतिनुं वरभूषण एज हितावह न्याय सदा स्थिर स्थापे;
श्रीपतिनुं वरभूषण एज हमेश दुखीजनना दुख कापे,
धिपतिनुं वरभूषण एज अधर्म अनीति अलीक उथापे ॥१॥

प्रिय युवराजपदाधिकारी ! उत्तम राज्यकर्तानां एज सुचिन्हो छे केः–

(गाथा)

शठदमनम शठपालन–माश्रितभरणंच राजचिन्हानि;
अभिषेकपट्टबंधो वालव्यजनं व्रणस्यापि   २

एटले के मूर्ख–तोफानी–अन्यायी–अधम जनोने सताववा-वश करवा–शिक्षाने पात्र करवा, तथा पंडित कलाधारी जनोने आदर आपी तेमनुं पालनपोषण करवु अने आश्रितजनोना निर्वाह निमित्त उत्तम संस्थाओ खोल्वी. आ त्रण राजचिन्ह छे. नहीं के

राज्याभिशेक, राजपट्ट अने चामर वींझावां ए त्रण राजचिन्ह छे. जो ए त्रण चिन्होथी राजा थयेल मनाय तेम होय तो गुंवडुं, चांदी के घाने पण ए त्रणे चिन्ह मौजूद होय छे, एटले ते त्रण उपर पाणीनो अभिशेक थाय छे, पाटो पण बंधाय छे अने माखीओ उडाडवा चमरी पण विंझाय छे. तो शुं तेने राजचिन्हधारी न कहेवुं ? श्लेषार्थ एज के जो ए त्रण चिन्ह युक्त राजा थइ सुखदायी न निवडयो तो ते दुःखदायी गुंबडा जेवोज गणवो योग्य छे, केमके ते ते चिन्होमां सरखापणुंज धरावे छे.

बीजुं राजचिन्ह ए छे के करेली पतिज्ञा पूर्णपणे पाळवी कह्युं छे के—

(छप्पय छंद.)

वचनपाळ ते राय बाकी छे रांडीरांडो,
वचनपाळ ते राय बाकी छे गयवरगांडो,
वचनपाळ ते राय बाकी छे पंढ सरीखा,
वचनपाळ ते राय बाकी छे कांटा तीखा,
वचन न पाळे जे कदि तेने नरपति नवगणो,
शूळ समानज लागशे ए सहुने अळखामणो. १

तेमज राजामां एवी नीति होवीज जोइए के ते, धर्मात्मा, प्रजापालनमां तत्पर, शत्रुओनुं मानमर्दनारो, मेघनी पेठे जीवनदाता,

सुपात्रने इच्छित दान आपनारो, गुणीओपर प्रीति राखनारो, परिजनोनी साथे सुख भोगवाळो, अभिप्राय समजवानी शक्ति धरावनारो, रणधीर, जनपरीक्षक, समयसूचक, दृढनिश्चयवंत, दुष्टोनो दर्प दळनारो, दक्ष, विचक्षण, लक्षवंत, सर्वकार्यमां सावधान, कार्यकुशळ, किल्ला बांधवामां-व्यूह गोठववामां-मंत्रभेद-युद्धभेद-राजप्रपंच तथा वाक्यभेद वगेरेमां प्रवीण, निडर, परनारी सहोदर दुष्ट व्यसनोथी दूर रहेनार, सतसंगी, कदरदान, चतुर, कळाओनो ज्ञाता, काव्यशक्तिवंत, विद्याविलासी अने स्वधर्मचुस्त आदि गुणोथी अलंकृत होइ सारा कुळवान कार्यदक्ष गुप्तभेदज्ञाता अने राजभक्त प्रधान, शास्त्र-धर्म-सत्यना जाण तथा समदर्शी सभासदो जप-तप-वेदांगादिमां प्रवीण पुरोहित, दीर्घदर्शी-बारीक तपासवत न्याय तोलनार तथा अपक्षपाती न्यायाधिकारी, सारा स्वभाववाळो देखावडो तथा आयुर्वेदनो पूर्णजाण राजवैद्य, शूरवीर-धीर-अर्थशास्त्रसंपन्न-शस्त्रविद्यामां कुशळ-युद्धचतुर-स्वामीनो आज्ञानुगामी लोकप्रिय अने चतुरंग सेनानी योजना जाणनार सेनापति, सद्गुणी कवि पंडितो, निमकहलाल नोकरो, वीरतावंत दृढ लस्कर, अने स्वामीभक्त सामंतादियुक्त होवो जोइये. तेमज उखेडेलाओने पाछो वावतो, पुष्पित थयेलाओने वीणतो, न्हानाओने वधारतो, बहु उंचाओने नमावतो, नमेलाओने उंचा करतो, मळेलाओने जुदा करतो, कंटकोवाळा क्षुद्रोने बहार कहाडतो, अने ग्लानि पा[illegible]ओने

पाणी पातो एवो माळीनी पेठे प्रयोगकुशळ राजा होवोज जोइए. अने सारा पासवानोथी, उत्तम सलाहकारोथी, पूर्णभक्त अने वीर अंगरक्षकोथी, आज्ञाशील राणीओथी, तारक गुरुओथी, हितकारी ब्राह्मणोथी, अने विवेकशील नोकर चाकरोथी संपन्न (राजा) होय तो अवश्य ससार स्वर्गनी स्पर्द्धा करनार मालुम पडे छे. माटे तेवा गुणशाळी राजाओ पृथ्वीने धर्म–नीति–धन–धान्य–सुख अने शोभामय बनावे छे.

राजाओनो जे धर्म तेज प्रजानो धर्म होय छे–एटले के जो राजा धर्माधिकारी होय तो प्रजा पण धर्माधिकारिणीज होय छे, अने जो राजा अधर्मात्मा होय तो प्रजा धर्मांकुरवाळी होवा छतां पण जोर जुल्मनी प्रबळताथी के देखादेखीथी अधर्मात्माज बनती जणाय छे. एथीज "यथा राजा तथा प्रजा" आ महावाक्य स्पष्ट सूचवी रहेल छे के जेवो राजा तेवोज प्रजा होय छेज.

कहेवानु तात्पर्य एज के राजाए एवा सद्‌गुणो युक्त राजचिन्होने दीपावी, तथा मानवोए मानवधर्म अंगीकार करी जन्मने शोभावी पोतानी यशाळी कारकीर्दी दिगंत लगी प्रकाशमा लावी इतिहासपत्रमा सुवर्णाक्षर संयुक्त स्थायी थवा अवश्य यत्न आदरवा ज योग्य छे के जेथी उभय जन्म सफळताने भेटे छे, पाप ताप मेटे ळे अने दुःख दोहग दुर्गति छेटे भागी लेटी जाय छे." इत्यादि इत्यादि उत्तमोत्तम रहस्यगम्य वाणी श्रवण करावी.

ए विशुद्ध व्याख्यानरूप अमृतधाराना प्रभाववडे श्रोतागणना मनरुप क्षेत्रमां एवी असर थइ के शुद्ध धर्मना क्रियाअंकुरो स्फुरायमान थइ आव्या. पोतपोतानो जातिधर्म छोडी जैनधर्मनी शुद्ध क्रिया अंगीकार करी अने जेना तेना मनमां दान शील तप भावनानो निवास थइ उत्तम जीवोनी गणनाना भागी थया. हर हमेशां व्रत जप तप भावना भक्ति वडे थवा लाग्यां, चतुर्विध संघ शिथिलाचारनो तिरस्कार करी शुद्धाचारमां प्रवर्त्तवा लाग्यो, अने अहिंसामय धर्मनी प्रभा प्रसरतां जैनमय शहेर थयुं जणायुं.

अनन्य छटा भरी देशनानो लाभ लेवा मरुधराधीश रावगां गाजी अने युवराज मालदेवजी वारंवार आववा उत्साही थया जोइ अन्य प्रजावर्ग पण अत्यंत उत्साहवंत थतो मालम पड्यो. चोथा आरानी आभासता पांचमा आरामां दृष्टिगोचर थवा लागी अने शुभ गति आरधक मार्गे परवरी अनेक जीवो पापमुक्त थइ उत्तम गतिना संगी थवाना साधक थया.

आ प्रमाणे अविच्छिन्न आनंद वर्त्ताइ रह्यो हतो, दरम्यान पूज्यजी विहारविचार अमलमां आणवा तत्पर थया ए जाणी सकल संघसमुदाय अति आतुर बनी गुरुराजने विनति करी के—
" प्रभो ! आपने तो ज्यां त्यां पुण्यनी खेती करी सद्गति फळनेज हाथ करवानो व्यापार छे ! तो हे तरणतारण तपोधनजी ! चातुर्मासनो समय नजदीक आव्यो छे माटे आपश्री अहियांज वस्तिमां

चसी अमो पामर प्राणियोने ते व्यापारनो लाभ आपी सुदशावंत करो ! हे दयाळु नाथ ! अनाथनो हाथ पकडी सनाथ करी भव पाथथी पार थवा साचा संगाथी थाओ !

कृपाळु ! आ संघ एज इच्छेछे के–' तुं अनुभव रस देवा समरथ, हुं पण अर्थी तेनो; चित्त वित्तने पात्र संयोगे, अजर रह्यो हवे केनो ? प्रभुजी महेर करीने आज काज अमारां सारो ! '

आ प्रमाणे श्रीसंघनी विनती श्रवण करी निर्ग्रंथ पाठकश्री त्यांज चातुर्मास करवानो निश्चय करी धर्मव्यापारनी उन्नतिना उपाय हाथ धरवामां दीर्घदर्शि थया. तथा पर्यूषणा पर्व आदि उत्तमोत्तम दिवसोनी अंदर समयोचित्त जिनवाणीसुधाथी श्रीसंघनां शरीर अने मन नवपल्लव करी अपूर्व सुदशानां भोक्ता बनाव्यां.

जो व्याधिनी व्यथा वीताडती होय, तो ते समय अमूल्य औषधनो उपयोग करवानी आवश्यकताज छे; पण ते दर्द दूर थये दवानी जरूर रहेती नथी. जो कष्ट पडे तो तुरत सहायकनी सहायता लेवानी होय छे; पण कष्टनुं कासल नीकळी गया पछी ते सहायकनी सहायता मागवी ते केवळ अविनयवाळी रीति मनाय छे. मतलब के कंइ कारणने लीधे मर्यादाने मान साथे सहेज वखत माफी आपवा समर्थ पूर्वाचार्योने फरज पडी होय ते समयना कारणनी समाप्ति थतां पुनः ते मर्यादाने असल स्वरूपे अचळ करवीज योग्य

छे. इत्यादि विनाने ध्यानमां लइ भाद्रवा सुदी चोथनी संवत्सरीने निरुपयोगी मानी श्री जिनवरप्ररूपित पाचमनी संवत्सरीने स्वीकारी लावा वखतनी चालती अंधरुढीनो अंत आणवा उद्यम आदर्यो. तेवीज बीजी पण केटलीक अयोग्य बाबतो के जे फेरफार थइ गइ हती ते बाबतोने प्रभुप्रणित सूत्रानुसारी बनावा बाहोशता बतावी उपकारी गुरुए अंधरूढीने टाळवा अच्छी महेनत लीधी. तेमज समस्त संघ पण ते गुरुराजनी वाणीने समज पूर्वक अंगीकार करी स्वात्माने अहोभाग्यवान मानवा माड्यो.

गच्छभेदनी तकरारना उपासकोए त्यागी गुरुनी दिनप्रतिदिन उन्नति थति निहाळी इर्षाने पोषवी शरु करी अने अंधरुढीने जेमनी तेम रहेवा देवा अनेक यत्न आदरी वादविवादना मार्ग हाथ धर्या, तथापि ममत्वपटलना रोग रहित नेत्रवाळा भाविको मतमतांतरना वादमा मन न देता भगवद् भाषित फरमाननेज आदर आपवा लाग्या. (ते अद्यापि लगण आदर अपाय छे.)

हमेशनो परपराज छे के– प्रतिस्पर्द्धियो रदिपण सद्भावनाथी प्रतिपक्षियोनो विजय इच्छेज नहीं. तेमज सारी वात होय अने तेमनुं मन पूर्ण साक्षी पूरतु होय, छता पण वचननी विरुद्धतानो अंत आणताज नथी !

सदा भक्तनुं जगत शत्रु रहेतुज आवेल छे. प्रकृतिप्रतिकूळ वस्तुनी निंदा करवी ए छिद्रगवेषी लोकोनो नित्यनियम होय छे.

पोतपोतानी इच्छा मुजबना पदार्थोज प्रिय लागे ए स्वाभाविक रीति छे—

मक्षिकाः क्षतमिच्छंति, शांतिमिच्छंति सज्जनाः
अधमा धनमिच्छंति, मानमिच्छंति पंडिताः !

माखीने अनेक मिष्ट पदार्थो हाजर होय, छतां जो जखम वगेरे चांदां चांदींनुं दर्शन थाय तो तेमाना परुपानथी पिंडपोषवामांज पूर्ण आनंद मळे छे. सारा पुरुषो अशांतिनो ओघ हाजर रहेल होय छतां तेओ निरंतर शांतिनोज मार्ग हाथ धरवा उत्कट इच्छा धरावे छे. अधमजनो हमेशां पोताना गुजरान योग्य खोराक वगेरे हाजर होय छतां—'कोइने मारी कोइने कापी, स्वार्थ साधवो पडेलो; नीतिनिपुणनी कारीगिरीमां, मारग सरळ ने रहेलो' एज सिद्धांतने कंठमणि गणि ले छे. पंडितोने सरस्वतिनी प्रसादिनुं मान हाजरज होय छे; तथापि जनसमुदायनुं सन्मान मेळववानी इच्छाने ओळग्याज करे छे ए पोताना मनना विकारोनोज महिमा छे! कमळाना रोगीने अंतरमां रहेला विकारनी प्रबळतावडे जगतभरनी वस्तु मात्र पीळा रंगनीज भासे अने धंतुराना मदवाळा जनने अंतरमां रहेली केफी खासियतना लीधे सर्वत्र सुवर्णनो भ्रम थाय ए पोतानाज विकारनी प्रबळता छे !

प्रियपाठक परिषद् ! विपक्षिवर्ग बळवत्तर छता पण सत्यनो सदा विजय होय छे एज उत्तम वाक्य स्वयमेव प्रतीति आपी रहेतुं हतुं.

ज्यारे पोतानी धारेली धारणा सफळ थती जणाइ त्यारे पोते अति आनंद मानी क्रियानुष्ठाननो क्रम विशेषता साथ भूमंडळनी अंदर कायम करवा निमग्न थया. दरम्यान अनुरागी जनमंडळनी एवी उत्कट इच्छा थइ आवी के गुरुराज सूरीपदने शोभावा सर्वांगे लायक छे माटे तेज पद अंगीकार करवा श्रीसंघे अने खूद जोधपुराधीशे सहर्ष प्रदर्शित करवा विनती करी. तेमज भव्यिमनमबोधक प्रभाकर श्री साधूरत्न गच्छेशने अने अन्य विद्वान् साधूगण, प्रवर पंडितोने विनतीपूर्वक जोधपुर पधारी सूरीपदोत्सव दीपाववा-विनतीपत्र लख्या. आम होवाने लीधे भविकोना भावनी धारा अखंडित राखवा निमित्त तेओ पूज्यपाद आचार्यश्रीजी जोधपुर पधार्या अने तेमणे जैनोन्नतिना कारणोने ध्यानमां लइ आचार्यपदनु मुहूर्त निरधारी अट्ठाइ उत्सव शरु करवानी श्रीसंघने आज्ञा आपी अने उपाध्यायश्रीने सूरिमंत्रनी आम्नाय आपी तेना तप अने ध्यान विधि पूर्वक करावा शरू कर्या

जोधपुरना श्रीसंघे तथा अन्य स्थळथी पधारेला भाविकगणे उत्सवनी तमाम क्रियाओमा मन दइ सर्व विधि युक्त रीते अमलमा

आव्यो अने अत्यंत आडंबर, आनंद तथा भाव सहित १८६५ ना वर्षमां पंचांग शुद्धि भर्या उत्तमोत्तम मुहूर्त्त समय पवित्र स्थळ उपर सूरिपदनो विधि अनुभव्यो. चतुर्विध संघमां आनंद आनंद वर्त्तायो जय जय शब्द ध्वनिथी गगन गाजी रह्युं, प्रेक्षकोना हैयामांथी हर्ष उभराइ जतो दृष्टिगोचर थवा लाग्यो, अने प्रतिपक्षिरूप जवासाओ आ आनंदवृष्टिथी शुष्कदशाने भेटता जणाया.

तत्पश्चात् छत्रीश गुणधारक श्रीनागपुरीय वृहद् तपगच्छपति भट्टारक सम्र श्रीयुत पार्श्वचंद्रसूरीजी विजयवंत थइ वादीरूप अंध जनोने शुद्ध ज्ञानांजनद्वारा अभ्यंतर ज्योति प्रकटावता, उग्रविहारना नियमोने अमलमां आणता, उग्र तपस्यादि करता पीपाड थइ मेडते पधार्या. त्यांना हार्दिक प्रेमवाळां जनोने गुरुश्रीए सद्बोध आ शुद्ध क्रियानुष्ठान दर्शावी, तेमज तेनुं पालन करावी पछी फलोधी पार्श्वनाथजीनी यात्रा करवा पधार्या. त्या वामानंदन भवभयनिकंदन श्रीपार्श्वप्रभोने वंदी श्रीपार्श्वचंद्रसूरिजी अहो भाग्य मानवा लाग्या. त्यांथी विहार करी रूणग्राम के जे भयहर भैरवना प्रतापथी प्रसिद्ध छे ते स्थळे पधार्या.

मानवाने कारण मळे छे के, सत्य क्रियानुष्ठानवाला अने उग्र तपवान् प्रभाविक पुरुषोनां पदवंदन करवा उत्तम देवो पण इच्छा धरावे छे अने तेज इच्छा सफळ थयेली ते स्थळमां दृष्टिगोचर थइ. खास क्षेत्रपति-भैरववीरे तो गुरुजीना चरणमांज रही श्री

संघनां विघ्न दूर करवानी विना स्वकारी लीघी, एटलुज नहीं पण ते अद्यापि पर्यंत पोताना पवित्रगणना विघ्न विदारवा सानिध्य रहेल छे एवी प्रतीति मळे छे.

तदनंतर जिनशासननी उन्नत्ति करता, शुद्धक्रियाकाडने अमलमा लावता अने हलवा कर्मीओनो उद्धार करता केटलोक समय लाभनुं कारण लक्षमां लइ पूज्यजीए त्यां मासकल्प कर्यो. ते समय त्यांना वतनी ओशवाळ वाहडदेव अने पतिव्रता चापलदेवीनो सपूत पुत्र के जे गर्भावस्थायीज उत्तम स्वप्न अने उत्तम समयना दर्शन करावनारो हतो ते वरदराज नव वर्षनी बाल्यावस्थामाज सूरीश्वरजीनी कर्म मर्मभेदक मधुर वाणि साभळी ससारना क्षणिक सुखथी उद्विग्नचित्तवंत थइ-वैराग्यनो आराधक पाच महाव्रत रूप थयो, अने मातापितानी अनुमति मेळवी ते पुन्यात्मन श्री पूज्यजीना चरणमां आवी हे पतितपावन ! मारा जेवा पतितने पावन करवाथी, तथा अशरण शरण ! मारा सरखा शरणरहितने शरण आपवाथी, तेमज अधमउद्धारण ! मारा समान अधमने उद्धारवाथी, अने दीनदयाळ ! मारा सरखा दीनपर दया देखाडवाथीज ए यथा विरुद शोभाने भजशे. हे तरण तारण गुरुदेव ! आ भयभरित भवसतापना असह्य तापथी सतप्त थयेला भवभीरुने अभयपद आपनारा अणगारमार्गनो अधिकारी करी स्थायी शीतळतानो भागी बनावो ! प्रभो ! बूडतानी बाथ

झालवी एज दयार्द्रचित्तनी शोभा छे ! कृपालु ! हवे अविलंबे मन पोतानो करी लइ आनंद अर्पो ! " इत्यादि दीनवाणी श्रवण करी गुरुवर्य्य ज्ञानोपयोग अने जिज्ञासुनां सामुद्रिक चिन्होवडे उद्योतकारक आत्मा जाणी ते हलुकर्मी वरदराजने महोत्सवपूर्वक दिक्षा आपी विजयदेवमुनि नाम राख्युं. ए समयनो लाभ लइ श्री संघ समुदाय आत्यानंद पाम्यो अने देवगुरुनी भक्तिमां तल्लीन बनी गुरुगुणगाइ मानवभवनो ल्हाव लेवा लाग्यो.

तदनंतर विहार करी शिष्य सह पूज्यश्रीनां नागोर शहेरमां पावन पगलां थयां. ते स्थळनी अंदर चतुर्विध संघने उपद्रव करता वीरमंडळने योग उपासनाना बळथी प्रतिबोधी तावेकरी उपद्रवनो अंत करी पूज्यजीए एक वितंडावादी योगिनिने वादमां जीती. जेथी त्यां घणा क्षत्री वीरोए श्रावकधर्मने महामान्यपूर्वक अखत्यार कर्यो, अने श्रावक श्राविकागण दृढश्रद्धानुरागी थतां श्रेयस्कर क्रियानुष्ठान आदरी कर्ममर्मना मर्मने भांगवा लाग्यो.

श्री संघना आत्याग्रहथी ते सालनुं चोमासुं त्यांज करी चोथा आरानी यादी अणावी अने कनकावली तप करी आचार्य महाराजे जपतपनुं महात्म्य प्रसिद्धिमां आण्युं. ते स्थळनी अंदर लोंकाशाह नामना गृहस्थ स्थानिकवासि (मूर्तिउथापक) नो मत स्थापनार भगीरथ यत्न आदरी रहेल होवाथी सूरिजीए तेमने जैनसिद्धांतोनो

रहस्य समजावा पुष्कळ प्रयत्न अमलमां लीधो. तथापि मतानुरागी महाशये एक पण महावाक्यने मान्न आप्युं नहि. पण तेमना सात शिष्योए ते वाक्योने मान आपी सूरीजीना शिष्य थइ शुद्धक्रियानुष्ठान अंगीकार कर्युं.

चोमासुं पूर्ण थये त्यांना वतनी ओसवाळ हेमराजजीए वैराग्य रंगमां रंजित थये सूरींद्रजीना हस्तथी दीक्षाग्रहण करी. त्यार बाद शिष्यसंतती सह नवकल्पी विहार करता सूरीश बीकानेर पधार्या. अने त्यां बेसुमार भविजीवोने शुद्ध क्रियामार्गमां स्थिर करी अल्प संसारी बनाव्या. त्यां कर्मसूदन तपनी सरुआत करी, तदनंतर जेसलमेर पधारी जेसलमेरना प्राचीन ज्ञानभंडारमांथी अभिनव सिद्धांत-सूत्र-प्रकरण आदि ग्रंथो जोइ अपार ज्ञान संपादन करी त्यांथी पूज्यजी पोकरण फलोदि भणी थइ जोधपुर शहेर समीप पधार्या. ज्यारे सूरींद्रजी पधार्यानी श्रावकोने अने गुरु जोधाणनायने जाण थइ के अत्यंत आडंबर पूर्वक पुरप्रवेशमहोत्सव करी गुरुराजने उपाश्रयमां पधराव्या. त्यां वर्धमान तप प्रारंभ्यो अने त्यां केटलाक दिवस स्थिरता करी सुबोधवडे अनेक जीवोनो उपकार कर्यो. बाद गुरुवर्य जालोर पधार्या. अल्प समय त्यां व्यतीत करी आहोर वगेरे ग्रामानुग्राम पावन करता अनेक क्षत्री वीरोने प्रतिबोधता तथा सिद्धांतानुसार शुद्ध क्रियानुष्ठाननुं शिक्षण देता गोड्वाड प्रदेशांतर्गत पंचतीर्थीनी यात्रा करवा पधार्या.

प्रथम अर्बुदाचळ उपरनां पवित्र, जगजाहेर जिनालयोने जुहारी हमीरपुरनी स्पर्शना करी, न्हानी पंचतीर्थीनी यात्रा करी साचो तरफ पधारी जीवितस्वामीने जुहारी वाव थराद पधार्या अने त्य पुष्कळ श्रावकोने प्रतिबोधी अणहिलपुर पाटण पधारी प्राचीन जिन प्रासादोमां बिराजता श्रीजिनवरोने वांद्या.

पाटणनी अंदर महातमा जतियोनुं विशेप जोर हतुं. तेओ पूज्यजीना पधारवाथी पोतानी बुद्धिनो अवळो उपयोग आदर्यो इतरडी के जळो दूधथी पुष्ट थनेला आंचळो विद्यमान होवा छत पण ते दूधने त्यजी रुधिरनेज पीए छे ए तेमनो जातिस्वभाव छे. दुष्टजनो पण पोतानी आजीविका के स्वार्थने धक्को पहोचवाना भयथी उत्तम महात्माओनी सेवा मळवानो समय हाजर छतां तेओनी तरफ दुष्टता बतावे ए पण तेमनो जातीस्वभावज छे.

धूर्त्तताबडे धंध मचावनारा ढोंगी गुरुओ साचा गुरुना पधारवाथी पोतानां पोक्ळ खुलतां आजीविका बंध पडवानी व्हीक लागवाथी पूज्यजीने चोड पण प्रकारे परलोकनो पंथ पकडाववा फांफां मारवा लागी साधेला वीरोने ललकार्या. परतु वीरो तो पूज्यजीना उपासक होवाने लीधे अने भैरवना संरक्षण तथा योग-बळना तेजने लीधे विघ्नने बदले चरणसेवना करवामां रोकाइ रह्या, अने पोताना पिंडना पापथी पोताना साधक महातमाओनुं अनिष्ट थवानी मतिने पोषवा लाग्या. परंतु तेम करता वीरोने अटकावी महातमा-

ओने अभयदान वक्षुं. शत्रुओनुं भलुं करवुं एज शांत सधीर सत्त-मजनोनुं कर्त्तव्य कर्म छे. !

आम थवाथी पाटणमां पूज्यश्रीजीनी पुष्कळ प्रख्याती प्रसरी अने बेसुमार जनो जोवा आवतां तेओने प्रतिबोधी दृढतर श्रावक-धर्मि कर्या; तथा अन्य मतावलंबीओनुं दुष्ट मानमर्दी आचार्यजी राधनपुर पधार्या. ते स्थळे हिंदु मुसलमानो वच्चे चालतो लांबा वखतनो कु-संप क्लेश निवारी सघ सजाग्री परम विवेकी बोध आपी विहार करवा तत्पर थया पण श्रीसंघनी अत्याग्रह पूर्वक वीनती थवाने लीधे ६७ नुं चोमासु त्यांज कर्युं.

चातुर्मास थया बाद विहार करी कच्छ-देश भणी विहार करता करता भचौ पधार्या. भचौमां अनेक मिथ्यात्वी अन्य दर्श-नियोने प्रतिबोधी श्रावक कर्या. शुद्ध क्रियानुष्ठान बतावी वीतराग प्रणीत धर्म प्रवर्तावी विहार कर्यो.

अंजारे, भद्रेश्वर, मुद्रा, माडवी, भुज वगेरे ग्रामानुग्राम वि-चरी शिथिलाचार दूर करी शुद्धाचारमां स्थिर करता करता गुर्ज-राज काठियावाड भणी पधार्या अने मोरवी, वांकानेर, जामनगर वगेरे शहेरोमां शुद्ध क्रियानुष्ठाननो विवेचन पूर्वक प्रतिबोध आपता राजकोट थइ जुनागढ पधार्या. त्यां गिरनार तीर्थ ऊपर आ अवस-र्पिणीना विशमा तीर्थंकर बाळ ब्रह्मचारी शिवादेवी नदन श्रीनेमिनाथ स्वामी दीक्षा, केवळज्ञान अने सिद्धिपद वर्या ते ते पावन स्थळनां

दर्शन करी जीवननी सफळता सिद्ध करी. सुंदर सुखद शीतळ रेवताचळने अने ते समयने धन्यातिधन्य मानता, धर्मध्यानथी कर्म निर्ज्जरणा करता करावता अने भव्यजीवोने धर्मोपदेशद्वारा त्रण्य रत्न (ज्ञान दर्शन चारित्र रूप रत्नत्रयी) नुं ओळखाण आपी उद्धरता केटलोक समय श्रीपूज्यजीए त्यांज स्थिरता करवामां अनुकूळता मानी अने त्या उत्कृष्टतप--एकविंश उपवास कर्या.

त्यार पछी भविजननेज दर्शन आपनार भारतभूषण सिद्धगिरिराजनां परमोल्लास सह दर्शन करवा आचार्य भगवाने विचार्युं अने क्रमशः विचरता विचरता थोडे समये विमळाचळने भेटी पाप संतापनो ताप मेटी शिष्यवर्गने ते तरणतारण गिरिराजनुं गंभीर महात्म्य संभळावी समजावी अपूर्व स्तुति भर्या स्तवनो रच्यां. अत्यंत भावना हुल्लास वडे पुष्कळ कर्म मळने पखाळी सिद्धांतानुसार मजकुर तीर्थराजनो रास बनावी लेवो शरु करी भव्य जनोना निस्तारनो सरळ उपाय अमलमां लीधो अने त्यांज सर्वतोभद्र तप प्रारंभी पूर्ण कर्यो, तथा पांच भव्य जीवोनो उद्धार करी संयमी कर्या.

तीर्थराजनी शीतळ छायामां केटलोक समय स्थिरता कर्यां बाद विहार करता वल्लभीपुर (वळा चमारडी के ज्यां देवर्द्धिक्षमाश्रमण गणि महाराजे आगमो पुस्तकारूढ करी आपणा उद्धारनो मार्ग खुल्लो मूक्यो हतो ते पवित्र स्थळ) नी भेट लेवा पधार्यां त्यांना ज्ञानभंडार लेखो वगेरेनुं अवलोकन करी विचरता लींबडी

पधारी घणा जीवोने प्रतिबोधी सिद्धांतकथित शुद्ध क्रियानुष्ठाननी झुंबाकात अपावी आनंद पाम्या.

तत्पश्चात् विहार करतां तेज गामनी पासे नदी किनारे एक मतवादी योगी के जे सिद्धिनी साधना करतो हतो; तथापि सिद्धि मळती न हती ते पूज्यजीए सिद्धपणा वडे सिद्धि–साधनाने सिद्धता आपी वढवाण थइ धांगधरे पधारी ब्राह्मणनी बे कन्याओने प्रतिबोधी अ-

॥ भविकानी देशी ॥

सदगुरुकुं तुम ध्यावोरे अवधू । सद० ।
जिम तुम गुरुगुण पावोरे । अवधू । सद० । ए टेक ।
आठ कठिन शठका मठ तोडो । सोधा सर वश नावो ।
संज्ञावर्णिकला मत शीखो । नरदग पास न जावोरे ॥अवधू॥ १ ॥
वसुधाकुंअर महामदमदना । उसके वश मति आवो ॥
पावक पश्यत हरकुं धरसें । बादरलघु निकलावोरे ॥अ०॥स०॥२॥
अध्यातम अनुभव रथ आगें । धोरी उभय लगावो ॥
सदगुरु शुनिजरयंता होवे । तव तुम निरमल थावोरे ।अ०।स०।३।
वडतपगच्छनभदिनमणिजैसा । गणधर गुणकुं धरावो ॥
श्री पासचंद्रसूरीश्वरसाहिब । सुमति गुपति मन भावोरे ।अ०।स०।४।
गुरुसेवासे मेवा पावे । दुरमति दुरित भगावो ॥
आणंदघन आनन्द लहरमें । सदगुरुके गुण गावोरे ॥अ०॥स०॥५॥

सार संसारनी मोहममतानो त्याग करावी घणां श्रावक श्राविकाओने शुद्ध क्रियावंत कर्या.

त्यांथी विहार करी श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथजीनी यात्रा करवा पूज्यश्रीजीनी विचारणा थइ, जेथी शंखेश्वर गामे पधारी अतीव प्राचीन परचाधारी प्रतिमाजीनां (सूरींद्रे) अंतरंगना रंगनी सुरता साथ दर्शन कर्यां. विशेषमां स्तवन स्तुतियोनी रचना रची मजकुर तीर्थवंदनानो परमोल्लास प्रदर्शित कर्या बाद सूरीश मांडळ पधार्या. त्यांना श्रीसंघे प्रतापी गुरुराजनुं पधारवुं थयुं जाणी घणा आडंबर पूर्वक स्हामैयुं करी वाजते गाजते नागोरी वृद्ध तप गच्छाधीशने पुरप्रवेश करावी उपाश्रयमां पधराव्या. उपकारी आचार्य महाराजे भवभयवारक शुद्ध क्रियानुष्ठानना विधान पूर्ण धर्मोपदेश आपी श्रावकधर्म समजाव्यो एटलेकेः–श्रावक ए शब्दनो अर्थ शुं ? श्रावक पदना योग्य कोण कहेवाय ? श्रावके शुं शुं करवुं जोइये ? अने तेवा श्रावक पदना संभाळवाथी शुं शुं लाभ थाय छे ? ते संबंधी फरमाव्युं केः–

सुज्ञश्रोतागण ! जे मनुष्य अचळ श्रद्धा, प्रशंसनीय विवेक अने शुद्ध क्रिया ए त्रण वडे अलंकृत होय ते श्रावक कहेवाय एम श्रावक ए त्रण अक्षरोज बतावी रहेल छे.

श्रावकमां एकवीश गुणो अवश्य होवाज जोइये. दरेक वस्तु के मानव, पोत पोताना धर्म अने गुणोए करीने युक्त होय तोज वखा-

णवा-मानवा योग्य गणाइ शके. माटेज २१ गुण युक्त होय ते श्रावक सराहनांने लायक छे. ते एकवीश गुणो ए छे के:-

१, पंजूसाइ वगरनो-उदार (अक्षुद्र). २, जोवाथीज व्हालो लागे तेवो पूर्ण अंगोपांगवत रूपाळो (सुरूपवान्), ३, स्वाभाविक पणेज पापकर्मोथी अलग रहेनारो तथा जेने नोकर चाकर चाहे तेवो शांत प्रकृतिवाळो (प्रकृतिसौम्य), ४, दान, शीळ, विनय वगेरे गुणो वडे जनमां प्रीति पेदा करनार (लोकप्रिय), ५, मनमा सक्लेश न राखनारो-आनंदी मिजाजनो (अक्रूर), ५, पापथी डरनारो-अपयशथी व्हीनारो (भीरु), ७, कोइने ठगे-धूते नहीं एवो (अशठ), ८, कोइने कंइ वस्तु जोइती होय तो ते आपी तेनी इच्छा पूर्ण करनारो (सदाक्षिण्य), ९, मनमां लाज-शरमवाळो होवाथी नठारां काम वंध राखनारो (लज्जालु). १०, जीव मात्रने तकलीफ न आपनारो (दयाळु), ११, स्वपर वर्ग तरफ सरखी वृत्तिवाळो (मध्यस्थ), १२, गुणी जनोनो किंवा गुणोनो रागी अने अवगुणोनी दरकार नहीं राखनारो (गुणरागी), १३, धर्म

वृद्ध तथा वयोवृद्धनी सेवा करनारो (वृद्धानुग) १८, पोतानाथी विशेष गुण–धारीनो आदर करनारो (विनीत), १९, पोतानी तरफ करेला उपकारने भूली न जतां उपकारीने उत्तम बदलो आपनारो (कृतज्ञ), २०, कोइने कंइ लाभ थतो होय तो पोताना फायदानी आशा न राखतां स्हामाजुंज हित करनारो (परहितार्थकारी) अने २१, धर्मकृत्य संबंधमां उत्तम शिक्षण मेळवनारो (लब्धलक्ष) ए एकवीश गुणोए करीने युक्त होय तेज श्रावकना इल्कावने लायक छे. नामथी श्रावक नहीं, पण गुणोथी बनेला भाव श्रावक परम प्रशंसाने योग्य होवाथीज तेवाओनां वखाण श्रीवीतरागदेवे पण स्वमुखथी वर्णवेलां छे.

श्रावके बेटंक प्रतिक्रमण, बनी शके ते पच्चख्खाण उचरवुं यथाशक्ति चौद नियमो धारण करवा, पळी शके तेटला प्रमाणमां बारव्रत अंगीकार करवां, पाप–व्यापारथी निवृत्त रहेवुं, सद्गुरुनी वाणी सांभळी तेनुं रहस्य आचरमां मूकवुं, शुद्धदेव तथा शुद्धगुरु अने शुद्ध धर्मक्रियानुं सदा सेवन करवुं. सुपात्रे दान देवुं, सदाचार सुनीतिथी वर्त्तवुं, मिथ्यावाद–कंठशोषरूप धर्मवाद न करवो, अन्य धर्मनी हरिफाइ द्वेष पूर्वक न बतावची, वचनथी दरिद्र न रहेवुं, दरज्जा मुजब वस्त्रालंकार राखवो. कमतीमां कमती कमाणीनो दशांश पुन्य–मार्गमां वापरवो, मार्गानुसारीना पांत्रीश बोलोथी विरुद्ध न वर्त्तवुं, अंधश्रद्धालु न बनतां तत्त्वातत्त्वादिनुं उंडुं रहस्य मेळवी शुद्ध

मार्गने ग्रहण करवो, श्रावकने लगती दिनचर्या, रजनीचर्या अने ऋतुचर्याने ध्यानमां राखी कार्यव्यवहारने दीपाववो. वरेलपणुं, शुद्ध वक्तापणु समयने ध्यानमां लइ प्रदर्शित करवु, धर्मथी प्राणावे पण पतित न थवुं, सारी अने लाभ-दाता वात होय तो तेने (ज्याथी प्राप्त थाय त्यांथी) आदर आपवो, शरीरनु, शरीरने लगतां सबधीओनु अने व्यवहारनु उत्तम प्रकारे संरक्षण करवु, दुष्टव्यसनो तथा निंद्य-विषयोथी दूर रहेवु, कदाग्रह निंदा आदि अढार पापस्थानक वर्जवा. आ लोक अने परलोकमा स्तुत्य सुख मळे तेवु वर्त्तन जाळववु, देश काळ समय स्थिति आदिनो निरतर विचार राखी सत्कृत्य वगेरेमां निमग्न थवु, आप वखाणनो त्याग करवो, धन अधिकार आदिनो गर्व न राखवो अर्थात् जाति-लाभ-कुळ-रूप-तप-बळ-विद्या अने होद्दो ए आठे प्रकारनो मद त्यजी देइ अगर्वी थवु, अने जेम बने तेम तीर्थवदन, प्रभु-पूजन, गुरुभक्ति तथा धर्मसाधनामा सुदृढ भावना सह तत्पर रहेवु.

श्रावके सदैव सात क्षेत्र-साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका-ज्ञान-प्रतिमा भरावबी-जिनमदिर बाधवु के जिर्णोद्धार करवो एओमा तन मन धननो सदुपयोग करवो मैत्री अने करुणा भावना अथवा बार भावनाओ भाववी. अग्यार पडिमाओ वहेवी, उपधान वहेवां, सम्रवी पदधारक थवु. आगमो वंचावी विचारी मनन करी सुविहित गीतारथनु विनय वैयाबच्चादियी सन्मान साचववु. जिनमार्गनी हेलना-निंदा

थवाना मार्गों बंध पाडवा. धर्मध्वज न थतां धर्मधुरीधर थवुं. वचा मुजब करी बतावबुं. भंडारो तीर्थों धर्मस्थळो अने साधर्मियोनी पूरती सार संभाळ लेवी. दीन हीन अभ्यागतने दया बुद्धिथी पोषवां, सदाव्रतो खोलवां, पुस्तकशाळाओ–कळाभवनो–नीतिव्यवहार शिक्षण मेळववानी सभाओने जन्म आपी तेओना निर्वाह अर्थे योग्य बंदोबस्त राखवो. कीर्तिदानमां संकोच अने अभय–अनुकंपादानमां मुक्त हस्त राखवो, पोताना धर्म–बंधुओने रीबाता आजीविका वगेरेथी दुःख पामता जोइ आंख आडा कान करी –धनखर्चीं तेमनां दुःख हरवामां चित्त चोरी के गर्वमां तणाइ तेओना भणी बेदरकार न रहेतां तेमने जोइतां साधनो पूरां पाडी अहोभाग्य थवुं मानवुं. राज्यनी अडचणथी धर्मकृत्यमां के नीतिमां थती खलेल माटे ग्लानिवंत न थतां बनतां प्रयत्नो वडे तेम न थाय तेवो मार्ग आदरवो. संपने सुदृढ करी कुसंपनो अंत आणवो. शेठाइ वडाइ धनाढयताइनो ममता मिथ्याभिमान–कदाग्रह वधारवा आदिमां उपयोग न करतां प्रशंसनीय प्रबंधोमां यशाळी वर्त्तणुक बतावबामां करवो. धर्मनां दश लक्षणो तरफ पूरतुं ध्यान आपी ते शुद्ध धर्मना अनन्य चुस्त उपासक थवुं. दान-शील-तप-भावनामां रक्त रहेवुं. विकथाओ, कषायो वगेरेमां विरक्त दशावंत रहेवुं. नम्रता साथ ज्ञाननी वृद्धि करवी. सुकृत्यनां खातांओनो वहीवट चोखी रीते बारीकता साथ करवो अने निरंतर आत्मकल्याणमांज लीन रही परिवार परिग्रहादिनी मूर्छाथी अलिप्त रहेवुं.

आ प्रमाणे श्रावक धर्मनी व्याख्या कही समजावी, चानकदार करी ते धर्मानुरागी श्रावकवर्गने परमश्रद्धावंत कर्यो. भक्ति जिनपना रागीभक्तोने भव्य आनंद आपी तारकगुरु वीरमगाम पधारी दुराग्रही विद्यासागर वादिनो शास्त्रानुसारे गर्व दूर कर्यो. आगमानुसार अदोषित क्रियानुष्ठाननी पद्धति वतावी परम धर्मानुरागी श्रावकमंडळने विहार करवानी विचारणा जणावी. एथी श्रावक-समुदाय गुरुविरहना स-माचारथी कचवावी; पण अप्रतिवद्ध उग्रविहारी गुरुनुं वर्त्तन स्वतंत्र होवाथी अन्य इलाज ज न हतो.

ग्रामानुग्राम विहार करता सूरीराज श्रीपार्श्वचंद्र सूरीजी अणही-लपुर पाटण (गुजरात) पधार्या. श्रीसंघे अति आडंवर युक्त पर-मोपकारी सद्गुरुवर्यने स्हामैयुं करी वाजते गाजते पुनीत पुरमां पधराव्या. सूरींद्रे उत्तम धर्मोपदेश आपी तेमनो सकल श्रम दूर कर्यो. चातुर्मासकाळ नजीक आवतां श्रीसंघे प्रवर सूरीश्वरजीने पा-टणमांज चोमासुं करवानी वीनती करी. जेथी लाभ अने समया-नुकूलताने ध्यानमां लइ पूज्यजीए सवत १५७५ नुं कार्त्तिकी चोमासुं त्यांज कर्युं.

श्रावक श्राविकाओए अहोभाग्य मानी सूरीश साम्निध्य तप जप व्रत पच्चक्खाण आदरी, चढता भाववडे दान शीलना मार्ग, स्वामीवत्सल्ल, प्रभावना, पूजा अने एवांज अन्य सत् पुन्य पोषक कार्यो करवामां अतिविशेष रुचि वधारी.

सूरीजीना वचनातिशयवडे त्यांना रहीश शेठ भीमाशाह अने ल्हालादेवीना सपूत पुत्र अमरसींह के जेनो जन्म संवत् १५६० ना मागशिर शुदी ११ ना रोज शुभ समय थयेलो ते फक्त पंदर वर्षनी उमरेज अंतरंग वैराग्यथी रंजित थइ सूरीराजनी आगळ आवी जिनराजनी प्रव्रज्यां अंगीकार करवानी (तेमणे) वीनती करी. ते श्रवण करीने साचो वैराग्य प्राप्त थवानी परीक्षा लइ माता पितानी अनुमति मागी आववानी फरज पाडी.

समजु मावापे कुलोद्धारक कर्त्तव्यकर्त्तानें अति लाभनुं कारण जाणी अनुमति आपी, जेथी अति आडंबर वाळा महोत्सव पूर्वक बाळ ब्रह्मचारी बुद्धिनिधान कुमार अमरसिंहे सूरीजीना हस्तथी विक्रम संवत् १५७५ ना मागशिर शुदी ५ ना दिवसे दीक्षा अंगीकार करी. आनंद मंगळ वर्त्तायो अने सत्कर्मनी विशेष प्रवृत्ति अमलमां आवी.

बीजा शिष्यो विद्यमान हता अने विद्याभ्यास करता हता; तथापि नवदिक्षित समरचंद्र मुनि महान् तीव्र बुद्धिशाळी होवाथी तेओ विद्याध्ययनमां सर्व करतां आगळ वध्या, ए जोइ सूरीश्वरे भविष्यमां पाटना अधिकारी थवानी आशानी आगाही मानी लीधी.

तदनंतर विहार करता करता आचार्य महाराज अमदावाद पधार्या; परंतु ते अरसानी अंदर शहेरमां मरकीनो उपद्रव जोशभर चाली रहेलो होवाथी राजनगरनिवासि त्रास पामी नासभाग करी

रह्यां हतां. ए जोइ तथा प्रजानी हकीकत सांभळी अनुकंपा योगवडे तुरतज दैवी शक्तिना संयोगे चालती मरकीने बंध पाडी सूरीश आनंद युक्त धर्मध्यानमां तल्लीन रह्या.

दुनियामां चमत्कारनेज नमस्कार होय छे ! कबीरजीए पण कह्युं छे के-'कहे कबीर मोय अगम सूझे, बिन परचे कोउ नहीं पूजे !' पण पूज्यजीना प्रत्यक्ष परचानो फायदो थायवा वगरनो जोवाथी परम श्रद्धावंत थइ विधर्मिओए पण श्रावकधर्म स्वीकारी जीवनने सफळ करवा मांड्युं. तेमज जिनालयोमां शांति स्नात्र-पूजा भक्ति आदि शांतिकर्म करी पुन्यसंचित करी राजनगरनीवासियो धन्याति धन्यने पात्र गणावा लाग्या.

चातुर्मास नजीक आवते जोइ गुरजी त्यांथी विहार करवा धारता हता; परंतु श्रीसंघने ए विना सद्बोध विरहदाता जणातां ते चातुर्मासनुं त्यांज करवा सबधी अत्याग्रह पूर्वक विनंती करता हुल्लास मदद थतां सूरीश्वरे विशेष लाभनुं कारण ध्यानमां लइ ते साल्नु चोमासु त्यांज कर्युं, अने अमृत समान सर्व प्रकारे हितकारी धर्मोपदेश वडे हळवा कर्मी जीवोनुं कल्याण करवा शुद्ध क्रियानो विधि सिद्धियुक्त शीम्ववाडी अचळ पणे रजनी समयमां वसति बहार कायोत्सर्गमां निमग्न रहेवा लाग्या.

चोमासु पूर्ण थया बाद पूज्यजी विहार करी ग्रामानुग्राम विचरवा खंभात शहेरे पधार्यां, अने ते संबंधी त्यांना श्रीसंघने जाण

थतां (कर्णोपकर्ण प्रभाव जाणवामां आवतां) सद्भावनानी श्रेणी वृद्धिवंत थइ, एथी गुरु राजने अति उत्सव सहित पुरमां पधरावी उपाश्रयमां विराजमान कर्या.

दरम्यान एक हृदयद्रावक ए विना बनती दृष्टिगोचर थइ के, त्यांना राज्यकर्त्ता नवाब साहेबे पोताना धर्म-क्रियाना दिवसने रोज पोताना मजहबनी अंधरूढी मुजन गायनी कुरबानी करवा एक हृष्टपुष्ट गायने पकडी मसजिद तरफ लइ जवा फरमाव्युं. एथी नोकरी गोवध माटे उत्सुक थया हता.

श्रीसंघे ए कृत्यने अनिष्ठ जाण्युं अने पूज्यजीनी पधरामणिना मंगळ दिवसे तेवुं दुष्कृत्य न थाय तोज आनंद वृद्धि पामे. एम धारी नामदार नवाब साहेब आगळ जइ ते दुष्कृत्य संबंधी अरज गुजारी; परंतु धर्मकृत्य मानेलुं होवाने लीधे ते संबंधे कशुं ध्यान आपवामां आव्युं नहीं. जेथी श्री संघना आगेवानो निराश थइ पाछा वळ्या अने पूज्यजीने आवी गोवधनी वार्त्ता रोशन करी.

वार्त्ता श्रवण करीने योग शक्तिरूप दैवीशक्ति मारफत गायज अदृश्य करी दीधी अने वध करवा लइ जनाराओ ज्यां हता त्यांज स्तंभन थइ गया. ए जोइ भारे अजायबी भर्या बनावना समाचार नवाब साहेबने पहोंच्या. एथी तेमणे जाते आवी ते वातनो बारीक तपास कर्यो तो पोते पण ताजुबी पामी गुरु महाराजने मळी थएली बेअदबीनी माफी मागवा उपाश्रये जइ पहोंच्या. अंदर

खबर आपी नवाने श्रीमद् गुरुराजने पूर्ण मर्यादा युक्त वंदनादि करी ,थयेली बेअदबीनी माफी मागी. श्रीपूज्यें तेवुं हिंसाकृत्य फरीने न करवा विचारणा जाहेर करी, एटले के-जीव मात्रनो आत्मा आपणा जेवोज छे. सर्व जीवो सुखनी इच्छा राखे छे. मरण कोइने पण प्रिय नथी. प्राणी मात्र पोत पोताना काम वसते पछेछे नंतरे हकदार, उपयोगी साधनभूत तथा परोपकारक छे. मनुष्य, ज्ञानवंत होवाथी अन्य जीवोने न्याय आपवा बधाये लछे. परोपकार, न्यायबुद्धि अने सदाचार ए मानवोनुं उत्तमोत्तम भूषण छे. पोतानां बाळकोनुं पालण पोषण करी बीजा प्राणीओना बाळकोने बेगुन्हेगार छतां बेजान करवां ए शुं इन्साफी राजाओनो धर्म छे? शुं पशुओने मारी तेना पिंडनी कबर पेटमा बनावी लेवी ए उत्तमनीति गणाय? शुं राजा थइ ज्ञानेंद्रीयोवाळा थइ बीजा जीवोना प्राणधन उपर त्राप मारवी ए योग्य छे? म्होंमां तरणा लेनारने पण जबर करवां ए शुं राओनो धर्म छे? शु बारी बुधी रधी ते अनाथ जीवोनो पराणे पराणे जीव लेवो ए माणसाइ छे? शुं पाप-कर्म करवा थीज प्रभु राजी रहे छे? शुं हिंसामाज धर्म समायलो छे? शु अकराकर,केर करवाथी जन्नत मळे छे? तो पछी दोझखना अधिकारी कोने गणवा? न्यायसेतु मालिक होवा छतां तेज अन्यायने मान आपी पराया लोहीथी तृप्त थाय छे? शुं

निर्दयी, कमकमाटी भर्या कृत्यो करनारज धर्मात्मा हाजी नियाजी काझी मोलवी धर्मगुरु अने रहीमने ओळखनार गणाय छे ? शुं प्रभुना दिलमां रहेम होती नथी ? शुं मनुष्यज राजानी प्रजा छे अने तेनी सीमामां रहेतां पशु पक्षीओ प्रजामां लेखातां नथी ? शुं पशुओनी मदद वगर माणसो राज्यनी त्रीजोरी तर राखी शके छे ? शुं धर्मना दिवसे पाप करवुं उत्तम काम छे ? शुं स्हामे न थाय तेवा कंगालनेज मारवा माणसना हाथ, शूरवीरनी तरवार के अन्य शस्त्र अस्त्र, अने हृदय सरजायलां छे ? शुं गरीब जीवोनो शिकार करवामांज राजा वगेरेनुं पुरुषार्थ समायलुं छे ? शुं मानवो अने पशुओने फरियादनी दाद आपवामां मालिक क्यामतना रोज पक्षपात करी इन्फासने हवामां उडावशे ? जे मालिके-चोरी न करवी, स्रीपर वदनिगाह न करवी, जुठ न बोलवुं, चुगली न खावी, शराब न पीवो, जुगार न रमवो, व्याज न खावुं, वद काम न करवां अने हमेशां नवुं दातण सरखुं पण न कापतां चंदरोज सुधी एकज दातण करी वनस्पतिने त्रासथी मुक्त करवी इत्यादि फरमान फरमावेल छे, शुं तेज मालिके बीजा जानदारोना जुल्मथी जान लेवामां सलाह आपी होवी जोइये ? शुं जुल्म करनार जालीमने आलीम कहेवो व्याजवी छे ? शुं बीजाओनां काळजां कोरी हृदय शेकीने पोते राजी थवुं अने ते पण फक्त पांच पचीश पळना जिह्वास्वाद माटे आटलो वधो बीजा निरपराधीपर

जुल्म गुजारवो ए न्यायथी विरुद्ध नथी ? जे मालिकनी प्रजा पशुओ छे ते मालिकनी प्रजा मनुष्यो छे तो शुं एकज कुटुंबना जीवोने मारी नाखनार कुटुंबद्रोही मालिकनी प्रजानुं काटलुं करवाथी मालिकना गुन्हेगार नथी थइ शकता ? पोताना प्राणपर मरणनी धुंश आववाथी थरथर शरीर धूजी ऊठे छे तो शुं पशुने प्राणसंकट समय धूजतां छतां पण तेनी दया न आवे ए दैत्यनां कृत्य नथी ? बीजाओ पर रहेम राखवाथी रहेमना सागर रहीम राजी थाय छे ए कथन पर आपे हरताल लगावी छे ? जे पशुओए पोताना प्राण बचाववाने माटे मनुष्योनुं शरण लीधेल छे तो शुं शरणे आवेलाओनेज कतल करवा ए देखीतोज जुल्म नथी ? कुदरतनी बनावेली कारीगरीनो नाश करवानी सत्ता न छतां तेनो नाश करवो ए कुदरतना कानूननो भंग थतो नथी ? कुदरतेज सर्वने प्राणधन आपेलुं छे छतां जबराइथी ते प्राणधन लूटी लेवुं एमांज राजानो न्याय समायलो छे ? बीजाओ कोइ कोइना उपर जुल्म गुजारे के गुन्हो करे तो तेने आप दंड आपो छो अने ते कायदो पोताने माटे लागु नहीं ए कोना घरनो न्याय कहेवाय ? "आप न जावे सासरे औरनकों दे शीख" वाह ए पण अजब अने गजब भरी नीति छे ! बीजाने सुख आपवाथी सुख अने दुःख आपवाथी दुःखनो बदलो मळे छे एवीज मजहबी-धर्मशास्त्रो अने खुद कुराने शरीफ फरमावे छे के पुन्य करो ! कोइनुं बहेतर

थाय तेवां काम करो ! वदी छोडो ! नेकी करो ! खुदानो खोफ राखो ! कोइने न सतावो ! जुल्म करशो तो क्यामतना रोज जवाव आपवो मुश्किल थइ पडशे ! जेवुं करशो तेवुंज पामशो ! अने जे हाथे जेवां काम करशो तेवी शिक्षा के वक्षीस मेळवशो. शुं ए धर्मशास्त्रोने पण बाजुपर मूकी तेमानुं पोताना मतलवने वनतुं वगर मायनो समज्ये पाप वडे थतुं पुन्य मानी लीधुं छे ते सत्य मानवा योग्य छे ? कह्युं छे के–

(गझल.)

रहम् जो करता है वदला रहम्का वोह पाएगा !
जुल्म करताहै तो वदला जुल्मका मिल जायगा !
रहम् जालिमपर करे गर पाक रब्बुल आलामीन्,
जुल्म फिर मजलूमके हकमें बुरा हो जायगा ! रहम. १
वख्सदे अपना गुन्हा हकपर नही हक्कुलइवाद,
ये कहा किसने तुझे जालिमभी वख्शा जायगा ? रहम. २
माफ तोवाहसें करे हक शिर्कसा जुल्मन् अजीम,
हक मगर वंदोका वोह वख्शे तो वख्शा जायगा ! रहम. ३
जुल्मका ताजीर एहसांकी जजा एहसान है,
पेड बाबूलोंके वोकर आम कहांसें खायगा ? रहम. ४
नेकीये मजलूमको जालिमकी दे दावर जरुर,
सब गुन्हा मजलूम हक जालिमके सर उठवायगा ! रहम ५

शीखताहै देखकर क्युं गैरकी बदचालतूं ?
चोर चोरी गो करे एक दिन तो पकडा जायगा ! रहम. ६
अहले दिलहै तो किसीकी तुं दिल आजारी न कर,
याद रख मेरी नसिहत वरने तूं पछतायगा ! रहम. ७
मालो जरके जोरपर ये निखवतो कीब्रोमनी,
पर ये मुल्को माल सब इस जा पडा रहजायगा ! रहम. ८
इल्म पढकर मोलवी ज़ुल्मुदगा जाइज किया,
क्या तेरे जुब्बे कितावोसें खुदाभी डरजायगा ? रहम. ९
इन्सानकी आजादी कर बरबादी औरोकी करै,
ऐसी रहम दिखलावे वोह जुंदा धरम कहलायगा ! रहम. १०
है मियां मजलूम करते हक अदा इन्सानियत,
क्या दरिंदोको नसीहतका असर हो जायगा ? रहम. ११

वास्ते पाप करवुं ए बिल्कुल न्याय नीति अने धर्मथी बेन्याजब छे. तेमां पण गाय मारवी ए तो घणाज नुकशाननुं कारण छे. केमके. गाय दूध–दही–घी–छाश वगेरे आपे छे जेथी माणसोना प्राणोने पुष्टि मळे छे. छाणथी घर लीपातां पवित्र थाय छे. झरणथी रोगो अने आभडछेट जाय छे अने तेना वाछडाओनी मददथी खेतीनुं काम सफळ थतां राज्यनी अने प्रजानी तीजोरी ताजी रहे छे; छतां आवा उपकारी जानवरने मारवुं एतो पोताना पगपर पोताना हाथे कोवाडो मारवा बरोबर छे ! हालनी आजादी

जाळवीने जे पेडने कापी दे ते डाह्यानुं काम नथी; पण खरेखर गांडा नुंज काम छे. राज्यनो सघळो आधार खेती परज छे अने खेतीनो सघळो आधार बळदपर छे; परंतु बदलदोने जन्म देनारीज नाश पामशे तो पछी राज्यनीज आबादी शी रीते रहेशे तेनोज ख्याल करो ! पोतानी दौलतनी पोताएज पायमाली करवी ए शुं डाहपण भर्यो प्रकार छे ? जेने मालिक वचावनार होय के आयुपवळ्वान् होय तेने कोण मारनार छे. लौकिकमां कहेवत पण छे के, मारनार वे हाथ वाळो छे अने वचावनार हजार हाथ वाळो छे, गमे तेम हो पण निमित्त वगर के आयु खूटया वगर कोइ कोइने मारनार छेज नही एवो कायदो छतां अकस्मात मरण निपजाववा तैयार थवुं ए कुदरतना के दैवना कायदो तोडवाना इरादाने लीधे दर्म्यानगीरी करवी तद्दन गेरव्याजवी छे. दया एज धर्मनुं मूळ छे ! दया एज चढतीनो पायो छे, दया एज जन्नतनो दरवाजो खुल्लो करनार दरवान छे, दया एज बन्ने दुनियामां फतेह आपनार छे अने दया एज क्यामतना रोज वचावनार छे माटेज छेल्ला शब्दो कहेवामां आवेछे के.

(क्युं जवानी खो रहेहो–गझल भैरवी.)

जुल्म करना छोड दो, जालिम खुदाके वास्ते;
है यह हरकत नारवां, अहले वफाके वास्ते. जु. २

है बनाये सब उसीके, जिसने खुद पैदा किये,
क्यौं सताते हो किसीकों, दो दिनांके वास्ते ? जु. २

होगी खुद गरजी भला, इससेंभी बढकर और क्या ?
जान लेते औरकी, अपने मजाके वास्ते ! जु. ३

काटकर औरोकी गर्दन, खैर अपनी मांगते ?
दो जगह इन्साफको, दिलमे खुदाके वास्ते ! जु. ४

चंदरोजा जिंदगी तनहै, यह पानीका बुलबुला;
ख्यामख्वाह बनता है क्यौं, मुजरिम सजाके वास्ते ? जु. ५

करिये भला होगा भला, नेकीका बदला नेक है;
मत् सताओ हर्गीझ किसीको, हाजत रफाके वास्ते. जु. ६

करिये अदा अपने फरायज, होनेवाली शामहै !
मत् मरो मरदूद क्यौं, नाजो अदाके वास्ते. जु. ७

भूलकर मालिकको फिरते दरबदर अये शाह क्यौं ?
जान देते बेहया वस्ले बुतांके वास्ते ! जु. ८

इत्यादि इत्यादि नसीहत आपी पापथी निवृत्त करी दयानी लागणी पैदा करी, जेथी नव्वाब साहेब सत्य अंतःकरण पूर्वक एक औलियानी पेठे पूज्यनी आज्ञानुं पालन करवुं कबूल राखी पोताना महेल तरफ गमन करवा रजा मेळवी.

६ आ चमत्कार निहाळी सकळ संघ अपार आनंदमां मग्न थयो

अने जैनशासननी उन्नति थयेली जाणी शुद्ध क्रियानुष्ठाननो पूर्ण रागी थयो. स्वामीवत्सल, उत्सव महोत्सव, पूजा, प्रभावना, गुरु-भक्ति, अभयदान आदि चडता परिणामे साचवी जीवननो ल्हाव लेवा लाग्यो.

तदनंतर विहार करी गुरुदेव कावी-गंधार-जंबूसर थइ भरुच पधार्या अने धर्मव्यापारमां अपार लाभ मेळवता सूरत शहेरमां धर्मनी ल्हेर फेलावता वडोदरा भणी थइ माळवदेश तरफ विचर्या.

माळव देशनी अंदर द्रविडदेशना वारसो पाखंडी विचरी धर्म धतींग चलावता हता, तेमने संसारबुद्धि करनार जाणी सूरीजीए तत्ववोध आप्योके-धर्मनां दश लक्षणो छे, एटले क्षमा (क्रोधनो अभाव) मार्दव (माननो अभाव), आर्जव (कपट रहितपणुं), मुक्ति (निर्लोभता), तप (इच्छानो रोध करवो), संयम (संसारव्यवहारनो त्याग), सत्य (साची वाणी वदवी), शौच (अंतरंगनी परम शुद्धता), आकिंचन (परिग्रहादि पाप प्रबंधनो परित्याग), अने ब्रह्मचर्य (सर्व प्रकारे विषय वासनानो त्यागभाव), आ दश वस्तु ज्यां विद्यमान होय त्यांज धर्म विद्यमान होय छे. तेमज जे आचरणोने पवित्र पुरुषो प्रशंसे तेज धर्म, तथा जेना आचरवाथी पोतानो उदय अने आत्मकल्याण थाय तेज धर्म, अथवा जे कार्यनी शरुवातज न्याय सहित होय तेज धर्म कहेवाय छे; परंतु दंभ पणा वडे डॉळ देखाडवानो आडंबर राखवो, रहेणी कहे

णीनी विरोधता न टाळवी अर्थात् कहेणी प्रमाणे रहेणी न होय अने रहेणी प्रमाणे कहेणी न होय ते गंभीर झगडाने दूर न करवो, विवादमां तत्पर रहेवुं, तत्त्व-रहस्यनी वार्त्ता सांभळ्या छतां मनन न करवी, जनमनरंजनहितार्थ कायाकष्ट अगर कर्मकांडनी उपासना धारण करवी, हठयोग धारण करवो. प्रमाण रहित धर्म शब्दनी ऋषिपदनी के पंडित पदनी खोटी व्याख्या जाहेरमां लाववी आश्रवना मार्ग खुल्ला करी संवर निर्जरादिमय मोक्षपदनो दावो करवो, जेमां जीवने दुःख अगर जीवनी हिंसा थाय तेवां कार्योमां ज मोक्ष शमायल छे एम मिथ्यावाद सिद्ध करवो, अने सारासार, तत्त्वातत्त्व, धर्माधर्म, भक्ष्याभक्ष्य, पेयापेय, गम्यागम्य तथा कृत्याकृत्य जाण्या समज्या वगर मोक्षपद आपवानो ठेको लेवो ए तद्दन गेरव्याजबीज छे.

आवु करवाथी जीवने परम सुख प्राप्त थतु नथी. परम सुख तो ते ने सुखनां साधनो साध्य करवाथीज प्राप्त थाय छे.

आ प्रकारनो परम रहस्य पूर्ण बोध सांभळतांज तेओ मिथ्यात्वथी विरमी सम्यक्त्व साधक थया अने श्रीगुरुराजजीना परम उपासक बनी तेओ अत्यंत आभार मानता शुद्ध क्रियानुष्ठाननु सेवन करी जन्मने सफळ करवा लाग्या.

सीप्रा नदीना पार जवा गुरुजीनी विचरणा हती; परतु अप्प कायना जीवने किलामना थाय ए अनुरूपाने अवलवी विलंबने

मान आपवा तरफ दोराया. दरम्यान नदीना अधिष्टायक देवें ते विचारणाने अनुसरी जल प्रवाहने जड बनावी स्थळरूप करी दीधो जेथी गुरुजीनी धारेली धारणाने सफळता प्राप्त थइ. अप्पकायनी विराधना थती अटकी एथी वडो आनंद मानी सूरीश्वरे आगळ पधारवा उत्कंठा राखी; पण वचमां चोवीश पीर के जे इसलामी पंथना चमत्कारिक इल्ममां जागती ज्योतीरूप हता तेमणे गुरुना आत्मवळनी वानगी जोवा विचार्युं अने केटलाक प्रश्नोत्तर कर्या; तथापि आखर तत्त्वनी वातो मनमां ठसीजतां प्रतिबोध पामी गुरुने बहु मान आपवा लाग्या.

गुरुजी पण तेमनो सदा विजय इच्छी उजेणमां पधार्या अने त्याना अनेक बाळजीवोने शुद्ध धर्मोपदेश वडे प्रतिबोधी क्रियानुष्ठान संबंधी चालती अंधाधुंधी बंध पाडी भवभीरु बनाव्या. तेमज त्याना राजाने प्रतिबोधी जीवहिंसा थती अटकावी शुद्ध श्रद्धावान श्रावकधर्म अंगीकार कराव्यो.

तत्पश्चात् ग्रामानुग्राम विहार करता माळव प्रदेशनी अंदर हजार कसाइने दयामय धर्म उचरावी हिंसा कर्मथी बचाव्या.

वाचक वृंद ! माळवदेशनी केटलीक भूमिमां वसता केटलाक जीवोनो उद्धार करी सूरीश मेवाड भूमिना भूषणरूप उदयपुरमां पधार्या, अने त्यां पण तेज व्यापारथी विशेष लाभ मेळवता मेवाडमां विचरी मारवाड तरफ पधारी मरूधर राज्यना पायतख्त जोध-

पुर नजीक जइ पहोंच्या. जंगल खाताना अफसरे गुरुआगमननी वधाइ आपी, एथी वधाइमां वधाइदारने उचित वक्षीश आपी जोधाणनाये पुरजन सहित दबदवा पूर्ण रहामेयुं लइ जइ गुरुपद वंदी पुरमवेशोत्सवनो ल्हाव लीधो.

गुरुराजवी पधरामणी थइ ते समयमां लांबा वखतथी दुष्काळ चालतो हतो जेथी रैयते राजाबहादुरने वीनती करी के-'दुकाळनो अंत आणवा परतक्ष परचाधारी पूज्यजीने फरमावो, जेथी अनेक जीवने अभयदान आपवा तुरत योग्य उपाय आदरशे.' इत्यादि वीनतीना लीधे राजाए तेमज कर्युं, परंतु गुरुजी तो मौन रह्या किंतु भक्त भैरवे गुरु महिमा अने धर्मनो विजय तथा अभयदाननुं कारण जाणी गुरुध्यान वळवडे मेघवृष्टि थवानी सुरता सिद्ध करी. लोको पोताना घर तरफ फर्या अने आकाश स्वच्छ हतुं ते वादळथी घेरावा लाग्युं. जोत जोतामां गाज वीज सहित मुशळधाराए मेघवृष्टि थवा मांडी एटलुंज नही पण लोकोनी चीजो तणावा अने मकानो जमीनदोस्त थवा लाग्यां, जेथी खुद राजाए गुरुचरणमां आवी वीनती करी के-" प्रभो ! जेम वज्रस्वामिये, विष्णुकुमारे अने आर्यसुहस्तिसूरी वगेरे मुनियोए तपोबळनी लब्धी द्वारा संघनां कार्य सारी आपदानो अंत आण्यो हतो तेम आप प्रतापी गुरुए पण जळ वरसावी दुकाळनो अंत करवा अने अभयदान आपवा यत्न आदर्यो; माटे हवे मनमानती वृष्टि थवाने ली क्षमा मागुं छुं के ते वंध थवानी कृपाकरो. "

राजननी वीनती उपरथी गुरुराजे ध्यानबलथी भक्त भैरवनी करणीने संकेलवा संकल्प कर्यो के तरतज बंध पडी, पचीश पचीश कोषना चोगीर्द घेरावामां जळवृष्टिए आनंद आनंद वरताव्यो अने टप कीआ मोतना प्रमाणे टपोटप प्राण छोडता प्राणियोने नवुं जीवन मळतां होशमां आव्यां.

आ प्रमाणे थवाथी स्वधर्मी अने विधर्मीजनो एके अवाजे एज उच्चरवा लाग्यां के–" पूज्य श्रीपार्श्वचंद्रजीनां दर्शनथी दारिद्र त्रास पामी जाय छे, हर्षनो समुद्र छोलाय छे, पीडाता जीवोने परम सुखानंद प्राप्त थाय छे, अने सकळ जीवोनुं हित थाय छे; केमके गुरुजी परम दयाळ छे, करुणानिधान छे, पुन्यनी प्रबळता वडे दर्शन थतां भवनी सफळता हाथ लागे छे, अने शासनना पूर्ण प्रभावक होवाथी ज्यां ज्यां पावन पगलां धरे छे त्यां त्यां सर्व प्रकारे आनंद मंगळज वरताय छे !" इत्यादि गुणानुवाद गातां नीचे मुजब यशवादनुं गीत वदतां हतां के–

(संसारियामां पाछो नहीरे पडुं, ए राग)

नित जयवंत रहो, गुरुजी मारा, नित जयवंत रहो,
नर नृपति सुर मुनिगण मध्ये, मान्य ललाम लहो गुरुजी. १
ज्ञानाग्निथी भविजनना गुरु, पाप संताप दहो. गुरुजी. २
मुक्तिवधूवशमंत्रविधिना, प्रतिपळ पाठ कहो. गुरुजी ३
स्वपर श्रेयकर पंथे सदाए, विजयी थइने वहो. गुरुजी. ४

शुद्ध शैली सह शासन दीपे, चितमां एज चहो. गुरुजी. ५
शिथिलाचारी दंभी दुष्टोने, गुरुत्व विचायी ग्रहो. गुरुजी. ६
पूर्ण प्रभाविक पुन्य प्रतापें, नहतर एके न हो. गुरुजी. ७

आवी रीतनो जगो जगोए यश गवातो हतो अने मतिस्पर्द्धियो इर्ष्याग्निने वश्य थइ अंतरने भस्मीभूत बनावता हता; पण गुणीजनो महदानंद पामता हता; तेमज राजेंद्र, सूरींद्रने वीनवतो हतो के 'जेनी अंदर राजा के चोरोनो भय नथी, जे उत्तमोत्तम कीर्ति अर्पण करे छे, जेनामां देवो अने मानवोनुं हित समायलुं छे अने जेनाथी आलोक तथा परलोकनी अंदर सुखज स्वाधीन रहे छे ते आ साधुत्व अत्यंत रमणीय छे ! माटे सदैव सानंदसह स्वकार्यमां विजय प्राप्त करो ! तेमज ज्यां जिनराज देव छे, शांतिनिधि गुरु छे, कृपासमुद्र धर्म छे, शुद्ध अन्नपान अने वस्त्र वडे प्रवर्त्तन छे, चिदानंद माटे विश्रा छे, शरीररक्षा माटे क्षमा छे, गुणमणिमालानो महान् शृंगार छे अने उपकार एज जेमनुं नित्य धर्म छे एवा श्रमण पणाने निहाळीने कल्पवृक्षना लाभनी माफक कयो माणस खुशी न थाय ? अलबत्त दरेक खुशी थायज !' इत्यादि वीनती करी जेथी आचार्य भगवाने भवभ्रमणा निवारक भाव अहिंसामय धर्म प्ररूपणा वडे तेमना चडता परिणामने विशेप उत्तेजित कर्या. राजेंद्रे पोतानी राज्यसीमामां कोइ जीवनो वध न थवा संबंधी ढंढेरो पीटाव्यो, सात हजार ते-

दीओने केदथी मुक्त कर्या, जिनालयोनी अंदर महोत्सवो करी श्रद्धाने अचल पद आप्युं, अने एथी मजा पण पूर्ण जैनधर्मानुरागिणी थतां देशनी महत्ताने दिगंत लगी दीपाववानो समय स्वाधीन कर्यो.

अचिंत्य महिमावंत सूरीशना सद्बोधथी मुणोत गोत्री क्षत्री रजपूतनां बावीसें घरवाळाओने प्रतिबोध आपवाथी तेओ मुणोत गोत्री परम जैन धर्मानुरागी श्रावक थया अने शुद्ध क्रियानुष्ठान धारी थवाथी ते ओशवाळ वंशी गणाया.

तेमज योधपुरनो एक राजवंशी कुमार प्रतिबोध सांभळी वैराग्यवंत थतां चातुर्मास पूर्ण थये माता पितानी अनुमति मेळवी सूरीश्वर हस्तथी दीक्षा अंगीकार करी. तेमनुं नाम उदयचंद मुनि राख्युं हतुं.

चोमासुं पूर्ण थया बाद गुरुराज विहार करी नागोर नगरे पधार्या, त्यां पोताना गुरुराज साधुरत्नाचार्यजीनां चरणवंदी सुखशाता पूछी विशेष विनय वैयावच्च साचवी आलोयणा तप अंगीकार करी आनंद पाम्या. उन्नतिकारी शिष्यना प्रभाव अने गुणगणथी प्रसन्नता पामेला वृद्ध गुरुराज शिष्यना उत्साहनी वृद्धिनां वचनो वदी विशेष विजय थवानी उर्मीओ प्रकटकरी जिनशासन रूप मध्यान्ह–सूर्यनो प्रताप कायम रहेवानी भावनामां लीन थया.

गुरुराज सांथे केटलोक समय रही शुभाशिषनुं वातावरण सघन करी त्यांथी बीकानेर थइ रतनगढ, जयपुर, दिल्ली, आग्रा, बनारस, मुसदाबाद, कल्याणक वाळी नगरीओ, अने सम्मेत-शिखरजी आदि स्थळोनी फरसना यात्रा करी. श्री पार्श्वचंद्र सूरीन्द्रजी स्तवना, ध्यान, भावनादि वडे पोताना अशुभ कर्म बंधनोने शिथिल करी कर्म निर्जरा करता अने भविजीवोने प्रतिबोधी शुद्ध क्रियानो मार्ग प्रवर्त्तावता, पंडितोने ज्ञानचर्चा वडे आनंद पमाडता हता. एक तीर्थस्थळमां पूर्वी तथा दक्षिणी महान् विद्वद् मंडळ एकठुं थयुं हतुं. तेमना सांभळवामां आव्युं के वादिमदविखंडन स्वधर्ममंडन अने महीमंडनरुप समर्थ जैनाचार्य अत्र पधारेला छे अने कर्णोपकर्णो सांभळतां ख्यालमां आभास आपे छे के तेओ सकळ शास्त्रविशारद छे. माटे ते मंडळ एक दृढतापर आवी सूरीजी अगाडी आवी पहोंच्युं अने पोत पोतानी विवादग्रस्त प्रतिज्ञा जाहेरमां लावी यथार्थ उत्तर वडे चित्तने समाधि मेळववानी राह जोवा लाग्युं.

सूरीजीए अगर्वपणे कह्युं के–' आप जे जे शास्त्रना पारगामी हो ते ते शास्त्रनां महावाक्यो संबंधी शंका आदि माटे प्रश्न करो के जेथी हुं तेज शास्त्र वाक्योना रहस्य पूर्वक आपनी शंकाओनुं समाधान करुं.

विद्वानोए पण तेज मुजब प्रश्न कर्या एटले आचार्य भग-

धाने पण तेज महावाक्यो द्वारा पूर्ण समाधान करी चित्तने आ नंदोदधिमां निमग्न कराव्युं.

आम थवाथी हरीफ रूपे आवेला छतां दक्ष पुरुषो तत्त्वने समजमां लेतां अने आचार्यजीनी अपूर्व ज्ञानबळ, तार्कीक शक्ति अने षट्शास्त्र पारंगतपणुं निहाळी आश्चर्य, आनंद तथा उमंगने तावे थइ एक बीजा मत्ये कहेवा लाग्या–' अहा ! जैनाचार्यो सर्वज्ञ पुत्रोना बिरुदनी दावो धरावे छे ते खचित अक्षरशः सत्य-जछे.' इत्यादि इत्यादि वार्तालाप कर्या बाद सूरीश्वरजीए केटलां-क अवधान करी बताव्यां जेथी विशेष अनंदमान थइ तेओश्रीनो ज-यवाद वदता स्वस्थाने गमन करवानो अभाव छतां न चालते तेओए जवानुं स्वीकारी लीधुं. गुरुराजश्री पण त्यांथी विहार करी तत्त्व वाद वडे दिग्विजय करता कर्म निर्जरा माटे तीर्थ-भूमिमां वि-चरवा सानंदित रह्या. तथा बे अल्प संसारी जीवोने वैराग्य प्राप्त करावी दीक्षावंत कर्या बाद कलकत्ते थइ ग्राम नगर पुर पाटण वगेरेमां विचरता दक्षिणदेश भणी पधार्या.

विजयदेव मुनि गुरुराज श्री पार्श्वचंद्र सूरीजीनी आज्ञाथी दक्षि-णनी अंदर सुखरूप विचरता हता अने त्रण वर्षनी अंदर सवा लक्ष चिंतामणि ग्रन्थनुं अध्यन करी प्रवर पंडित थया हता.

बीजापुर नगरनी अंदर ते समय मजहबी विवाद (धर्म चर्चानो विवाद) चालवाथी पांचसो पंडितो राज्यसभामां एक-

त्रित थया हता, त्यां विजयदेव मुनिनुं आमंत्रण थवाथी जवुं थयुं अने पंदर दिवस लगी स-प्रमाण धर्मविवाद चलावी आखर विजय मेळवी तेमणे सर्व सुज्ञोने आनंद आप्यो.

त्यांना राजाए विजयदेवजीनी अद्भुत विद्वत्ता निहाळी तेमने आचार्य पदनो अधिकार सुपर्द कराव्यो. एथी विजय देवसूरीजी सूरीमंत्रना जापक बनी धर्मबोध फेलावी नागपुर तरफ पधारी धर्मवृद्धिनो समय सानुकूळ मालम पडतां केटलोक वखत त्यांज रही धर्म ध्यानारूढ थया.

विजयदेव सूरीजीए गच्छपति श्रीपार्श्वचंद्र सूरीश्वरजीनुं नागपुर नजीक पधारवुं थयुं जाणी भाविक भक्तोना समुदायने सद्गुरु राजने पुरप्रवेश कराववा महोत्सवरूप स्हामैयानी सूचना करी. एथी अति आडंबर पूर्वक गच्छाधिराजजीने श्रीसंघ पुरमां पधरावी उपाश्रयमां लावी परमानंद पाम्यो.

आपणो अपयश बोलाय तेवां कार्योने जलांजली देवी. जे कार्यमां यश लाभ अने हित समायलुं होय तेज हाथ धरवां. कोइनी निंदा-मश्करी कुचेष्टा-अने मर्म वचनादि पूर्ण हांसी करवी नही. राजसभामां बगासुं-हेडकी-छींक-खांसी हसवुं के नाक कानमां खणवुं वगेरे कृत्योमां विवेक राखवो, कडाका मोडवा नही, पगपर पग चडाववो नही, लांबापग करवा नही, निद्रा विकथा करवी नही, अवसर उचित बोल उच्चरवो, अने पूछया विना के परवानगी मळ्या शिवाय प्रत्युत्तर के कोइ वस्तुने स्पर्श करवो नही. अंग-वाद्य (सीसोटी चपटी वगाडवी नही.), आप वखाण त्यजी देवां. नखथी जमीन खोतरवी नही. हाथ के दांतथी तरणां तोडवां नही. चारण-ब्राह्मण-भाट-भोजक-कवि-मांगण आदिना वखाणथी फुलाइ गर्व धरवो नही. विचक्षण जनोए स्हामाना बोलनो पूर्ण अभिप्राय समजी पछी उत्तर आपवा तरफ मन देवुं. नीच दुष्ट जनना बोलवानो बदलो वाळवा हलकां वचनोनो प्रयोग करवो नही. प्रतीति विनानी के पोतानी सत्ता वगरनी वातमां राय (मति) आपवी नही. विचारीने दरेक कार्य हाथ धरवुं अने हाथ धर्यां पछी विघ्नो आवी पडे तो पण तेनुं परिणाम फतेह साथे भेटाडवा तत्पर रहेवुं. पोताथी बने तेटला गजानुंज कार्य स्वीकारवुं. पांच मनुष्य ज्यां बेठा होय त्यां काम वाळी वेसवुं नही, खोटो वायदो कदि करवो नही.

કોઇના જીવને દુઃખ ઉપજે તેમ વર્ત્તવું નહી. પરાયું ધન, પરાઇ વસ્તુ પર બદનિગાહ કરવી નહી. અસત્ય બોલવું નહી. મધુર-સમયોચિત-હિતકર-સત્ય અને પૂર્વાપરના સંબંધ યુક્ત બોલવું. વડીલોનો વિનય, પૂજ્યજનોની ભક્તિ, સભાજનોની સભ્યતા અને અનુજો, સેવકો વગેરેની લાયકતા જાળવવા ભુલવું નહી. કઠોર કડવાં મર્મવચન બોલવાં નહી. અસભ્ય-અસંબંધી ભાષણ કરવું નહી. દરેક બાબતમાં મર્યાદા બ્હાર જવું નહી. માતા-પિતા-રોગી આચાર્ય-મહેમાન-વૈધવ-તપસ્વી-વૃદ્ધ-બાળક-દુર્બળ-વૈદ્ય-સ્વસંતતી ભાયાત વર્ગ-ચાકર-બહેન-આશ્રિતજન-સગાંસંબંધી અને મિત્ર એઓનીસાથે કદી ક્લેશ કરવો નહી. સૂર્ય સન્મુખ નિહાળવું નહી. ગ્રહણ જોવું નહી સંધ્યા સમય ગંજાવર કૂવાનું પાણી, પોતાનો પડછાયો, કન્યાનું ઉપસ્થસ્થળ એઓ જોવાં નહી. જળમાં, હથિયારમાં, પેશાબમાં કે રુધિરમાં મ્હોં જોવું નહી. પ્રતિજ્ઞાભંગ થવું નહી. યાચનાનો ભંગ કરવો નહી. ઘણાઓની સાથે વૈર બાંધવું નહી. રોળીકોળી વખતે બપોરે કે જંગલમાં અજાણ્યાનો શત્રુજનનો કે મીઠાફાંસિયા મિત્રનો વિશ્વાસ રાખી પંથ પસાર કરવો નહી. ગઇ વસ્તુની આશામાં ગર્ક થઇ જવું નહી. કોઇને ઉંઘમાંથી ખાસ કામ વિના જગાડવો નહી. અજાણી ચીજ રાખવી નહી. અભક્ષ્ય વસ્તુનો સ્વાદ અનુભવવો નહી. કોઇનું નુકશાન કરવામાં કે કરીને રાજી રહેવું નહી. સારાં કામોમાં આગેવાની કરવી સુપાત્રને દાન દેવા ઉત્સુક રહેવું. આવેલા સંકટની બેદરકાર ન રાખવી. જેમ સંપ સબળ થાય તેમ

करवुं. पोतानी ज्ञातिमां सुयश मेळववो. मित्र-साधर्मी-ज्ञातिनो आगेवान-महान् गुणी-अपुत्रीयण ब्हेन अने अभ्यागत एओनु निरंतर पोषण करवुं, बे हाथे माथुं न खणवुं. हजामने घेर हजामत कराववा न वेसवुं. ओरसीआ उपरथी आंगळी वते सुखड के केसर लइ तिलक करवुं नहीं. परायां छिद्र जोवां के प्रसिद्ध करवां नहीं. वस्त्र पहेरीने न्हावुं. साफसूफ रहेवुं. गुरु-सती-धार्मिकपुरुषो अने तपस्वीओनी मस्करीमां पण निंदा न करवी. लोकोमां निंदायला अने राजमां दंडायला जनोनी साथे अन्यजन देखतां वार्त्तालाप करवो नहीं. मूर्खनी दोस्ती करवी नही. एकलाए मुसाफरी करवी नही. अग्नि पाणी शस्त्र विष क्रूरपाणी आदिनी आसनाइ न करवी. सोनी-छकेला पुरुष-छटेली स्त्री-व्यसनी-विश्वासघाती-शस्त्र धारण करेला-शींगाळा जानवर अने शत्रुनो भूल्ये चूक्ये पण विश्वास करवो नही. स्हामापुरे जवुं नही. वळता मकानमां पेशवुं नही. बगासु-खांसी-छींक-ओडकार आस्तेथी अने म्हों अगाडी कपडुं राखीने खावां. नीची नजर राखीने चालवुं. घेर आवेला शत्रुनुं पण सन्मान करवुं. अतिथि भिक्षुकनुं अपमान करवुं नही. स्त्री साथे गुह्य प्रकाशवुं नहीं. अन्य स्त्री साथे एकांतमां वेसी वात चीत करवी नही. माथाना वाळ घडी घडी पकडी आंवळवा नही. दाढी मुंछनावाळ चूंटवा नही, दांतेथी नख काहाडवा नही, जमीनपर चिन करवां नही. प्रसंग विना हसवुं नही. हसवुं ते पण मुंछमांज हसवुं; पण खड खड हसवुं नही. दांतथी होठ न

चाववा. पगथी पग घसीने धोवा नही. कोइने आळचढाववुं नही, गुप्त वात प्रकाशमां लाववी नही. कष्ट पड्ये हामली न जवुं. विपत्ती वखते धीरज धरवी. रात्रे कोइने घेर जवुं नहीं. वगर तेड्ये कोइने त्यां जवुं नहीं. राजा अने राजकुटुंबीओनो पूरतो विश्वास राखवो नहीं. सन्मार्गे प्रवर्त्तवुं. सदा चरण सेववां. सत्संगति करवी. नवराथी वादविवाद न करवो. वैर, विवाह अने प्रीती वरावरियाथी करवां. आळसु थइ सत्कृत्यो व्हेतां मूकवां नहीं. न्यायथी धन उपार्जन करवामां कटिबद्ध रहेवुं. अर्थीने दान देवुं. मळेला धननो अने मळेली विद्या कळाओनो सदुपयोग करवो. अति उडाउ थवुं नही. शक्ति छतां कंगाल कंजुस थवुं नहीं. बळियाथी बाथ भीडवी नहीं. देवाथी डरवुं याचकने नाकारो करवो नही. कषाय-विषय-कंटक पणाथी दूर रहेवुं. स्वदेश–स्वधर्म-स्वज्ञातीनुं अभिमान राखवुं. आज्ञाना पालणामां झुली छोभनी मूर्तिरुप गणावुं नहीं. दीन दुःखीनी व्हार करवी. सभ्यताथी वर्त्तवुं. रात्रीचर्या-दिनचर्या-ऋतुचर्यादिना नियम ध्यानमां राखी जे धर्म वगेरेने के व्यवहारने बाध करनार न होय ते बधा ध्यानमां राखवा. कोइ पण धर्मनी निंदा करवी नही. सर्वनुं मान जाळववुं. राज्यभक्त रहेवुं. पारकानी पीड जाणवी. सार्वजनिक कार्यमां शक्त्यानुसार भाग लेवो. विद्याकळा मेळववामां अत्याग्रही रहेवुं. ठग–धूतारा–चोर-लंपट–चुगलखोर-जुगारी आदिथी विरक्त रहेवुं. प्रपंचजाळमां फसावुं नहीं. पोतानो भरम कोइनी

अगाडी खुल्लो करवो नहीं. जीभ-मन-चक्षु आदि वश्यमां राखवां. देवपूजा-गुरुभक्ति-धर्मसाधनामां सदैव तत्पर रहेवुं. अहर्निश मार्गानुसारीना बोल याद राखी वर्त्तवुं, दरेक कार्य करतां ते ते कार्यना नियम शास्त्रोमां प्रवीण थइ तेमां कहेला नियम मुजब वर्त्ती कार्यसिद्धिनुं रहस्य हासिल करवुं. सर्व जीव तरफ मैत्रीभाव राखवो. आत्मकल्याणमां लीन रहेवुं. उभयजन्म सुधरवा सद्धर्म सेवन करी जन्मसफळ करवो–वगेरे वगेरे मारां आज्ञावचनोने कंठमणि गणि नित्य स्मरणमां लाववां जेथी आनंद आनंद थशे.

वि. सं. १५९४ना वर्षथी पूज्यजीए आगमादिनुं शोधन करी तत्त्व पूर्ण बालावबोधनी रचना करवी शरु करी अने केटलाक नवीन ग्रन्थोनी पण (सिद्धांतानुसार भव्य जीवहितार्थे) रचना करी महान लाभ प्राप्त कर्यो.

तदनंतर विजयदेवसूरीजी सहित चातुर्मासा बाद विहार करी गुरुमहाराज ग्रामानुग्रामने पावन करता अने अनेक जीवने उन्मार्गथी बचावी सन्मार्गमां वाळता (पांचमनी संवत्सरी अने पुनमनुं चोमासी तथा चउदशनुं पाखी प्रतिक्रमण करावता माळवा प्रांतना मांडवगढ पधारी बादशाहने प्रतिबोधी जीवदया पळावी धर्मनी वृद्धि करावता लाग्या. दरम्यान चित्तोडगढपति हिंदुपति बादशाह महाराणाजी श्री संग्रामसिंहजीनी कचेरीमां खरतर गच्छ, तपगच्छ, कडवामति आदि एकत्र थया हता. तेनी अंदर तत्त्व

प्ररूपक वृद्ध नागपुरीय तपगच्छाधिराजने पण जंगम युगप्रधान जाणी निमंत्रण-पत्र पाठवी सन्मान पूर्वक चित्तोड पधारवानी आवश्यकता जाहेर करी. ए सघळुने ध्यानमां लइ लाभ थवानो अनुकूळ समय हाथ करवा पंडित शिरोमणि पूज्यजी क्रमशः विहार करता चित्तोड पधार्या, अने धर्मचर्चा संबंधी सम्माग वादनो तारंजो लावी सर्व धर्मप्रवर्त्तकोने तेमज पंडितो अने प्रेक्षक वर्गने श्वात्यानंद आपी विजयवंत थइ कडवाने मीठा कर्या, आनंदविमल सूरीए पूछेला प्रश्नोना पंचांगी अनुसार उत्तर आप्या, यति विद्यासागर तेमज लोंका लहीआने समजाववा बहु प्रयत्न कर्या छतां ते दुराग्रहने ताबे थतां हठवादी बन्या अने अन्य मतवादियोना मननुं संपूर्ण समाधान कर्युं. (तेमनी साथे करेली चर्चाना ग्रन्थो लखेला तैयार छे.)

राणाजीने वास्तुशास्त्र संबंधी केटलोक खुलासो मेळववानो हतो ते पण गुरुराजद्वारा मळतां अत्यंत संतोष मळ्यो अने आनंद आनंद वरतायो. त्यार बाद जैनधर्मनी ख्याति वधारता, जैनमार्गनी शैली अखत्यार करावता समयने सफळ करवा लाग्या.

वि. सं. १५९८नी अंदर पूज्यजीए सलखणपुरमां पावन कदम कायम कर्या हतां, ते समय त्यां श्रीमन्नागपुरीय तपगच्छाधिराज श्री सोमविमलसूरीजी बिराजमान हवा तेओश्रीए श्रीपार्श्वचंद्राचार्यजीने सर्व प्रकारे योग्यतावत अने उत्तमोत्तम जैन

तत्त्वप्रकाशक जाणी सर्व आचार्योनी सम्मति सह युग प्रधानपद आपवानी विचारणा कायम करी, तेमज ते विचारणा त्यागी वैरागी सौभागी पूज्यजीने जणावी श्रीसंघने ते पदोत्सवनो ल्हाव लेवानी उत्कंठा वधारी, अने खास भलामण करी के-वीराधिवीर श्रीमहावीर स्वामिये प्ररुपेलुं छे के भस्मग्रह उतर्या पछी युग प्रधान प्रभाविक पुरुषो थशे. तो ते वचनानुसार विद्यमान समयनी अंदर ज्ञानपुरंदर सर्वांगसुंदर श्री पार्श्वचंद्रसूरीजी वचनातिशय वंत विद्यमान छे, माटे ते युगप्रधान पदने पूर्ण लायक होवाथी श्रीसंघे आनंदनी झडी वर्सावविज योग्य छे, तेमज तेओश्रीना सुयोग्य शिष्य श्री समरचंद्रजीने उपाध्यायपद आपवानो ल्हाव पण प्राप्त करी लेवोज हितकर छे. इत्यादि लाभ लेवानी तक हाथ करवानी प्रेरणा थतां श्रीसंघे ते महोत्सवनो ल्हाव लेवा मांडयो.

वि० सं० १५९९ना वैशाख सुदी ३ ना मंगळ दिवसे पंचाग शुद्धि आदि तपासी युगप्रधान पदनो अने पाठक पदनो अधिकार जैन-विधि मुजब अख्त्यार कराव्यो.

आ शुभकार्यमां पुण्यप्रभावक अने मार्गानुसारी श्रावक गुणगणालंकृत मोढज्ञातीय शेठ विक्रमशाह तथा शेठ सधरशाह, तेमज श्रीमालिज्ञातीय शेठ हेमाजीना सुपुत्र डोसाशाह अने १ शेठ डवाशाह, २ लाधासाह ३ पाशराज (आ त्रण भाइ हता)

ए छ भाग्यशाळियोए आगेवानी भर्यो भाग लइ जीवनसफळ कर्युं हतुं. आ आनंदोत्सव समय ग्राम नगर पुर पाटण आदिथी निमंत्रणापत्र मळतां धनवानो भाविकजनो आचार्यो साधुओ अने गीतार्थ पंडितो संख्याबंध पधार्या हता. तेमज पूज्यजीना प्रतिबोधथी श्रावक धर्मी थयेला राजा रावराजा राणाजी वगेरे पण त्यां पधारी शुभ प्रसंगने अत्यंत शोभावंत कर्यो हतो. पूजाओ, प्रभावनाओ, स्वामीवत्सळो अने जिनगुणगान-तान धवळ मंगळनां गीत वगेरे वगेरे घणाज चडता परिणाम वडे उपयोगमां लइ आनंदनी रेलम छेलने आगळ वधारता हता. सर्व गनो जीवदयामय थतां अमारी पडहने आदर आपी चोथा आरानुं भान करावना समान महोत्सव उजवी रह्या हता.

सुविहित आचार्य श्री सोमविमळसूरीजीना हाथथी चतुर्विध संघनी अनुमति मळतां जैन-विधि प्रमाणे सुलग्नादिनो संयोग प्राप्त थये पूज्यजीने युगप्रधाननी अने समरचंद्रजीने उपाध्याय पदनी पदवीनो संस्कार शोभाने पात्र थयो हतो. याचकोने दान सन्मान, अतिथियोने भोजनादि अने साधर्मिकोनी सेवा चाकरी आदिवडे आनद आप्यो हतो. तथा पोताने लक्ष्मी मळ्यानी सफलता सिद्ध करी जीवननो लाव लइ श्रीसंघना आगेवानो अहो भाग्य मानवा लाग्या हता.

ए आनंदोत्सवना अवसरे अन्य भाविक श्रावक श्राविकाओए

संख्याबंध नियम व्रत तप आदि उच्चरी शुभ समयने यादीमां राखवा यत्न आदर्यो हतो. धन्य छे एवा पुन्यशालि जनोने के जेओए समयने ओळखी धर्मध्यान आदिनो ल्हाव लइ जीवनने सफळता आपी हमेशां असार संसारनी सर्व वस्तुओ क्षणभंगुर छे एम जाणी तेओ विवेकी सज्जनो पोतानुं धन तन मन उत्तम कार्यमां जोडी निर्मद पणे पुन्यप्रकृतिनो संचय करे छे तेज धन्याति धन्य छे ! ! !

तत्पश्चात् सकळ शास्त्रविशारद युग-प्रवर श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वरजी शिष्य समुदाय सहित विहार करता करता खंभात शहेर नजीक पधार्या. एथी श्रीसंघे अत्युत्साह पूर्वक पुरप्रवेशनो उत्सव करी पूज्य प्रवरने उपाश्रयनी अंदर पधराव्या, अने चोमासु नजीक आवतां संघश्रीना आत्याग्रहने लीधे त्यांज चोमासुं रही पीयूषवत् धर्मदेशनामृत वडे भव्य जीवोने तृप्त करी आनंद पाम्या.

पोताना प्रभाविक शिष्य पैकी श्री विजयदेवसूरीजीनी तबीयत सारी न रहेवाथी तेमणे काळज्ञानादि द्वारा महाकाळनुं स्वर्गमां जवा संबंधी तेडुं आवतुं जाण्युं, जेथी आराधना तप जप वडे कर्मनी निर्जरा करी अणसण आदरी काळ पूर्ण थये पंडित पणे समाधि युक्त काळ धर्मने मान आप्यु.

वांचनार ! राजा महाराजाने पूजवा योग्य, न्याय शास्त्रपारंगत, वादीलब्धीवंत, सातिशयधारी, गुरुराज उपर ती-

क्षण लागणी वाळा, प्रशस्त रागना धरनार, अति विनयशाली, गुरुआज्ञानुसारी, शुद्ध चारित्रपात्रचुडामणि अने शुद्ध शील सम्यक्त्ववंत छतां पण अनहद धर्मरागना पात्रभूत शिष्यनो अनिवार्य विरह थवाथी ज्ञानी गुरुराजना मनने खेद उत्पन्न थया विना रह्यो नहोतो. उद्योतकारक हीराना गुम थवाथी कोने खिन्नता प्राप्त न थाय !

वि० सं० १६०० मां आ बनाव बन्या पछी खंभातथी विहार करी प्रवर पूज्य गुरुश्री अमदावाद पधार्या. श्री संघे स्हामैयुं करी अति हर्ष पूर्वक निर्ग्रंथ सूरीश्वरजीने वस्तिमां पधराव्या. गुरुराजे पोताना धर्म-व्यापारनी प्रख्यात पेढीनो-व्यवहार चोखवट पूर्ण चलावी तेवडे अनेक हलवा कर्मीजीवोने लाभ आपी शुद्ध क्रियानुष्ठानवंत कर्या. (ते अद्यापि पर्यंत दृढ श्रद्धानुरागीनी संतती मजकुर पूज्यजीना पट्ट सेवन करनारी कायम छे.)

त्यार पछी पूज्यजी श्री शत्रुंजय तीर्थ फरसवाना भावथी काठियावाड तरफ विचर्या अने ग्रामानुग्रामने पावन करता पालीताणे पधारी गिरिराज तथा तीर्थपतिने वंदी अंतरंगमां उच्च भावनी श्रेणीमां तल्लीन थया अने त्यां क्षुल्लकसिंहक्रीडित तप प्रारंभ कर्यो. केटलोक समय गिरिराजनी शीतल छायामां आत्मध्यान युक्त व्यतीत कर्या बाद विहार करी गुरुजी वांकानेर

पधार्या अने हमेशना रिवाज मुजब शुद्धोपदेश आपी भविजीवोनो उद्धार करी ग्राम नगर पुर पाटण फरसता वीरजनोने जन्म आपनारी मरुधर भूमिमां पधारी विजय ध्वजा फरकावा लाग्या.

बाळजीवो वांचीने सारी पेठे समजी शके एवां उपकारी इरादाथी पूज्यजीए न्हानां न्हानां सेंकडो काव्य रच्यां छे अने तेनो वंश परंपरा लगी लाभ आपवानो कोल आप्यो छे.

वि० सं० १६०३नी सालमां नागोर पधार्या, जेथी वाजते गाजते स्हामैयुं करी प्रवर पूज्यजीने श्री संघ पुरमां लइ आव्यो, अने वचनामृत वडे बाह्य तेमज अभ्यंतरनो पापमळ निवारी समकितवासनाने अमरपद आपी आनंद पाम्यो

ए मारवाड प्रदेश अंदर उपदेशबळथी ३५०० लोढागोत्रीय महेश्वरी धर्म पाळनारां घर हतां, तेओने. तथा वांठोआ गोत्रीने पण महेश्वरी धर्म परित्यागनो उपदेश आपी शुद्ध जिनभाषित धर्म अंगीकार कराव्यो (तेमज विरमगाममां वीशाश्रीमाळी महेश्वरी धर्मपाळक कुटुंबोने शुद्ध श्रावकधर्म प्राप्त कराव्यो के जेनो परिवार अद्यापिपर्यंत देशाइ टोकर चतुर सात न्यातना शेठ विद्यमान हता, तेओ सर्वने पांचमनी संवत्सरी अखत्यार करावी हती.)

ए सालनी अंदर पोताना वृद्ध गुरुराज श्रीसाधुरत्नाचार्यजी निरंतर धर्मध्यान करता अने सदुपदेश वडे भविजनोनुं कल्याण करता आयुमर्यादाना अंतमां समाधि सहित काळधर्मने प्राप्त

आपी स्वर्ग शोभाववाने माटे आ असार संसारने छोडी देवोने धर्म-महात्म्य दढाववा पधारी गया. सूरीश्वरे तथा संघ समुदाए शोक सहित ,गुरुभक्ति प्रसंगे देहांतनी क्रिया कर्या बाद पूजा भणाववा वगेरे सत्कर्म महोत्सव करी पुन्य संचय कर्युं

विशेषमां ए शहेरनी अंदर निवास करी विविध विषयना जैन-धर्मी ग्रन्थोनी रचना रची, तेमज स्तवनो-सज्झायो-चैत्यवंदनो स्तुतियो-स्तोत्रो वगेरे जोडी जन-कल्याणार्थे जाहेरमां मूक्यां. (ते नवीन रचेला ग्रंथो अने काव्यो पैकी तपासतां नीचे प्रमाणे हाथ लाग्या छे अने विशेष हाथ लागवानी शोध जारीज छे.)

पूजाशतक, एसणाशतक, विविशतक. पच्चक्खाण भाष्य, संगरगमग्रंथ, असज्झायसित्तरी, संघकचरित्र, षट्नय-स्वभावविचार, सप्तपदीशास्त्र, सिद्धांतविचार, सिद्धान्तसार, गुरुदी-पिका, विविविचार, आगमप्रमाणप्रकाशक समाचारि क्रियानुष्ठान विचार, सद्दहणास्वरुप, सम्यक्त्वस्वरुप, नियतानियतविचार, गच्छसमाचारी, आराधना, संख्यासंख्यानतविचार, ब्रह्मलिखित विचार, सिद्धांतोक्तपंचप्रतिक्रमणविचार, आवश्यकहेतुगर्भ शुद्ध परपणा-विचार, केशी परदेशि प्रबंध, इत्यानुसार रचेल बा-लावबोध नीचे प्रमाणे:-श्री आचारंगजी सूत्रनो बालावबोध, श्री

सूयगडांगजीनो बालावबोध, विवाहपन्नतिजीनो-श्री प्रश्नवैयाकर-णनो-श्री दशवैकालिकजीनो-श्री उत्तराध्ययनजीनो-संघयणनो बालावबोध, आगमछत्रीसी, गुरुछत्रीसी, पाखीछत्रीसो, मुहपत्ति छत्रीशी, गुण—स्थानक—विचार—बत्रीसी, संवेग-बत्रीसी, विहरमान बत्रीसी, गच्छाचार पंचासिका, सिद्धांत-आराधन, एकोन चत्वारिंशतिका, साधुवंदना, निश्चयव्यवहारपट्पंचा शिका, असज्झाय सित्तरी, सत्तरभेदीपूजास्तवन, निश्चय व्यवहार—स्तवन, प्रतिमास्थापना-विचार-विज्ञप्तिका, गौतम स्वामी-रास, शत्रुंजय-रास. वीतराग-स्तवन, शांतिनाथ-स्तवन, समाचारी—स्तवन, सद्दहणा-गर्भित-वीरस्तवन, समाचारी आदिनाथ-स्तवन, चित्रकूट चैत्य परिपाटि स्तवन, आदिनाथ विनती, स्तवन-चोवीशी, नेमिनाथप्राकृतस्तवन, फलोधी स्तो-त्र, महावीरस्तवन, शांतिनाथ-विनती, वीरमांगलिक-स्तवन, वा-सुपूज्य स्तवन, चोत्रीश अतिशय स्तवन, शंखेश्वर स्तोत्र, जीरा-वली पार्श्वजिन स्तोत्र, गतिमार्गएकत्रीशी, श्रावक व्रत शतक, भा-वना ओगणत्रीशी, गीतार्थविबोध कुलक, उपदेशरहस्य, संक्षिप्त आराधना, अग्यार—बोल—बत्रीसी, श्राद्ध—यती—रहस्य, पूजाविधि, दीक्षाविधि, योगविधि, उपधान-विधि, पोषहविधि, पंचप्रतिक्रमण-विधि, कालग्रहण-विधि, पंचप्रतिक्रमण-सज्झाय, तथा जिनप्रतिमा—स्थापननी-रासायक दोपनी-दश ब्रह्म-

चर्य समाधि स्थानरुपक मालानी–आज्ञा गीतनी–आत्मशिक्षानी आठमदनी–उपदेश–सारनी–आशातना टाळवानी–गुरु–परीक्षानी शीलदीपिकानी–सम्यक्त्वदीपिकानी–वैरलयनी–प्रथम महाव्रतनी सज्झाय, चतुर्विंशति–जिनस्तुति, लुंपक–पराजय, अने स्तवनमाळा आदि पद्य रचना युक्त छे. तेमज गद्यमां चर्चावादना लखाण रुप तेर बोलनी चर्चा, पाखीचर्चा, मुहपत्ति–चर्चा, लुंपक–चर्चा, लुंपकखंडन–चर्चा, पुनम पाखी–चर्चा, प्रतिक्रमण प्रश्नोत्तरचर्चा, पंचप्रतिक्रमणचर्चा, लुंपक दशस्थानकचर्चा, गच्छचर्चा, त्योतेर बोलचर्चा, सैद्धांतिक प्रश्नोत्तर १३४, पचीश बोलचर्चा, चौद बोलचर्चा, अने विविध चर्चा वगेरे लखेल छे. तथा जंबूद्वीप पन्नतिजीनी वृत्ति, दशाश्रुतस्कंधजीनी वृत्ति संशोधन, वृहद् आराधना अने अन्य आराधना आदिनी रचना करी मिथ्यात्वाध जीवोनी नेत्रशलाका रुप सिद्धांजन प्रकाशमां लाव्या ए सूरीश्वरजीना अपार आभार शुं विसारवा योग्य छे ? कदि नहीं ! उपकार भूलवो ए सुझ्जनोनुं काम नथी. उतां जे बहुळ संसारी जीवो गमे तेम बके तो तेमना हत भाग्यनीज भावना, नहीं तो बीजु शुं गणाय ? ! भाग्यहीनना हाथमां आवेल रत्न वायस उडाडवा माटे उपयोग करे अथवा ताजुदीमां तोल्ना पासंगमां काम लावे, अगर भीलडीना हाथ पडतां चणोठीना हारमां रत्नने गोठवी चणोठी जेटुंज शोभा पात्र मानी

छे तो ते मोतानी मतिनोज दोष गणाय ! हमेशां उत्तम रत्न झवेरीना हाथ जतांज तेनी साची कीमत प्रकाशमां आववा पामे छे. कह्युं छे के—

(लावणी.)

हळदरनी पारख नही ते शुं केसरनी कीमत करशे ?
नही पारखे पीतल ते शुं मूल्य कनकनुं मन धरशे ?
खाखरनी खिसकोली ते शुं साकर मूल्यज उच्चरशे ?
खाय खोळ ते गोळतणी शुं ललित लहेजत केम वरशे ?
एज मुजब अज्ञानी द्वेषी ज्ञानीजनने शुं जाणे,
होय झव्हेरी तेज जवाहीर पिछाणी हेत हृदय आणे ! १
खारा जलनी माछलडी ते मीठाजळने नवचाहे,
भूतप्रेतना पूजक जे जन अर्हंतने नव आराहे;
कामशास्त्रना रागी ते नव तत्त्व ग्रंथने अवगाहे,
ओखरभक्षी डुक्कर ते नव मीठाइ खाश उमाहे;
कीमत नही जे जनने जेनी तेनी पर प्रेमन नाणे, होय. २

तदनंतर गुरुराज नागोरनुं चातुर्मास पूर्ण थवाथी संवत १६०४ नी सालमां विहार करता अने भविक जीवोपर उपदेशद्वारा अनुग्रह करता उपाध्यायजी समरचंद्रजी वगेरे शिष्य समुदाय सह आचार्य महाराज श्री अनुक्रमे क्यां क्यां पधार्या तेनो क्रम नीचे मुजब छे—

(दुहा.)

अनुक्रमे विचरत सुख तपें, (श्री) पार्श्वचंद्र सुरीश;
गुण छत्रीशे शोभता, पूरे मनह जगीश. १

गुण गिरुवा गुरु वंदिये, आणी मन आणंद;
सेवीजे भक्तियें करी, जिम लहिये सुखकंद. २

देश नगर आगर घणा, पाटण सन्निवेश;
द्रोणमुहा आसन कुडंब, मडंब गाम खेडनेश. ३

इत्यादिक स्थानक घणा, प्रतिबोधता मुनिंद;
पंच सुमिति प्रतिपालता, टाळे मिथ्यावंद. ४

माळव देश पधारिया, साथे समरचंद्र नामें;

संवत सोळ तिडोतरे, (१६७३), आचारज पद सार;
सूरि शिरोमणि दीपता, पूज्यजी करे विहार. १०

वाचक वर्ग ! ते समय श्रीजीनी हजुरमां श्री देवराज मुनि, श्री जिनराज मुनि, श्री श्रीसार मुनि, श्री खेमराज मुनि, श्री उदयचंद्र मुनि, श्री हर्षचंद्र मुनि, अने श्री देवचंद्र मुनि आदि मुनिगण विद्यमान हता, तेओ पैकी केटलाकोने पाठक–वाचक उपाध्याय पद, तथा केटलाकोने पंडित पद युक्त कर्या हता अने सहु सहुनी योग्यता मुजब पदना अधिकारी बनाव्या हता.

तेमज खाचरोदना सकल संघ–समुदाय समक्ष महान आडंबर साथनो महोत्सव करी सर्वांग सुयोग्य शिष्य श्री समरचंद्रजी उपाध्यायने शुद्ध क्रियानुष्ठान धारक जाणी तथा गादीने दीपावनार मानी पूज्यजीए पोतानी विद्यमानतामांज आचार्य पदथी अलंकृत कर्या, अने श्रीसंघ पण ते गादीना वारसने निहाळी अत्यानंद पाम्यो; केमके भव्य दिदारवंत, विद्वान अने शुद्ध जैनशैली सह क्रियाकारक हता; तो पछी सोनामां सुगंधनुं भान थतां आनंदनो पार केम रहे ? कह्युं छे के,–

कायानी कीमत नही, कीमत गुणनी खास;
आवळपुष्प सुगध विण, कोइ न राखे पास. १

काजळ कोकिल कस्तुरी, गुणे मेळवे मान;
पीत कनक पीतळ वेउ, गुणमां फेर महान. २

काच अने मणि मध्यमां, अंतर एकज जाण,
गुण मणिमां झाझा वसे, काचमां तेनी ताण, ३

तज्ञ अक्षमां अंतरो, गुणनो छे गुणवंत;
पूजाए प्रति गाममां, गुणथी संत महंत. ४

पुष्पविषे परिमल भळे, साकर पय संयोग;
अति आनंददाता बने, अंगविषे गुणयोग. ५

(संवत १५४६ थी मांडीने १६१२ लगीना लगभग ६७ वर्षना अरसामां पूज्यजीए जुदे जुदे स्थळे चोमासां करी भव्य जीवोनो उद्धार करेल छे; परंतु मजकुर गच्छनो ज्ञानभंडार वीकानेरना उपाश्रयमां हतो तेनी उपर अधीशजीनी गेरहाजरीमां मेघवृष्टिनुं पुष्कळ पाणी (ते भंडार उपरज) पडवाथी भंडारमानी प्रतो मात्र कागळना मावा रुपे थइ गइ अधीशजीने पाछा पधार्या बाद ज्ञानभंडारनी शोचनीय दशा निहाळवामां आवी, एटलुंज नही पण ते सडेलो कागळनो मावो योग्यस्थाने पधरावी देवरावचा अधीशजीने फरज पडी. आथी कीमत्ती प्रतो अने ऐतिहासिक वातोनो नाश थतां घणो खरो प्रत्यक्ष प्रमाण देवा रुप दलीलोनो अभाव थइ पडयो अने एथीज क्रमवार चोमासां तथा विहार तेमज मास तिथि आदिमां अजुवाळुं पाडी शकवा भाग्यशाळी थवायुं नथी. तो पण जे जे निना सप्रमाण हाथ लागी ते ते जाहेरमां लाववा यनती कोशीश करवामां

आवेल छे. यदि कोइ सज्जनो आ संबंधमां कंइ पुरावा योग्य विना लखी जणावशे तो घणा मान अने आभार पूर्वक नवीन आवृत्तिनी अंदर स्थान आपवामां आवशे.)

श्री समरचंद्रसूरीजीनो पटोत्सव थया बाद पूज्यजी लगभग ६८ वर्षना वये पहोंचवाथी एकांतमां रही धर्मध्यानमां विशेष तल्लीन रहेवुं वधारे पसंद करता हता. ए सबबना लीधे नागोरना उपाश्रयने लगती सात कोटडीओ के जे हालमूधी विद्यमान छे तेओनी अंदर बेसी पोतानी धारणा प्रमाणे कलाकोना कलाको अने दिवसोना दिवसो गुजारता हता, अने चिदानंद सुखनी ल्हेरो अनुभवी महतानंद युक्त समयने सफळता बक्षी विशस्थानकनी तपस्यामां पण समपरिणामे शातापूर्वक प्रवृत्ति करता हता.

ते जगोमां केटलोक समय व्यतीत कर्या बाद फरसनानो योग बलवत्तर होवाथी पूज्यप्रभु त्यांथी विहार करी योधपुर शहेरे पधार्या अने सकळ संघ तथा योधाणनाथे घणाज आडंबर साथ स्हामैयुं करी उपकारी वृद्ध पूज्यजीने पुरमां पधरावी वस्तिने शोभावंत करी. भाविक गुरुभक्तोए गुरुभक्ति करी ज्ञानदान मेळवी तथा शुद्धक्रियानुष्ठान आराधी अनंत पुन्य उपार्जन कर्युं.

संवत १६१२ नी सालनुं चोमासुं पण त्यांज कर्युं. ए चातुर्मासनी पुर्णाहुती बाद पूज्यजीनी प्रकृतिमां फेरफार थयो जणायो अने तेमां दिवसे दिवसे उमेरोज थतो रह्यो गुरुराजना जाणवा बहार न

हतुं के हवे आ मृत्युलोकमां वधारे रहेवानुं छे ! तेओश्री कालज्ञान निर्णय वडे सारीपेठे जाणता हता के अमुक मासमां अमुक दिवसे मारे आ मृत्युलोक छोडी परलोकमां जवुंज छे !

उत्तम गतिमांथी आवनार अने उत्तम गतिमां जनार ए बेउनी रीतभात समसामानज होय छे. उत्तम पुण्यप्रकृतिनुं भुक्तपणुं अने उत्तम पुण्यप्रकृतिनो संचय ए उभयगतिनांज चिन्ह छे ! अने ज्यारे सत्कृत्य करनार सद्गतिनो भोक्ता न थाय तो पछी सद्गतिनो भोक्ता थायज कोण ? दुष्कृतवंतने माटेज नरक तैयार छे. जेथी निश्चय जणाइ आवे छे के जेनी शुमति कायम रही होय, सद्धर्म उपर पूर्ण श्रद्धा होय, सत्कृत्य करवामांज सदैव चढता परिणामे अभिरुचि रहेली होय अने अंत समय लगी एवीने एवीज परिणति परगम्या करती होय तो बेसक सद्गतिनो परवानो मेळव्योज मनाय छे.

'वहाला वांचनार ! ए वर्ष आपणा परमोपकारी पूज्यजीना सदाना विरह थवा माटेनुज हतुं ! मागसिर मास अने शुदी ३ नी रात्रि ते कालरात्रीनी गणनामां गणावा वास्ते निर्माण थइ चुकी हती ! अने योधपुर पूज्यजीनुं देहांतस्थळ तथा मुख्य धूम माटे छेल्लमां करराइ रहुं हतुं. पछी ते वर्ष मास दिवस आजे पण आपणने शालगरेह होवाथी साक्षरूप करो के योरसद्गितभक्ति क्रियायोग साधवाना समयरूप रहो पण स्मरणरूप थइ रहेल छे !

गुरुराजनी तवियत दर्दने तावे थवा छतां पण योगबळवडे ते दर्दथी वेदर्दी रही धर्मध्यानमां तल्लीन रहेवानो सबल अने अटल यत्न चालुज राखी गुरुदेव भविजीवोने शुद्ध क्रियानुष्ठानमां तत्पर रहेवानी भलामण करी श्रद्धा दृढावता हता, अने "हवे मारा स्थूळ शरीरनो विरह थशे जेथी उदास न थतां धर्मध्यानमां मशगुल रही मने विशेष धर्मना हिस्सानो भागी करशो" वगेरे वगेरे अंतिम वचनो वदी चार शरणने शरण थइ समाधिपूर्वक अणसण संलेखना-दिना उपयोग पूर्वक सिध्धचक्रजीनुं सद्बीज अर्हं अर्हं अर्हं ए शब्दोनुं ध्यान करता काळधर्मने मान आपी पूज्य गुरुराज देवलोकना वासि थइ स्वर्गनां सुख अनुभववा लाग्या.

जो के पोते तो सद्गतिनिवासि थया जेथी आ लोक करतां देवलोकमां महान् सुखानंद विद्यमान हतो; तथापि भक्तजनोने स्थूळ शरीरनो तथा गुरुराजना मुखथी अमृतधारारूप जिनप्ररुपित विशुध्ध वाणि प्राप्त थवानो अटल विरह थवाने लीधे गच्छपतिश्री जीना स्वर्गगमनथी सकळ संघ उदासीने आधीन थइ रही कालनी अकळ लीलाने यादीमां लावी वैराग्य दशानो संगी थयो.

अति हर्ष अने अति दिलगीरी दिलने पिगळावी आंसुना प्रवाहने वहेवरावे छे ए सदानो नियमज छे! गुरुविरहनी अति दिलगीरीमां पण आंसु न पाडवां जाणवामां छतां पण भान विगतिवंत थवाने लीधे भक्तजनोनी आंखयोमांथी पराणे पराणे पण उष्ण आं-

सुडां चोधारथी वहेतां जणातां हतां. सारी वस्तुनो वियोग कोने प्रिय होय !

महात्मा तुलसीदासजीए पण रामायणनी अंदर सज्जन दुर्जननो मुकाबलो करतां कह्युं छे के–

'वंदुं संत असज्जन चरणां, दुखप्रद उभय बीच कछु वरणां;
बिछुरत एक प्रान हर लेही, मिलत एक दारुण दुख देही.

हुं सज्जन अने दुर्जनना चरणोमां नमन करूं छुं. जो के कथन मात्रथी सज्जन सुखशांतिदाता अने दुर्जन दुःख–अशांतिदाता छे; तथापि वास्तविक रीते बारीकी तपासद्वारा ए बेउनो मुकाबलो करूं छुं तो मने ते बन्ने दुःखना देनाराज छे एम लागे छे; छतां कंइक समयसंधिमां तफावत छे, ते ए के–सज्जनना वियोगथी अपार दुःख थाय छे अने दुर्जनना संयोगथी अपार दुःख थाय छे. फक्त संयोग वियोगमा सकार वकार विना अन्य कशो तफावत नथी माटे ए बेउ दुःखदाइ छे अने विश्वनी विचित्र घटनारूप विद्यानो एओ उत्तम बोध अपावे छे जेना लीधे हु एओनो आभार मानी स्नेहयुक्त तेमना पद वंदन करूं छु. केमके दुर्जन के सज्जनथी कंइक परिणामे लाभ थवानो संयोग हाजरी आपतो होय तो बेशक कुलीन–ज्ञानी–विवेकी जनने ते गुणना प्रसंगे तेनो आभार मानवोज योग्यज छे ! ' तात्पर्य एज छे के संतजनोनो वियोग पण अति दुःखदाता होय छे, अने तेमां पण प्रमाणिक पुरुषोनो वियोग तो असह्य होय छे, एथी

भाविकभक्तोने जो शोकाश्रु संतापे तो ते कंइ नवाइ जेवुं नथी. एवा समयमां समजु—ज्ञानवंत मानवनुं हृदय पण भराइ आवे छे अने तेनो उभरो आंसुना रूपथी बहार नीकळतो जणाय छे.

पूज्यजीनो स्वर्गवास थतां उपाश्रय, शहेर अने घरोघर तथा राजभवन वगेरे तमाम स्थळमां थोडा घणा अंशे पण शोके डेरो दीधोज जणातो हतो. डाह्या शत्रुओनां दिल पण तर्क विवादना तत्त्वज्ञादिना अभावने लीधे दुःखमां भाग लेतां थयां हतां अने ते दिवसे सावत्र व्यापार बंध राखवा हडताळ पाडी हती, तथा केटलाक दिवस लगी जोधाणनाथे जीवने अभयदान अपाव्यानो जाहेर ढंढेरो पीटाव्यो हतो.

तीर्थंकरश्री, चक्रवर्ति, वासुदेव, इंद्र आदि अनेक महान् आत्माओ पण काळधर्मने मान आपनारा थया छे तो पछी सूरीश्वरजीने तेम कर्या विना केम चाले ? काळना चवेणारूप प्राणियोनुं शरीर एक दिवस तेनी दाढ नीचे चवाया विना रहेनारज नथी. विचार करो के आपणा देखतां जगत चाल्यो जाय छे अने जगतना देखतां आपणे पण चाल्युज जवुं छे, ए अनिवार्य हुकम लखाइ अमल्मां आपवाना शेरा साथ तैयारज रहेल होय छे ! जे जन्म्यो अने नाम धराव्युं ते तमाम काळना नियम मुजब नाशपणाने भेटनारज छे ! काळ सर्वने खाइ जाय छे, पण काळने खानार मात्र सिद्धना जीवोज छे ! जेनो आ दुनियामां खप छे

तेनो पेली दुनीआमां (परलोकमां) पण खप छे ! सूरीजीना समागमथी भविजीवोने अपार आनंद मळनो हतो; पण अदेखा दैवथी ते सहन थइ शक्यु नही, जेथी ते परस्परना संयोगनो वियोग करी गाल वजावा लाग्यो. ए जोइ भाविको दुखाते दिलडे अदेखा दैवने कहेता हता के–" अरे दुष्टात्मा! अमारा अभीष्ट कार्यने अनिष्ठ भाव भेटाडवा तें तारो भाव भजवी जगतजीवोनुं अकल्याण कर्युं तेमां तने शो लाभ मळ्यो ? जे दुष्टो अहंकारवळथी आखा विश्वनी अंदर न समावानो दावो धरावता होय तेवा भूमिना भाररूप जीवोने साडात्रण हाथनी खाडमां समावानो उद्यम कर्यो हत तो तारा प्रयासने पंडितो पण प्रशंसानेपात्र मानत; पण जे छ कायना जीवोने पाळनार, शत्रु मित्रने समान गणनार, शुध चारित्र मार्गना विचारने आचारमां आणनार, स्व-परनुं सदा श्रेय करनार, धर्मव्यापारना महान् व्यापारी, समताना सागर, कृपानिधान, उपकारीशेखर, सुगुणरत्नरत्नाकर, सिद्धांत-दधिमथन करनार मंदिराचळरूप अने तरणतारण गुरुदेव, तेमने आ जगतमाथी हरी लइ अनेक जीवोनुं अनिष्ठ कर्युं, एथी धिःकारने पात्र थइ शुकुना अपमान रूप मनायो छे. सो मरजो पण सोनो पाळनार न मरजो ए कहेवत पण ध्यानमां न राखतां लाखोना हितकरनारने लोप करी लाभ मान्यो! अमारा भाग्यसूर्योदयने ग्रसवा राहुरूप नीवडी ग्रास ग्रहणनुं रूप बताव्युं ए अत्यंत नीच पगलुं

भयुं छे ! परोपकारी पुरुषरूप कमळने दग्ध करवा हीमरूप नीवडी शीतळता अने शोभानो अंत आण्यो एमां ते तारूं शुं पुरुषार्थ ! ! धिःकार छे ! फिटकार छे ! ! लख ल्यानत छे ! ! ! " इत्यादि काळना कराळ कृत्यने निंदतां अने प्रभुस्मरण करतां अंत्यष्टि संस्कारना साधनोनी तैयार करवा लाग्यां. पुष्कळ खर्च साथ शीबीका तैयार करावी गुरुराजना स्थूळ शरीरने पवित्र तीर्थजळवडे न्हवरावी साधुवेश धारण करावी पालखीमां पधरावी, बरास कस्तूरी चंदनादि विलेपन करी उत्तमोत्तम वस्त्रनो कपडो परिधान कराव्यो. वाजते गाजते जयजयनंदा जयजयभद्दा उच्चरते, सोना चांदीनां फुल तथा रुपिआ म्होरो पैसा वगेरे उछालते अने धान्यादिनां दान देते महाजन अने राजन सहित जे जगोए पूज्यजी ध्यानारुढ थता हता ते डुंगरी उपर लइ जवानो मार्ग अखतियार कर्यो.

ए समय शहेरनां, आसपासना गामोनां हजारो भाविकजनो गुरुराजना मुखारविंदनां अंतिम दर्शन करवा जगोजगे पार वगर मळेलां जणातां हतां अने वैराग्य तेमज शोकपूर्ण हृदयथी नमन करी गुणानुवाद वदतां हतां.

आस्ते आस्ते पंथ पसार करी निर्मेल स्थळे अग्निसंस्कार निमित्त पूज्यजीना स्थूळ शरीरने लइ जइ अगर चंदन तगरना काष्टनी चिता रची क्रिया करी चितापर शीबीका धरी अग्नि प्रकटावबामां आव्यो अने जोत जोतामां चिताग्निये पूज्यजीना स्थूळ देहने

भस्मीभूत करी दीधो. पछी पूज्यजीनो अमर आत्मा स्वर्गलोकमां जइ पहोंची स्वर्गनी शय्यामांथी उद्भवी स्वर्गनी साहेबीनो उपभोग करवा लाग्यो.

तदनंतर भाविको पूज्यजीनी चिताभस्म फुल आदिने उत्तम स्थळे वहेवरावी जैनविधिने अमल आणता पोतपोताना घरभणी पाछा वळ्या अने जिनमंदिरोमां पूजा महोत्सवादि सुकृत्यकरी, दान ध्यान अने ज्ञानगोष्टि वडे शोकनुं शमन करवा लाग्या.

जे जगोए देहनो अग्निसंस्कार करवामां आव्यो हतो ते जगोनुं सदाने माटे स्मरण रहेवा श्रीसंघे एक स्थूभ रचावी भावी जीवोने कल्याणनो मार्ग खुल्लो मूकाव्यो. ते स्थूभ अद्यापि विद्यमान छे, अने देश विदेशनां श्रावक श्राविका साधु साध्वीओ वंदनार्थ आवी मननी भावनाने उत्तमदशा स्वाधीन कराव्या करे छे. तेमज ते पगलांना सेवक क्षेत्रपाल भैरव वगेरे देवो पूज्यजीना भक्तोनुं इच्छित कार्य सिद्ध करवा तत्पर रहेवाथी महीमा वधतां जिनशासननी उन्नतिनी पताका फरकावनारो पवन प्रसर्या करे छे.

मजकुर गुरुराजनी स्थूभो वीकानेर, नागोर, मेडता, पाली, सोजत, रूण, देसणुं, भीनासर, जोधपुर, बुधनाउर, चित्तोड, उज्जेन जैपुर, मुर्शीदाबाद, आग्रा, अजमेर, सांभर, रीयां, पालीताणा, मांडल, वीरमगाम, ध्रांगधरा, लीमडी, उनारा, बीजापुर, अमदावाद अने खंभात एटला स्थळोमां विद्यमान छे, अने भाविकोनी भावना प्रमाणे चमत्कार साथ स्वार्थ सिद्धि सफळ कर्या करे छे.

'गुरुराजना स्वर्गगमन बाद योधपुराधीशनी उपर दिल्हीनो पादशाह कांइक कारणसर रुष्टमान थइ राज्य उपर थाप मारवा तत्पर थइ सबळ सैन्यनी चडाइ साथ जोधपुरनी चोमेर मोरचा मांडी प्रजाने रंजाडवा लाग्यो.

योधपुरपतिये तेनी लश्करी छावणीना जबरा घेराथी न डरतां पोताना सबल सहायक स्वर्गवासी पूज्यजी श्रीपार्श्वचंद्रसूरीजीनुं एकाग्र चित्तवडे ध्यानधरी मनोबळने बळवत्तर बनाव्युं. एथी ध्याननी सुरताना बळथी धृजरी पेदा थतां स्वर्गमां रहेला गुरुने अरजंट तार मळ्यानी पेठे भक्तना दुःखनी एक खबर मळी के भक्तभीडभंजन प्रभो जरा पण वार न करतां साधुवेशथीज राजानी अगाडी आवी प्रसन्नता पूर्वक कह्युं के–' सेवक ! जराए चिंता राखीश नहि ! सर्व आफत दूर थशे. ' राजाए तथास्तु कही सहर्षथी वंदन करी वीनव्युं के–' भीडभंजन भगवान् ! आप कइ गतिमां कये स्थळे विराजो छो ? ' गुरुए कह्युं–' हु त्रीजा देवलोकमां निवसुंछु.' एटलुं कही अदृश्य थया अने राजा ते स्वरूपने हृदयमां स्थापी आनंदमां लीन थइ अहोभाग्य मानवा लाग्यो.

बीजे दिवसे चडी आवेला दिल्हीपतिना लश्करमां गुरुराजना प्रतापथी एवी तो फुटमफाट थइ आवी के पर पर कतल चालतां भारे भंगाण पड्युं. बादशाही लश्करनो आगेवान जीव लइ नाठो अने खाखा वींखी थवाथी कोइ एक बीजाने तपासता पण न रह्यु.

आम थवाथी मरुधरपतिनी गुरु उपर महान् श्रद्धा भक्तिभाव वध्यो ने पूज्यपादनी पादुका आगळ जइ स्तुति-विनती उत्सव करी पूजा प्रभावना दान दक्षणानी उदारता जाहेरमां लावी श्रीसंघ समक्ष गुरुमहीमा वर्णवी जोधाणनाथ आनन्द पाम्यो.

श्री पार्श्वचंद्रसूरीश्वरजीए उत्तम प्रकारनी हद उपरांत अने निराशा युक्त (कोइ पण आशाने नही अवलंबी) तपस्या करेली हती. ते पैकी रत्नावळी, कनकावळी, सर्वतो भद्र, क्षुल्लकसिंहविक्रित मुक्तावळी, वीशस्थानक तप, अष्टकर्मसूदन तप, वर्द्धमान तपनी ओळी, अने एकवीश उपवास तप करी कर्मने जर्जरीभूत कर्या हतां.

तेमज दिवसे सूर्यकिरणोना प्रखर ताप वखते तपेली जगामां आतापना परिसह, रात्रीमां शीतपरिसह, अने हमेशां रात्रीए शहेर के गाम बहार जइ शुद्ध भूमिकामां कायोत्सर्ग किंवा उत्तम ध्यानमां लीन रहेवुं एज क्रम शरु राखेलो हतो.

निरंतर श्री साधुरत्नाचार्यजीनी समक्ष योगोद्वहननी, सूरीमंत्राराधननी तपस्या करी तेनी साथे २०-१९-१८ लागलगट आचाम्ल (आयंबिल तप) अगर १ के २ उपवास अने एकाशन, विकृति त्याग वा उणोदरी आदि तप आदरपूर्वक करता हता.

उदीरणा करी वाद विवाद कोइ साथे पण तेओश्री करता न हता. प्रतिवादि केवळ शब्दवादी (तत्ववादी न) मालम पडे तो मौनज धारण करता, तथा राजा-महाराज-राणा-महाराणा वगेरे ध-

र्मोपदेश लेवा आवता अने तेओना धर्मगुरु हता छतां पण ते संबंधी जरापण गर्व न हतो.

विशेष आनंद पामवा जेवुं तो ए छे के तेओश्रीए कोइ धर्म कार्य किंवा अंजनशलाका के प्रतिष्ठा वगेरे करावेल छतां अन्य ख्याति चाहक आचार्यो गीतार्थोनी पेठे तेमां पोतानुं नाम पोते क्यां य आरोपण कराव्युं नथी एज प्रशंसनीय निष्पृहता हती.

पुनः शरीर कोमळ–तत्वज्ञ–सकलशास्त्र विशारद, पूजनीय होवा छतां पण आतापनादि तपवडे देहने दमवामां पाछा पडे तेवा न हता. (आ महान् गुण उग्रज्ञान गर्भित वैराग्यवंत त्यागीमांज होइ शके छे.)

ए सूरीश्वरजीनो स्वभाव स्वाभाविकपणे विचारशील हतो; तथापि " बाबावाक्य प्रमाणं " ए अंध न्यायने अवलंबी पोताना विवेकी विचारोने अटकावता न हता; पण विशाल क्षेत्रमां विचारवी तेमांनुं तत्वग्रहण करवा आग्रही बन्या रहेता हता. ते साथे ए पण तेओश्रीमां महान् गुण हतो के कोइ पण विचारणाने हठपुर्वक 'हुं कहुंछुं तेज सत्य छे !' एम कोइने उद्देशता न हता. किंतु उलटी भलामण करता हता के मारा विचारमां आम बेसे छे छतां जे बहुश्रुतो कहे ते सत्य ' एवी उद्घोषणा करता हता.

तेमज व्याख्यान देवानी अजब छटा, चतुराइ अने बहोळा प्रमाणोना भंडोल युक्त हती के जे विषयने हाथ धर्यो ते विषयनो

आवेहुब विचार श्रोताजनना हृदयमंदिरमां खडो करी देता हता. इत्यादि इत्यादि अवर्णनीय, अपूर्व, अद्भुत, अने असरकारक वचनातिशयादि अजब गुणो विद्यमान होवाथी पोतानी प्रभावशक्ति अन्यना मनमां एकदम दाखल करी मननी अंदर रहेली धर्मोन्नति विचारणानुं बळ पसरावी देता हता.

ए पूज्यश्रीना एकंदर महान् प्रमाणिक सत्तर शिष्यो हता ते ए के श्रीविजयदेवसूरीजी १, श्रीसमरचंद्रसूरीजी २, ब्रह्मर्षि वाचक श्री देवराज मुनिजी ३, वाचकश्री जिनराजमुनिजी ४, वाचक श्री श्रीसार मुनिजी ५, वाचक श्रीखेमराजमुनि ६, वाचक श्रीउदय चंदजी ७, वाचक श्रीहर्षचंद्रजी ८, वाचक श्रीदेवचंद्रजी ९, पंडित जी श्री हेमराजजी १०, पं. श्री मालर्षिजी ११, पं. श्री भूषणचंद्र जी १२, पं. श्री हरपालचंद्रजी १३, पं. श्री महीपचंद्रजी १४, प. श्री हेमचंद्रजी १५ अने पं. श्री वासवचंद्रजी १६, आ सोळ मुख्य शिष्य हता एओ पैकी हजु लगी कोइ कोइनी शिष्यसंतती विद्यमानछे.

वाचकवृंद ! आ प्रमाणे श्री पार्श्वचंद्रसूरीश्वरजीनुं संक्षिप्त चरित्र जाहेरमां आवेलुं छे. हवे आपणे आ चरित्रनी अंदरथी शुं शुं सार ग्रहण करवानो छे ते खास तपासवामां पूर्ण लक्ष देवानी जरुरज छे. केमके ज्यारे आपण अगर कोइ पण व्यापारी व्यापारनी वस्तुओ खरीदी वेची दुकानने वधावे छे त्यारे, अथवा तो वर्षनी आखरे ते ते वस्तुनी खरीदी अने वेचाणमां केटलो मुनाफो (नफो) मळ्यो

तेनुं सरवैयुं तपासी जुवे छे तेथी नफा नुकसाननी मालम पडे छे. माटे आपणे पण आ चरित्र वांचवा तपासवा ने मनन करवाथी शुं लाभ प्राप्त थयो अगर शुं लाभ मेळवी लेवानी खास आवश्यकता छे ते ध्यानमां लेवुंज योग्य छे.

प्रथम ए धडो लेवानो छे के-पुण्यवानजीव गर्भमां आवतांनी सायेज माता पिताना सद्विचारो सुख संपत्ति सदाचारोनी तेजी करी धर्मनी उन्नति करावववानी प्रेरणा करावे छे. सारां स्वप्नोथी-सारा डोहलाओथी-सारी करणीथी पोतानुं सद्‌गतिथी आववुं, तेमज भाविमां नामांकित नीवडी सद्‌गतिदाता कार्य करवां वगेरे वगेरे अगाउथीज जाहेर करी दे छे.

बीजुं-तेवा पुण्यात्माना जन्म-समय शुभलग्नादि हाजरी आपे छे, धन धान्यादिनी वृद्धि थाय छे, कुसंप क्लेशादि नाश पामे छे, सर्वने रुचिर मूर्ति आनंद आपे छे, विद्याध्ययन समय पूर्वनी पुन्य प्रकृति बलवान होवाथी इसारा मानवडे भणतरमां प्रवीण थइ अध्यापकने चमत्कार उत्पन्न करावे छे.

त्रीजुं-संन्यस्तादि योगोना संयोगवाळा मनुष्यने अवश्य संन्यस्त दिक्षा ग्रहण करवानो योग हाजर रही सद्‌संयोगनी सानुकूलता सफळ करे छे.

चोथुं-हळवाकर्मि पुन्यवंत जीव गुरुदेशना श्रवण करी तेमानुं तात्पर्य शोधी प्रतिबोध पामे छे अने तुरतज पोताना सुविचारो

आचारमां मूकी ' उपदेश श्रवण करी शुं तात्पर्य मेळववुं ' तेना प्रत्यक्ष पुरावा रजु करे छे, जेथी घणा जीवो दर्शनीक दाखलो जोइ पोतानुं श्रेय करवा तरफ दोराइ आत्मोन्नतिक्रमने आदर आपवा उत्सुक थाय छे.

पांचमु–सारा शिष्यो सारा गुरुनी अने सारा गुरुओ सारा शिष्यनी शोध अंदर सतत काळजी धरावे छे; केमके सरखा संयोगनी प्राप्ति विना सांपडवो जोइतो लाभ आमनी अंदर लुप्तमान् थइ रहे छे.

छट्ठुं–प्रभाविक अने जगदुद्धारक महात्माओ मात्र उन्नतिक्रमनेज आगळ वधारी धारेली धारणामां सफळता शी रीते (सरलता साथ) प्राप्त थाय अने जनकल्याणनो सुपथ केम खुल्लो मूकतां जीवोनो उद्धार थाय तेनीज तद्वीरोमां तल्लीन रहे छे.

सातमु–साहसीक सत्ववान् आत्माओ पोताना सबळ मनोबळ वडे मानवो दानवो देवोने सहेलाइथी स्वाधीन करी शत्रुने पण मित्र बनावी दे छे. केमके तेओ आखा विश्वने पोतानी विचारणाने मळतु करवा तेवाज तनोनी हीलचाल करे छे के शत्रुता धरावनार पण मित्रनी गरज सारे छे.

आठमु–जेओनी रहेणी करेणी शुद्ध अने अपवाद रहित छे तेओनी वाणि माणिमाळना हितरूप नीवडी अंत:करणमां जबरी छाप बेसाडी शके छे. नहीं के वचनमा छे ते मनमां नथी अने मनमां छे

ते तनमां नथी. पोथीमानां रींगणानी पेठे कहेवुं जुदुं वर्त्तवुं जुदुं अने मात्र स्वार्थ सिद्धिनीज वृद्धिनो मार्ग हाथ धरी दापटीपमां रहेवानो डोळ देखाडवो. ज्यारे पोतेज बूझ्यो नथी, पोतेज सिद्ध वचनोने वधावी लइ तेमां लीन बन्यो नथी अने तन मन वचननी समान स्थिति करी नथी त्यारे ते स्हामाने बूझवी शुं सच्चोट छाप बेसाडी शकशे ? केमके वंचकनी पेठे पोतेज पोताना कार्यने, शास्त्रने अने वाक्यने अंदर-पेटे असत्य माने छे, तो पछी ते असत्याभापनी प्रभा सत्यरूपे शी रीते हाजरी आपवा समर्थ थाय ! ! जेनी त्रिकरणशुद्धि भरी रहेणी कहेणी होय छे तेनीज देशना सफळताने भेटे छे !

नवमुं–पोतानी संतति के शिष्यसंततिनी पोताना करतां विशेष ख्याति उन्नति श्रवण थती निहाळी प्रसन्नता पूर्वक तेनी उन्नतिनो विजय थवा योग्य यत्न प्रयत्नो आदरवा. केमके शिष्य अने पुत्रनी अगाडी गुरु तथा पितानो पराजय थाय तो ते अहोभाग्यनी निसानी छे. नही के तेनी उन्नतिने आडे आवी पोतानोज यश विस्तारवा गर्व राखवो.

दशमुं–पोतानुं श्रेय करवा साथ अन्यजनोनुं पण श्रेय चाही तेमने शुद्ध योग मारफत मळेलो लाभ दर्शावी अध्यात्म ज्ञानमां मस्त रहेवुं. नहीं के एकलपेटा थइ अन्यने लाभ न आपतां पोतानो स्वार्थ सिद्ध करवो.

अगीआरमुं–दीक्षित थवा चाहनारनी अंतरंगवृत्तिने तपासी.

तथा तेना काममां धर्मोन्नति करवानी पुरुषार्थता प्राप्त थवाना चिन्होनी आगाही हाजरी आपे छे तेनी प्रतीति मेळवी सगां संबंधी ने श्री संघनी सम्मति मळतां दीक्षा आपवी; नहीं के अंतरंगनो खरो रंग तपास्या विनाज नसाडी भगाडी गुपचुप दीक्षा आपी जेम बने तेम संघाडो गाढो करवो.

बारमुं–परोपकार निमित्त गमे तेटलो श्रम उठाववो पडे किंवा हरकतो नडी हैडानी साथे भेटाडे; तथापी परश्रेयमां मतिवासर अडग रही सन्मार्ग दर्शक ग्रंथो, काव्यो, के लेखो तैयार करी करावी अनंत जीवोने उन्मार्गथी अटकाववामां उद्यमवंत रहेवुं.

तेरमुं–दिन प्रतिदिन आचार विचारनी शुध्धतामां सुधारो वधारो कर्या करवो. शासनोन्नति थवा समय सत्वर सत्यविधाने जाहेरमां लावी सर्वना मनमां चमत्कार पेदा करी दृढ श्रध्धालु बनाववा खंत राखवी, शुध्धोपदेशने मक्कमपणे फेलावी अमलमां अणाववा यत्न आदरवा, सद्गतिसाधननी सानुकूलता मेळव्ये जवी, सदैव धर्मानुरागने सतेज राखवो, अने धारेली धारणाने फतेह आपी परलोकयात्राने प्रशंसापात्र करवी. वगेरे वगेरे बोध लइ आ चरित्रवाचनना श्रमने सफलता आपवी, राग द्वेष दूर करवो, तत्वग्राही थवु, गुणानुरागी थइ प्रभाविक पुरुषो तरफ प्रेमनी लागणी धराववी अने निंदा विकथाथी दूर रही सदैव उन्नतिक्रमयुक्त आत्मकल्याणनी करणीने लेखे लाववी एज मानवभवनी सफळता छे !

प्रिय पाठकगण ! चालता संक्षिप्त चरित्रने आदिमां मंगळा चरणथी मंगलरूप कर्युं छे, तेवुंज अंतमां पण मंगलाचरणथी अलंकृत करी वाचक वर्गनुं मंगळ चाहवुं ए मैत्री अने प्रमोद भावनानी धर्मियोनुं अंग छे जेथी कहेवुं जरुरनुं छे के–

(दुहा.)

परोपकारी पूज्यजी, सुखसागर गुणखाण;
वक्ता–श्रोता–वर्गनुं, करो सदा कल्याण ! १
मतिपळ शासनप्रेमिने, आपो अधिक सुऋद्धि;
चारु कळा चडती करो, द्यो नवनिधि अडसिध्धि. २
आश्रितनी आशा सकळ, सफळ करो सूरींद;
वृध्धि धर्मव्यापारनी, करजो नित्य फर्णींद. ३
ओगणीसे अगन्योतरे, मास आषाढ उदार;
सित पख सप्तमी भृगुदिने, लख्यो लेख सुखकार. ४

(छप्पय छंद)

वाडव सहस्र उदीच्च यजुर्वेदी अकलंकी,
गुणी गोत्र भरद्वाज पुरोहित पद अवटंकी;
शाखा माध्यंदिनी प्रवर त्रण पावनकारक,
कात्यायिनी वर सूत्र इष्ट विष्णु उध्धारक;
चामुंडा कुळदेवी छे अचलेश्वर पितु–कुळउदित.
चारु लख्युं चरित्र आ पूर्णचद्रे परमार्थहित. ५

शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

श्रीमन्नागपुरीयतपगच्छाधिराज श्रीपार्श्वचंद्र सूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमो नमः ॥

श्री
श्री पा श्री
श्री पा स पा श्री
श्री पा स चं स पा श्री
श्री पा स चं द चं स पा श्री
श्री पा स चं द सू द चं स पा श्री
श्री पा स चं द सू री सू द चं स पा श्री
श्री पा स चं द सू री श्व री सू द चं स पा श्री
श्री पा स चं द सू री श्व र श्व री सू द चं स पा श्री
श्री पा स चं द सू री श्व र स र श्व री सू द चं स पा श्री



सद्गुरुभ्यो नमो नमः



॥ संक्षिप्त चरित्र समाप्त ॥

॥ सद्गुरुश्री श्रीपार्श्वचन्द्रसूरिजीनां स्तवन ॥

॥ शिखरणी छंद ॥

सदाशा पूरोजी मन वचन काया शुचिकरी ।
तुमारी सेवाकुं अहनिशि करे ध्यान धरके ॥
महाज्ञानी ध्यानी परमपद दानी गुरु तुमे ।
सुपार्श्वाख्यंचंद्रो दिनकर युतो मोद कुरुते ॥

॥ पुनः ॥

क्रियापाली सूधी सकल गुणधारी जिनमते ।
असारंसंसारंनिजमनसिध्यात्वा व्रतधरा ॥
समाधत्ते वानी सकल सुर संभूय सहसा ।
सुपार्श्वाख्यंचंद्रो दिनकर युतो मोद कुरुते ॥

॥ भविकानी देशी. ॥

सद्गुरुकुं तुम ध्यावोरे अवधू । सद्० । जिम तुम गुरु गुण पावोरे । अवधू । सद्० । ए टेक । आठ कठिन शठका मठ तोडो सुधा सरवर नावो । संज्ञावणिककला मत शीखो नरहगुपासन जावोरे ॥ अवधू ॥ सद्० ॥ १ ॥ वसुधा कुंजर महामदमाता उसके वश मति आवो ॥ पावरू पश्यतहरकुं परसें । वाहरलघु

निकलावोरे । अवधू ॥ सद्० ॥ २ ॥ अध्यातम अनुभव रथ आगे धोरी उभय लगावो ॥ सद्गुरु सुनिजरसंता होवे । तव तुम निरमल थावोरे । अवधू ॥ सद्० ॥ ३ ॥ वडतपगछ नभ दिन मणिजैसा । गणधर गुणकुं धरावो ॥ श्री पासचंद्रसूरीश्वरसाहिव सुमति गुपति मन भावोरे ॥ अवधू ॥ सद्० ॥ ४ ॥ गुरुसेवासे मेवा पावे । दुरमति दुरित भगावो ॥ आणंदघन आनन्द लहरमें । सद्गुरुके गुण गावोरे । अवधू ॥ सद्० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ रागणी आसावरी. ॥

जे गीया जिनकुं गुरु संगति न सुहाई । ते तो वडे आपते हैं भाई । एटेक। तितनें शूकर कूकर नीके खर उलु और विंलाई । ताकी पटंतर तीन लोकमें और नीचको नाही ॥ जि०॥१॥ ताकों जन्म जीवन सव निप्फल । धिग्नर देही पाई ॥ मानुष होय कहा तिन कीनी । जननी जन पछताई ॥ जिन० २ ॥ कहा भए जो भूप छत्रपति कोड करी चतुराई । विन गुरुज्ञान सुगतको मारग लख्योपरत नही जाई ॥ जिन० ३ ॥ गुरुनिन्दक ते नरके पहुते सुगुरे शिवगति पाई । हरपचंद गुरुचरणकमलकी वार वार वळजाई ॥ जि० ४ ॥ इति गुरु पदं ॥

॥ झरथरीनी चाल ॥

क्या शोभा घरणुं सदगुरुजी तुम वालव्रह्मचारी ॥ क्या० ॥ टेक ॥ चैत सुदी नवमी दिन जनमे ॥ नगरहमीर उदारी॥

क्या० ॥१ ॥ वेलगसाहके नंदन कहिये विमलादेमहतारी कनक वरण काया अति सुन्दर जैसे चंदउजियारी ॥ क्या० ॥ २ ॥ मातपिताकी आज्ञा लेकर हुवे स्वर्ग विहारी ॥ श्रीसाधुरतनसें दीक्षा लीनी आपातीज दिहारी ॥ क्या० ३ ॥ भूतल ऊपर विचरण लागे करी तपस्या भारी ॥ जैन धरमके उन्नति कारण मारवारपगधारी ॥ क्या० ॥ ४ ॥ सद्गुरुजीकुं वंदन आयो रावमाल चित धारी ॥ करजोडा गुरु आगे ऊभो । कही हकीकतसारी ॥ क्या० ५॥ प्रतिबोधी नृपसें छुडवाया । कैदी सात हजारी ॥ वारै वरसी काल मिटाया । घन वरसायो अपारी ॥ क्या० ६ ॥ करत विहार सद्गुरुजी आये । मालवदेश विचारी विसम नदी अधिष्टायक साधे । चौवीस पीरकरारी ॥ क्या० ७॥ ॥ सब गच्छमें दीपत सद्गुरुजी । पासचंद्रसूरी मनुहारी ॥ नगरजोधाणे समोसरे स्वामी सद्गुरु अनशन धारी ॥ क्या० ८ ॥ मिगशिर सुदि तृतिया सुरगसिधाये । तीजै देवलोक मझारी हरपचंद घोडावत सुमरे पूरोजी आशा हमारी ॥ क्या० ९ ॥ इति

॥ राग भैरव प्रभाती. ॥

पूरो आस हमारी सद्गुरु ॥ पूरो० मोकुं सघलभरोसा तोरा वडतपगच्छगणधारी ॥ बारे कोट मेवाडदेशमे प्रतिबोधे बहुनरनारी ॥ पूरो० ॥ १ ॥ मालवदेशके सीमा किनारे नदी वहत अति भारी ॥ चोवीस पीर जिहां सद्गुरुजी वश किया

निज गुण धारी ॥ पूरो० ॥ २ ॥ सद्गुरु श्री पासचंदसूरिंदजी बहुजनके हितकारी ॥ नाना ग्रन्थादि बहु रचिया ज्ञान वंशे करसारी ॥ पूरो० ३ ॥ सद्गुरु वञ्छितफल मोहे दीजो समरूं जाप तुमारी ॥ हरपचंद घोडावत गावे आणन्द होत अपारी पूरो० ४ ॥ इति ॥

॥ श्रीगुरुस्तुती ॥

॥ सांभलजो मुनि संयम रागी,—ए देशी. ॥

श्रीपार्श्वचंद्र सूरि आ युगमां युगमां युगप्रधान ए पूरारे.
महावीरने सुधरमास्वामी पाटे थया ए सूरारे. ए आंकणी बोलवी.
स्वपरनो हित करवा माटे ज्ञानक्रिया जेणे धारीरे,
ते सूरीश्वर उत्तम वंदु जेणे सुधारी गति मारीरे. श्रीपा. १
हम्मीर पुर आबुनी पासे जनम्या ए गुरु ग्रामेरे,
विक्रम पन्नरसे सणत्रीशे पासकुमार थया नामेरे. श्रीपा. २
विमलादे माता छे जेहनी गुणनी एछे खाणीरे,
शा वेलगनो अंगज ए छे एहने सेवो प्राणीरे. श्रीपा. ३
वणिक पोरवाड छे ज्ञाते शुद्ध रीते ए जाणीरे,
साधुरत्न सूरि सौ गणमां गीतारथ गुरु नाणीरे. श्रीपा. ४
पन्नरसे छेताळीश वरसे दीक्षा गुरु थया ध्यानीरे,
ए उत्तम गुरुना गुणयोगे निश्चेथी ए अमानीरे. श्रीपा. ५
पन्नरसें पाशठना वरसे कीधो किरिया उद्धारोरे,

गुर्जर आदि मरुधर देशे कीधो जैन वधारोरे. श्रीपा. ६
साधुरत्न गुरुनी कृपाथी सूत्रसागरमां पारीरे,
जैनागमनी शुद्ध देशना आपी कर्या निस्तारीरे. श्रीपा. ७
मालवदेव नृप बोधने पामी मति लीधी जेणे सारीरे,
सुगुरुना वचनोने लहीने कुगति जाणी नठारीरे. श्रीपा. ८
नाटकीयो जेम वांसे चडीने मनने ते जेम मारेरे,
शुद्ध गुरुनी वाणी झीली निज आतमने तारेरे. श्रीपा. ९
शुद्ध जैननी शैली धारी भवबंधन जेणे त्रोडयुंरे,
मोर तणी मति जेम छे मेघे तेम गुरुमां मन जोडयुंरे. श्रीपा. १०
रसायणे जेम देहे पुष्टि तेम गुरुथी थइ तुष्टिरे,
पाणी विना जेम मच्छ न महिए, गुरुविण तेम अतुष्टिरे. श्रीपा. ११
इलीका जेम भ्रमरी ध्यावे तेम गुरु ध्याने लाग्योरे,
सत्यवचननी ए छे मतिती एह भाव मने जाग्योरे. श्रीपा. १२
भाग्यवंत ए गुरुने पामे ते दुःख सघला वामेरे,
गौतमना नामेथी जे फल ते फल एहना नामेरे. श्रीपा. १३
दूषण तो नहि लेशज एमां ए थया मोटा योगीरे,
शुद्ध परंपरा मांहे राचे तेथी छे शिवभोगीरे. श्रीपा. १४
गीतारथ गुरुना गुण जोइ थाये आनंद अपारोरे,
मुज सरिखा पामर प्राणीने दीधो धर्म उतारोरे. श्रीपा. १५
नागपुरी तपगच्छमां जनमी सौ जग जनने तार्यारे,
पापी कर्मोना जे बोजा पूरण तेणे उतार्यारे. श्रीपा. १६

शोळशे बारोत्तर वरसे स्वर्ग गति शुद्ध पाम्यारे,
पंचोत्तर वरसोनुं आयु पुरुं करी दुःख वाम्यारे. श्रीपा. १७
श्री कुशलचंद्रगणी गुरुमारा गौतमने समजाणुंरे,
गुणगावानी मति छे मारी तेनुं आछे टाणुंरे. श्रीपा. १८
गुणचंद्रे गति कीधी एमां शाणा होयते सुधारोरे.
गुणीजन गुणने खेंची कहाडो ए.यश दीशे तुमारोरे. श्रीपा. १९
श्री पार्श्वचंद्र सूरि गच्छमांहे दिनदिन गुणनी वृद्धिरे,
भवीलोको भावेथी आरावे तेथी लहेछे सिद्धीरे.! श्रीपा. २०
ओगणीश सीत्तेर भारतकवदमां आठमने बुधवारेरे,
अमदावादनी शामलापोळे सुगुरु गुणथी तारेरे. श्रीपा. २१

॥ लावनी. ॥

जगतमें सदगुरु उपगारी, श्रीपार्श्वचंद्रसूरी अवतारी ॥ जग० सहु शिरोम्मण वडतपगछ करी गुरुका नित सुमरण रवी रूर तीज तिथी दरशण करो ज्यूं गुरु होवे परसन ॥

(दुहा) केसर अगर कपूर लै चंदन सरस मिलाय श्री पादांबुज पूजी सदा भवि ज्यू सुख संपत्ति थाय, परमगुरु जगमे जयकारी ॥ जग० १ ॥ नदीविच साधे चौवीश पीर खेत्र पाल अहिपुरके तीर वशकिये अपने बावन वीर चोसठ जोगणि हाजरधीर ॥

(दुहा) वारै वरसी काल टालके जल वरसायो अपार गामें ईत उपद्रव भाजे सेवक जन आधार दरश सद्गुरुका सुखकारी ॥ जग० २ ॥ नगर तंबावती आप गये जहां श्रीसंघ सब खडे भये नवाब उहांका शिरदारे गाय मारनकुं ललकारे ॥

(दुहा) न वचन सुना गुरुदेवका तव दीया मखी बनाय गाय छोड पग लगा सुरिंद्र के हिंसा दीवी छुडाय वेलग वंश चमत्कारी ॥ जग० ३ ॥ ध्यान सद्गुरुका जो धारै बेडा उसका होय पारे दुशमन दोषी झखमारे धन कीरति जन विसतारे ॥

(दुहा) महिमा श्री गुरुदेवकीरे सुरगुरुसें न कहाय हरषचंद घोडापति बोले जय जय जय गुरुराय सदा चरणोंकी बलिहारी ॥ जग० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग कल्याण ॥

सद्गुरु आपो सुख श्रीकारो दूरकरो दालिद्र हमारो ॥ स० ॥ महेर महिर करो सद्गुरुजी सुण लीजो अरज हमारो ॥ दीनदयाल दयानिधि दादा दासकी चिन्ता निवारो ॥ ॥ १ ॥ पार्श्वचन्द्रसूरिंद सद्गुरूजी वडतपगछ शिरदा । तीनलोकमें अद्भुत महिमा । चिहूंदिश जशको नगा ॥ २ ॥ अभिनव चरणकी थापनाकीनी जनपद वंग

मझारो ॥ रावमालने परचो दीनो घन वरसायो अपारो ॥स० ३ ॥ नगर जोधाणे कैदी छुडाया गुण गावे जगसारो ॥ हरपचंद योदावतकुं दीजे नित उठि दरश तुमारो ॥ स० ४ ॥ इति पदम् ॥

॥ चैतावरनी चाल ॥

गुरुदेव भरोसा तेरा हम सेवकहैं तुमकेरा ॥ गुरू० ॥ ए टेक ॥ गरू नाम सदा सुखदाता समरयां देवै सुखशाता दरशणसें कटे भवफेरा ॥ गुरू० १ ॥ सदगुरूजी परचा पूरे दुख दूरित संकट सब चूरे जग गावै सुजस घणेरा ॥ गुरू० २ ॥ पार्श्वचन्द्रसूरीसर पूजे तसु पाप रिपूदल धूजे नरजनम सफल हुवै तेरा ॥ गुरू० ३ ॥ गुरू ज्ञानी ध्यानी कहिये वाके चरण शरण नित रहिये मिटे नरकनिगोदका घेरा ॥ गुरू० ४ ॥ दिनरात गुरू गुणगाव कहे अबीर अचल सुखपावै नित भणमै उठि सवेरा ॥ गुरू० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग प्रभाती. ॥

मात समै सुमरण सदगुरूको करियै भवि सुखकारी ॥ मात० ॥ सदगुरू श्री पार्श्वचंद्रसूरीसर दुरित तिमिर अपहारी ॥ मात० १ ॥ पर उपगारो शिरोमण सद्गुरू विमलाउर अवतारी ॥ वेलगवंश उजागरस्वामी श्रावक कुल दिन कारी ॥ मा० ॥ २ ॥ तप जप संजमकी खप करते अमतिबद्ध विहारी ॥ भूमंडलमें विचरत सदगुरु सुभटपुरे पगधारी ॥

मा० ॥ ३ बारह वरसो काल पडयों जब नृप आयो पगचारी ॥ करजोडीनें अरज करीं तव धन वरसांयो भारी ॥ मात० ४ ॥ ॥ बावनवीर अरूचोसठजोगणि रहते आज्ञाकारी ॥ कहत अबीर सदा सद्गुरुको वारी जाऊं वार हजारी ॥ मात० ॥ इति

॥ कजरोनी चाल. ॥

पार्श्वचंद्रसूरींद मन भायानीरे ॥ पार्श्व. ॥ ए टेक ॥ वेलगसाह विमलादेमाता जाको सुर नर मुनीगण गायानीवे ॥ पार्श्व० ॥ १ ॥ पंचमहाव्रत पालन सूरी गुण छत्तीस धरायानीवे ॥ पार्श्व० ॥ २ ॥ दे उपदेश भविकजन तारे सुमति गुपति मन लायानीवे ॥ पार्श्व० ॥ ३ ॥ समतासागर अनुभवदाता विषय कषाय मिटायानीवे ॥ पार्श्व० ॥ ४ ॥ कहे इंद्रचंद मेरे सद्गुरुजी तारण तरण कहायानीने ॥ पार्श्व० ५ ॥ इति पदम् ॥

॥ राग प्रभाती. ॥

श्री गुरूदेव सहाइ जिनके ॥ श्रीगुरू० ॥ कहा करे कोई पापी दुष्टी दुरजण लोक लुगाई ॥ श्रीगुरू० ॥ १ ॥ गाम नगर पुर पाटण मांहे कुशल मङ्गल वरताई ॥ भगतवच्छल सद्गुरूकी कृपासें सुखसपति घर आई ॥ श्री गुरू० ॥ २ ॥ चरण कमलकुं जो नित पूजे सो नृप पदवी पाई ॥ श्रीपार्श्वचन्द्र सूरीसरजीके अबीरचंद गुणगाई ॥ श्रीगुरू० ॥ ३ ॥ इतिपदं ॥

॥ राग प्रभाती. ॥

सदगुरूकी वलिहारी जगमें सदगुरूकी० सदगुरू श्री पार्श्व-चन्द्रसूरिंदकुं चाहत सुर नर नारी ॥ सद० ॥ वाट घाट संकट सब टाळे सेवक सानिधकारी ॥ समर्यो सद्गुरू दरशण देवै महिमासागर भारी ॥ स० ॥ २ ॥ राव मालनें परचोदीनो दिल्लीपति गयो हारी जैनधरमकी थिरता थापी परतख परउपगारी ॥ स० ॥ ३ ॥ राजनगरमें परचो पूर्यो दूरै कीनी मारी ॥मुनीइन्द्रचंद्र नमें पदपंकज नितप्रति ऊठ सवारी ॥ स० ॥ ४ ॥ इतिपदं ॥

॥ राग वेलावर ॥

मातसमें उठलीजीयै श्रीसदगुरुजीको नाम ॥ मात० सुखसंपतिसनहीमिलै वंछितपूरणस्वाम ॥ मात० बहुविध भय दूर टलै हरखे आतमराम ॥ सहज शोभागीसाहिबा चरणकरण गुणधाम ॥ मात० । २ ॥ श्रीपार्श्वचंद्रसूरीसरू घट घटके विसराम ॥ श्रीहेमचंद्रसूरींदके पूरो वंछित काम ॥ मात० ॥ इति गुरुदेवस्य पदम् ॥

॥ हरीरंजानी चाल. ॥

गुरूदेव मनावो, साचिसकलाई दादादेनमी (टेर) गच्छचोरासीमेदीपें सदगुरु श्री पार्श्वचंद सुरिन्दा ॥ नागोर नगरमें जोगन जीती अरु वाननरीन्दाजी ॥ गुर० १ ॥ अनुक्रम सद्-

गुरू विहार करतां रूणनगर पगधारी ॥ आराधित जक्षसुरपति आये, दीये क्षेत्रपाल सेवाकारीजी ॥ गुरु० २ ॥ भूमंडलविचरतां सदगुरू मालवदेशमें धीर विषम नदीष्टायक सुरकुं साध वश कीये चोविस पीरजी ॥ गुरु० ३ ॥ आरापंचम कलिकालमें सब देवन शिरदेवा ॥ वडतपगच्छपतीदादादानी दीजो वंछित फल नितमेवाजी ॥ गुरु० ॥ ४ ॥ दीनदयालसर महाव्रतपाळे श्रीगणधर महाराज ॥ हरपचंद घोडापति सुमरे सिद्धहोय सब काजजी ॥ गुरु० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ रेषता. ॥

सजन गुरु देवकी सेवा देवे गुण ज्ञानकामेवा० ॥ स० ॥ भाविक नर नारी जो ध्यावे ॥ सदा सुख संपदा पावै ॥ १ स० ॥ दादा पार्श्वचंद्रसूरींदा ॥ दरशनें दूर दुखदंदा ॥ अटल परताप जग गाजै ॥ सुजसका तूर नित वाजे ॥ २ ॥ लीयागुरुदेवका शरणा ॥ कृपा निज दास पर करणा कहत अवीर करजोरी ॥ करी वीनती सफल मोरी ॥ ३ स० इति पद ॥

॥ दादाजीनी स्तुति. ॥

वेलग साह नरोत्तम विमलादेवीमाय ॥ सूरत मन मोहन कुंदननिरमलकाय ॥ १ ॥ श्रीवडतपगच्छपती पार्श्वचंद्रसूरि गुण धीर ॥ पीर चोवीश बोध्या मालवदेशके तीर ॥ २ ॥ इ-

स. कलयुग परतिख सेवै बावनवीर ॥ वलि चौसठि जोगनी संभायत सुख सीर ॥ ३ ॥ पंभायतपति प्रतिबोध्यो, मालव देश मझार ॥ हिंसा टाळी जीवनी, बोध्या कसाई केई हजार ॥४॥

॥ पुनः ॥

सद्गुरु सुखकारी श्रीपार्श्वचंद्र सूरिंद्र जे एक चित ध्यावै तेपावै परमानंद ॥ १ ॥ बारहसै पापंडी प्रतिबोध्यां द्रावड- देश ॥ निशदिन दादा समरूं टाळुं सकल किलेश ॥ २ ॥ नित ऊठी समरी पार्श्वचंद्रसूरी सुझान ॥ सुदितीजतिथी सेवी सद्गु- रू अष्टविधान ॥ ३ ॥ सुरपति वंदन आखातीज प्र- भात ॥ क्षेत्रपाल प्रतिबोत्रे नागोरसाकोटडी सात॥४॥ इति पदं ॥

॥ श्रीसद्गुरुजीनी आरती. ॥

शुभ पंच महाव्रत तुमपाला मदममता मोह अलग टा- ला, भवभवके संकट अघहरणं ॥ नमो पार्श्वचंद्रसूरी दादा- सुख करणं ॥ १ ॥ ज्ञान दरशण चारित्र मन धरके शिवमारग सूधा अनुसरके निज आतमके गुण आदरणं ॥ नमो० २॥ भूमण्डल विचरे उपगारी प्रतिबोध्या सद्गुरु नरनारी तुम विरद बडातारणतरणं नमो० ॥ ३ ॥ जिनशासनमें भए अवतारी थांकै चरणकमलरी वलिहारी शुद्धसमकित सम- ता मन धरणं ॥ नमो० ॥४॥ रायमाल आई थांरे पगे लागो क--

हेस्वामी मुझ चिंता भागो घणवरसायो असरणसरणं ॥ नमो० ॥ ५ ॥ वीरबावन चउसठ योगनियां रहै हाजर गुण गावै दुनियां सेवक घर दौलतसें भरणं ॥ ६ ॥ नमो ॥ जग परचा पूरण परतापी थांरी महिमा तीन भुवनव्यापी बहु भूपःति सेवै तुम चरणं ॥ नमो० ॥ ७ ॥ करे आरती सुर शिरनामी दुख दुशमन दुर करो स्वामी मुनि अबीरचंद करै गुण वरणं ॥ नमो० ॥ ८ ॥ इति श्रीवडतपगण गगणदिनकर शृंगारहार श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वराणां आरात्रिका संपूर्णा ॥

॥ अथश्री भैरवजीनी स्तवना ॥

रतनपुरी मंडण अति सोहे, भैरूजी महाराज; जीव वनांबुज विकासन स्वामी, देख्यो रवि सम आज. मोरा स्वामी सेवक जन सुखकारी तुं छे कल्युिग मांहे देव मोरा स्वामी सेवक जन सुखकारी ॥ १ ॥ मुखें पान बहु सुंदर सोहे, गळे भुजंग विशाळ; चार हाथमें लंछन सोहे, कडियामां कडपाळ. मोरा स्वामी सेवक जन ॥ २ ॥ पाय मांहि घुघरिया घमके, सोहे पावडीयां साल; स्वनुवाहन अति सोहन भेट्यो, सुख थाय तत्काळ मोरा स्वामी सेवक जन ॥ ३ ॥ घणा दिवसथी मारा मनमां, तुम दर्शननी आश; ते पुरी हवे स्वामी भणत हुं, सफळ करो अरदास मोरा स्वामी सेवक जन ॥ ४ ॥ ऋद्धि सिद्धि विद्या मुज आपो, कापो चिंता जाल; गण मांहे मुनि सुख वधारो, निजनो विरुद निहाळ मोरा

सेवक ॥ ५ ॥ सकळ संघ पोतानो जाणी, करो संपदा भूर; तेह थकी दानादिक मकदे, पाप थाय सवि चूर मोरा सेवक ॥ ६ ॥ संवत अढार नव्यासी मांहे, पुन्य चैत्र रविवार; संग्रुणीया रूण केरो स्वामी, रवि हर्षेंदु हितकार मोरा सेवक ॥ ७ ॥ इति भैरव स्तुति समाप्त.



युगप्रधान श्रीपार्श्वचंद्र सूरीश्वजीना गुण ग्राम रूप अन्य आचार्य उपाध्याय मुनियोये करेल स्वाध्यायादि प्रकरण जे कांइ हाथमां आव्या तेनो संग्रह अत्रे मुद्रित करेल छे.

॥ श्रीमतां सकलपंडितेश शिरोमणीनां श्रीपार्श्वचंद्र सूरि शक्राणां स्तवाष्टकम् ॥

(द्रुतविलंबित)

चतुरशीतिगणाधिक विश्रुता, दलितवादि कदंबक पंडिता
निवड संयम साधन तत्परा, गुरु तपो गण भार धुरंधराः
अमर दानव मानव वासवा; प्रसर गीत गुणविशदाशयाः,
अनुचरेप्सित दान सुरद्रुमा, विजयिनो गुरवश्च भवंतु मे.

(इंद्रवज्रा.)

वाक्यं यदीयं प्रथितं प्रधानं,चारुत्व माधुर्य सुधा समानं;
नानाविधं ग्रंथ रसाभिरामं, पादौ तदीयौ प्रणमामि कामं. २

(शार्दूलविक्रीडितं)

ग्रामे श्रीपुट भेदने जलनिधौ कांतार दुर्गे वटे.
संग्रामेऽरिगणे विलेशयमुखे शार्दूल नीराग्निषु.
इत्येवं विषम स्थलेषु पुरुषा ध्यायंति ये भावत,
स्तेषां सौख्यकरा भवंतु गुरवः श्रीपार्श्वचंद्रा वराः ॥ ४ ॥

(स्रग्धरा)

रोगांभोवह्नि नागा हिन मृगपतयः स्तेन मातंग संख्या,
क्रूराद्यातंकवर्गाः स्मरण सुकरणा नामधेयस्य साधो.
श्रीमत्पार्श्वेन्दुसूरे दिनकर किरणात् ध्वांत वारा यथोग्राः ।
सर्वे यांत्याशु नाशं शिवसुख निवहाः सुंदराःसंभवंति ५

(इंद्रवज्रा)

आराधितो देव मणि र्ददाति, चित्तेष्ट सिद्धिं खलु सेवकानां,
ततोऽधिकं श्रीगुरु पार्श्वचंद्र, स्वान्तेप्सितं पूरयतीह सद्यः ६
मुष्णाति दुःखानि शिवंतनोति,पुष्णाति शर्माणि श्रियंचिनोति
यशः प्रसूते विदधाति धर्म, श्रीपार्श्वचंद्राऽमल सूरि नाम ७
कल्याणराजीवनतोयदाभान् भव्यात्मनां वांछित दत्त लाभान्
श्रीसाधु रत्नोदितशिष्यशिष्टान्स्तवीतिभक्त्यामुनि प्रेमचंदः८

॥ श्री पार्श्वचंद्र सूरि स्तुति. ॥

राग प्रभाति.

सुप्रभाते उठी भवियण, आवश्यक करणी करो.
देव जिनवर वंदी सद्गुरु, हेला भवसायर तरो;
श्री पार्श्वचंद्र सूरींद गच्छपति, सेवतां सुख संपजे.
शाह वेलग तात प्रगटयो, मात विमला जाणीए,
विमलवंश विशेष कीधो, पोरवाड़ वखाणीये. श्रीपार्श्व०२
सकल शास्त्र सिद्धांत सागर, रुपे रंज्या नर सहु.
राय राणा साधु श्रावक, पाय प्रणमे जनबहु. श्रीपार्श्व०३
वादि वृंद गजेंद्र केशरि, मोह मान उतारीयो,
अंगे आलस दूरे छंडी, काम क्रोध निवारीयो.श्रीपार्श्व०४
पंचमकाले जेणे सद्गुरु, शुद्ध धर्म प्रकासीयो,
सिद्धांत सघला प्रगट कीधा,भविक हृदय उल्हासीयो. श्री०५
चतुर चारित्र पूजपावन, चंद्र जीम चडती कला;
देश गुज्जर मलय मरुधर, पवित्र कीधो जीणेईला. श्री०६
इणे आरे सुगुरु सरिखा, कहो किणने कीजीये;

करी आदर नाम लेतां, मानव भवफल लीजीए. श्री०७
धर्मधोरी धराधारक, धर धरणी जाणीये;
पाद पंकज पामे पुन्ये, सयल संपत्ति आणीये.श्रीपार्श्व०८
तेज ताप न सकलसुरति, भविकलोक आणंदीये;
आणी उल्ट सुप्रभाते, मुनि मेघराजे वंदीये. श्रीपार्श्व०९

॥ श्री पार्श्वचंद्र स्तुति. ॥

गुणनिधि गुरु नित वंदीये, मन आणी बहु भाय.
जास पसाये पामीये, सुध्ध समकितरे शिव सुखसमवाय-
के वंदोरे गुरु सुधा, सूरीसररे श्री पूज्य पार्श्वचंद्र.
के वयणे जे प्रतिबुधा, समता गुणेरे जे पुंनिम चंद्र, केवं.१
रवि जीम तेजे दीपता. टाले मन अंधार,
मिथ्यापडल उतारि करि, पहोचाडेरे भवदुत्तर पार केवं. २
बालपणे जेणे आदर्यो, पंच महाव्रत भार.
पाले जीम पूरव रुषी, तसु लागारे टाले अतिचार केवं. ३
ज्ञान क्रियाए दीपता, वडतपगच्छ शृंगार,
मोह महाभड जीपता,जीणे छंडयारे सविविषय विकार.केवं.४

परिसह वले भांजे नहि, समुद्र जेम गंभीर,
वादी गजघट केसरि, तुम्हे जाणोरे एतो साहसधीर. केवं. ५
क्रोध मांन जेणे जीतला, छांडी माया लोभ,
मारग देखाड खरो, जिनशासनेरे जेणे पामी शोभ. केवं. ६
प्रागवंश प्रगटो कर्यो, वेला शाह सुतन्न.
विमलादे उर सागरे, अवतरियारे ए पुरुष रतन्न. केवं. ७
वडतप गच्छ नायक जगे, प्रतपो दीणयर चंद.
मनह मनोरथ पूरवो, इम बोलेरे सूरि श्री समरचंद्र. केवं. ८

॥ श्री पार्श्वचंद्र सूरि स्तुति. ॥

गोयम गणहर पाय प्रणमीने, गुरु गुण कहिसुं उदारोजी,
श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वर प्रणमुं, गिरुआ गुणह भंडारोजी. १
नरनारी ते उत्तम जाणुं, जे वंदे गुरु पायजी.
मनवंछित ते निश्चे पामे, तेहने होय सुख दायजी, नर. २
साहवेला कुल कमल दीवाकर, विमालादे उर हंसोजी,
सुगुरु पासे दीक्षा जेणे लीधी, अजुआल्यो जेणे वंसोजी३

अनुक्रमे शुद्ध सदहणा लीधी, सुत्रपंथ गुरु बोलेजी,
देशे विदेशे कीध सदेशणा,वाणी सुधा सम तोलेजी नर०४
पंचाचारति सुद्धा पाले, नवविध पाले बंभोजी,
निरवद्य भापा अहनिशभाखे;कुड कपट नहि दंभोजी नर५
गुण छत्रीसे सुगुरु विराजे, जीपता वाद विवादोजी,
मुनि मंडलीए एहवा सोहे, देव सभामांहे इंदोजी. नर०६
सुत्र अरथ जेणे प्रकटा कीधा, लीधा सुयश भंडारोजी;
रुपे रतिपति गुरुजी जीपे, सुरिम धीर गंभीरोजी, नर० ७
मनवंछित ते सहुए सा्या, वाध्या बहु परिवारेजी,
सत्तरभेद संयम प्रतिपाल्यो, दोप सवे निवारजी, नर०८
इणि परे तपसंयम गुण विद्या, कर्म सबल घण चूरेजी;
श्री राजचंद्र सूरि इम बोले, मनवंछित गुरु पूरेजी, नर०९

॥ श्री सद्गुरुनो छंद लिख्यते.

राग. छप्पा जेवो.

चोवीसे जिन चंग पाय प्रणमुं करि पूजा,
सद्गुरु लहि सुपसाय दिलही नहि राखुं दुजा,

सरसतिचे सानिधि गुणह गावुं गुरु केरां,
जीण गुरुनामे जाप पाप जाये परहेरा;
प्रत्यक्ष आज पंचम अरे पार्श्वचंद्र सरिखो पृथी,
दीठो न कोइ गुरु दुसरो करो सेवन फिरो किथी, १

पार्श्वचंद्र गुरुपाय भायकरि पूजो भाते,
नागपुरे नरकोडि जाति जोधान विख्याते;
महिमा घणी मेडते अधिक आगरे अनूपम,
बुधनावर बहुकित्ति चित्तवाहौ पुर विक्रम,
राजनगर खंभायत रली शेत्रुंजे गुरु शाश्वता,
एटलेज ठाम दशरथ कहे शुभ शोभ भल आसता, २

गुरुथी उपजे ज्ञान वांणी तारक गुरु वांणी,
जे गुरु जाणे जगेतिहां कुल रिति वखांणी,
गुरु विण अंध अबुझ निर्गुरु गोहीडै समवडि,
मंत्रतंत्र नहु लगे उंट वांसे जीम जल घडि,
किधोज जेण तुजने सकल पत्थरथी पूजण जीसो,
गुरु आंण सीस नवि माने तिहां पुरुष आदर किसो, ३

॥ छंद भुजंग. ॥

किसो त्यांह जांमो महीमेसुकीधो,
गुरां छोडि औरां गुरां चित्त दीधो;
तियां जस शोभा नरा ? होय केही,
सिकै बाहिरा मानिजे नाहि एही; ४

हवे विनवुं आपणा आज राया,
हुंहु हाथजोडी नमुं लागी पाया;
सीरोही सुदेशे हमीरो सुगाम,
तठे पोरवाडां भलो वेल नाम; ५

भली शीलवंती सलज्जे विख्याता,
गुणे राजती विमलादेज माता;
थयो पुत्र जामो महिमें प्रसिद्धो,
घणा कोडथीं पासनाम सुदीधो; ६
पढै पाठ पोसालवाली सुवेसे,
तिसे आवीया साधु रयणासु देसे;
गुरां सांभली वाणी मोटी सुधरसं,

वसी चित्त दीक्षा अछे तुच्छ करमं. ७
घणुं वारतां माय तायासु लीधी,
गुरां साहु रयणां सिरे छाप दीधी;
पढे ग्रंथने ग्रंथिना भेद पामे,
रूमें साधीयो खेतलो वीरमामे. ८
हुवे हाजरे वार जेता संभारे,
नमी पाय लागो कहे वस्यथारे;
भते पंचमी पर्वजांणी अनादे,
चउमास पून्यें इहां नहि वादे. ९
इसो तत्र जांणे करे सिद्धि काजं,
भली धर्मनी वाणीये मने लाजं;
करे कासटा जांणने सद्धि माग,
चोमास जोधांण आव्या सुभाग. १०
नठै माल नामे वडो राव राजे,
महीमेहना ही तियै लोक लाजे;
पशु पंखीआं गो भुआं नीरनांही,

इसो नाहुवे बादलो गयण छांहि.
गयो मास अंसाढथी अरध भांदुं,
तिको दिन नांही जीये मेहकादुं;
करे मेह जालां जोगाडे सु विप्पं,
धरा मेहजो नात्रीये किंचि खिप्पं.
घणा जाण जोधार पूछया तिवारे,
सहु पार्श्वचंद्रां लियो नाम त्यारे;
गुरां पासे आवे वदे घालि गोडी,
हवे सरम राखो ज्यां हाथ जोडी.
घणा हउथी मोजमांडो मनांहि,
तरे खेतले कीधी गयणे सुछांही.
धरा मुसलाधारसुं सिंचींधाइ,
मीले मेह बार नमे पूज आइ.
वहाडे ढहाडे घणा धान कोठा,
तरे रावजीता कीजे छांन ओठा;
वहे नीर शेर्या वचे जाणे गंगा,

रहोजी रहोजी कहे लोक चंगा. ॥ १५
पधारे गुरांरे वडा पाय राजा,
घणेडंबरे वाजते हरख वाजां;
समेटो लपेटो हवे मेह सामी,
हुंइ सघली भूमी मोटी समामी. ॥ १६ ॥
गुरु खेतलो चित्तमांहे चितार्यो,
तरे वादलो एक गयणे न ठहर्यो;
हुवो जश जगे मुणिंदा सवायो,
महीपास नामे महासुख पायो. ॥ १७ ॥
तठे श्रावक्र पर्व पंचमी पाली,
घणां वादीयां मांन मोटां सुगाली;
महाव्रत्त पूरा सदा धर्म सूरा,
करे पुज्यजी देश देशां सनूरा, ॥ १८ ॥
करे पूजजी देश देशां विहारा,
लीये साथ सर्वसाध लाखीक सारा;
गुरां साहु रयण कीयो नाम साचो,

तपतपने शुद्ध संयम राचो. ॥ १९ ॥
करे गच्छने सारणादि नाम राखे,
सदा खेतलो खोडीयो सेवक साखे;
भलां श्रावकां बुझवे ठाम ठामे,
धनलाभेलहे जश नामे, ॥ २० ॥
पधारे गुरांरे वडा पाय राजा,
तिके पूजसेवे तिहां दीह ताजा. ॥ २१ ॥

दूहा

अैसे परते आपरे, पूहवी थयो प्रगट्ट,
गाम य गरु पड वधे, पार्श्वचंद्र पाय थट्ट. २२
गुरु मारण गोलो रची, वैर हकार्या वीर,
पट्टणमांहे महातमे, तिहां पिण थयो सधीर. २३
दरा हुकम दूरे कीयो, मांडव गढमें मेल,
पातिसाह प्रतिबोधतां, जनथ जशथी जेर. २४
चित्रकुटमें चातर्यां, कुमति लाग्या पाय,
रीझायो राणामणी, वास्तुक शास्त्र देखाय. २५

तपां खरतरां मांहि ते, राखी सुजशां रेख.
कडवा ते मीठा कीया, श्रावक कीध अशेष, २६

छंद अडिल्ल.

महामुनिसर ए जग मोटो, किनही वात पडयो नहि खोटो
ए गुरुना अवदात उदार, कहेतां हुं नवि लहुं जगे पार.२७
इम जोधाणे अनुक्रमे आवी, धरि अणसणमें सुरगति पावी,
देव थया गुरु सानिधि कारे, नाम जपो गुरु उठी सवारे२८
वहु विध पुज करे मन भावे, संघ सकलो वहु दोलतपावे
अगनि चोर भय राज कटके,नाम जपो गुरु तेथीथटके. २९

छंद मोतीदाम.

लटके लक्ष्मि घरे करे वास, झटके मन्न फले सविआश,
त्रटकेताप मिटे गुरु नाम, सटके गुडपड वाधे माम. ३०
धडके मेह भयंकर रात, अवट्टे मारग वैरीय घात;
चटके चोरतणो भय जेथ, मटके माहि आवे गुरु तेथ. ३१.
सलके साप टले पग हेठ, भडके भूत न लागे द्रेढ,
चलके देह टले सब रोग, रलके लील लहे मन भोग. ३२

उणके नेपुर झंझर पाय, रणके केउर कंकण ताय,
महके वीर अवीर सुगंध, लहकें वेणीदंड सुवंध.
ठहके देखि सुकामण काय, गहके गोरीय रुप अघाय;
तडके ताहि घणु मन चाह्य, लहीजे तेह ततखिण मांह्य.
त्रटक्यो भूप न बोले वांणि, अडक्यो काम न दीसं तांणि
लहीजे लाख सपूरी साख, दवटे दारिद्र दूरे सुचाख.
धरेजसु दान दीये जुअमट्ट, नवलौ दिन सदा गहगट्ट
जनम्यो पूत चलावे सुत, मथै गुरु हथ न होय अउत.
अपुत्यां पुत दीये भलि जोड, कसटे पाप कीयाजे कोड
लहीजे भोजन साकर दूध, एसो गुरुनाम जपो मनसुद्ध२

छंद हाटकी.

विमलादे नंदन, सदगुरु वंदन, जपो सुबुद्धि जाप,
नव निधि पामे, गुरुने नामे, ज्यां सिर सुधी छाप;
जिनशासन सोहग, भवियण मोहग, सुद्धो द्ये उपदेश,
पार्श्वचंद्र गुरु पूजो ध्यान न दूजो पामीजे गुरु रेस. ३

कवित.

पन्नर संतीसे जन्म दीख वलि पन्नरसें छिताले,

पन्नरसं पेसठे साले किया सुद्धि करी पाले;
सोरठे झालावाडे देश मालवने गुज्जर,
थलवटि ने मेवाड दिधो प्रतिबोध मरुधर.
देशां अनेक विचर्या सुगुरु, गाम गाम श्रावक सबल,
प्रतपो पूज गच्छ थांहरो, चंदसूरि जां धर अचल. ३९

कवित.

वरस पंचोत्तर आयु पाली पूरो धर्म ध्यांने,
जोधनयर संवत्त सोल बारोत्तर माने;
मृगसिर सुदि सुभ तीज देवगति पूज पधार्या.
शुद्ध धर्म उपदेश लोक बहु हाथें तार्या.
श्री उदैचंद्र सदगुरु नमी, सीस दशरथ इम विनवे
श्री पार्श्वचंद्र सूरिमथै सुगुरु, त्यांह चिंता केही हुवे. ४०
साधुरतन गुरु पाटपसिद्धो, आपबले जग नाम ह कीधो,
जेए पूज करे गुरुपाय, त्यांह घरे दहाडी दोलत थाय. ४१

॥ श्री सद्गुरु स्तुति ॥

अम्हारो गुरु गुण रयणे भर्यो राजे, ए आंकणी.

श्री पार्श्वचंद्र गरुओ गच्छपति, श्रुति जलधर जीम गाजेअ०१
समता रस पय सागर पूर्यो, वयरीना दल त्रासे;
पंच महाव्रत आदरे शुद्धां मोह महाभट्ट नासे. अम्हारो२
नयन कमल दल शोभित सुंदर, आनन चंद्र विराजे;
क्षमा दया संयम तप आगर, शील सनाह अंगे छाजे,अ०३
पोरवाड वंशे साह वेला, विमलादे धन माता;
साहु रयणे गुरु संयम दीधो, किर्ति जग विख्याता. अ० ४
चितामणि सुरतरु सुर धेनुं, सेव्यो वंछित पुरे;
श्री पार्श्वचंद्र सूरि नाम जपंतां, भव संकट सहु चूरे अ० ५
नागोरे नगरे थुभी पादुका, वंदी संघ आणंदे;
जे नरनारी अहनिश गुण गावे,ते चिरकाल सुख नंदे.अ०६
जिन वचने वहु बुझव्या भवियण, सुगति तणी रुद्धि पामी;
श्री पूरणचंद्र पुनित सुहगुरु वंदे,तुमसम अवर न सामी.अ०७

॥ श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वरनो सलोको. ॥

रुषभादि तिर्थंकर पायजेलागुं,
वे हाथ जोडी सवि सुख मागुं;

गौतम मोटा गणधार ध्यावुं,
श्रीपार्श्वचंद्र सूरीश्वर भाव जगावुं. १
जेणे साध सुधो जती माग साध्यो,
भडवाय जेहनो जगमांय वाध्यो;
मारवाडमांहि मंडण देशज जाणुं,
हमीर पुर तिहां गाम वखाणुं; २
अढार वरण केरो निवास,
चहुटा घणा जीहां उचा आवास.
प्रासाद मोटा जिनराज केरा,
आवे जीहां साधु भला भलेरा; ३
पोरवाड न्याते पयडो प्रतापी,
जेहनी जगमां किर्ति वहुलीज व्यापी.
व्यवहारीओ वेलो मांहिज मोटो,
धन धांन्य पूरो कहीये न खोटो; ४
जिनधर्म रातो छे दांने शूरो,
धर्मे तो पूरो नहिए अधुरो.

विमलादे जेहने घरणी सुनारी,
दीसे सदा लक्ष्मी तणी अवतारी. ५
तिणे सुत जायो जग मांहि सार,
जे देवरूपी गुणनो भंडार;
नांमे वली कुंमर पास कहीजे,
कला बहोतर ठाम ज लहीजे. ६
भण्यो गण्यो जे लील विलास,
पुरी जीण वेगे कुटंबनी आस;
बालपणे धर्म कलान मूके,
मावीत देवगुरु विनय न मूके. ७
संसार जाण्यो जेणे असार,
धर्म कर्यो जेणे चित्त उदार;
श्री साधुपन्यास सद्दि गुरु पाय पाम्या,
दुःख दोहगमविदुरेज वाम्या. ८
नागोरी वड तपगच्छ शिणगार.
शीख्या जेणे सुत्र सिद्धांत सार,

व्याकरण तरक भण्या अपार;
काव्य छंदको लह्याज पार,
जैन शैवना जगमांहि ग्रंथ,
पूरा भण्या लाधो वहुलोजे अर्थ,
श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वर सहुअज जाणे;
पंडित सघला जेहने वखाणे,
राय राणा सवि जेहनी कार माने.
श्री पार्श्वचंद्र सूरि वडैजी वांने,
योधपुरे जेणे मेह वरसाव्यो,
पोसालमांहिथी जेह प्रभाव्यो;
रावगा पासे आहेडो छोडावे,
रायमाल वांदण जे नित्य आवे.
साधु रत्न पन्यासनी सीखज मागी,
क्रियातणी शुद्धी बुद्धज जागी;
परिग्रह छंडयो जेणे तो सर्व,
क्रोध लोभ छंडयो अहंकार गर्व.

सिद्धांत शुद्धा भगराज कीधा,
साध साधवीने सवि सेखदीधा; १३
पांचम पजुसण सूत्र साखे,
चौदिस पाखी सद्गुरु दाखे.
पुंनम चोमासो गुरुराज थापे,
सवि सूत्र माने उतसूत्र उथापे; १४
सावद्य टाले निरवद्य भाखे,
छकाय रुडी परेजेअ राखे.
वादी विवादी वहुलाज जीता,
देशविदेशे जे हुआ विदीता; १५
साधी जीणे मरुधरने मेवात,
मेवाड मालव ने देश विख्यात.
गुजर सोरठने कच्छ सवाइ,
दक्षिण माने सविसेप थाइ; १६
जेणे सूत्रसाखे उपदेश दीधा,
ठामे ठामे श्रावक जेणेज कीधा.

दीख्या जेणे साधु भला सुविचार,
पंडितपूराने भला आचार. १७
जेहने देव देवी सानिध सारे,
श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वर घणो विस्तारे.
जेणे श्री पार्श्वचंद्र सूरे घणां जीव तार्या,
कुमति निवारी, भवसागर मांहिथी उगार्या; १८

(कलश.)

पोतानो गच्छ थाप्यो जेणे जोधपुर मांहे,
आवी संथारो कीधो बहु जीवने अभय दांन दीधो.
रायमाल जेहनी तिथी पलावे.
संवत सोलबारोतर मृगसिर सुदि त्रिज दिन देवंगत पावे,
तेहने पाटे समरचंद्र सूरीश्वर प्रतापीया;
तेहने पाटे राजचंद सूरीश्वर जगमांहि थापीया,
मुनिमेघराज एह सिलोको कह्यो. भाविक जीवे सर्व सद्दह्यो

॥ श्री सद्गुरुजीनो पद. ॥

राग वेलाउल.

सद्गुरु सवि सुखदाता,रुद्धि वृद्धि नवनिधि घर अडसिद्धि.

मंगल नित वहु भाता. सद्गुरु सवि सुखदाता. १
सुकलत्र सुमित्र सुपुत्र सनूरा, साजन सुख सुहाता. सद्.२
रोगसोग आपद दुःख जाय, निरमल बुधजसख्याता. ३
श्री पूज्य पार्श्वचंद्र सूरीश्वर, नाम जपो दिन राता;
मुनि श्रीकर्ण कहे एगुरु सेवो, सदा रहो मद माता. सद्.४

॥ श्री सद्गुरु पद. ॥

राग ललित.

भज भज आतम सुगुरु सुजाण, (ए आंकणी.)
श्रीपार्श्वचंद्र सूरीश्वर वडतप गच्छमांहि उदयो भांण भज. १
गुरु विरहे गुरु पगलां जाण, थाप्या विक्रम पुर अहि ठाण;
संघ चतुर्विध उलट आंण, यात्रा आवे वडे मंडाण. भज. २
नरनारी मन धरे शुभ ध्यांन, ध्यावे श्री गुरुनित सुविहाण;
मुनि श्रीकर्णसुगुरु वखाण, पामेवंछित कोडि कल्याण.भज.२

॥ श्री सद्गुरु पद. ॥

राग धनाश्री.

संमरमन पार्श्वचंद्र सूरि सदाय, (ए आंकणी.)

सेवक जनपरता पूरण परतक्ष कामदुघाय. समः १
धन आरतीयां धन बहु देवे, अपुत्रियां पुत्र थाय;
घरणी कुंटुवसयण ससनेहा, आविमिले सुखदाय. सम० २
रोग शोग भय संकट टाले, वारे विघन बुराइ;
परमाणंदपद मुनिश्री करणने, आपे ए अधिकाइ सम० ३

॥ श्री सद्गुरुजीनी स्तुति ॥

शांति जिणंद प्रणाम करी, अहनिश निज चित्त प्रमोदधरी
ाप पडल सवि दूर हरी, पूज्य पार्श्वचंद्र स्तविस्युं हरखधरी १
ुरि शिरोमणि जग राजे, जसु सद्गुरु साहु रयण छाजे,
ड तपगच्छ नायक गाजे, सवि अरियण केरा दलभाजे २
ास्त्र शकल लघु पणे जाणे, वली देव प्रभावे मेहआणे,
ायराणा जेहने माने, पूज्य आगले हैडे मद नाणे. ३
ीख लही सद्गुरु पासे, ग्रही संयम समता मन वासे,
त्ताम लक्षण जसु तनुभासे, नरनारी गुणगावे रासे. ४
ुज्जर मरु मालव देशे, पतिबोध्या भवियण उपदेशे;
कुमति मिथ्यात न रहे लेसे, जिन मारग सुधोसन्निवेसे. ५

नयर योधाणे अनुक्रमे आवे, लहीअणसणसुरनीगतिपावे,
संघ मीली पगलां ठवे, जणयात्र दिसोदिसथी आवे. ६
पूज्य थूभ भली महिमा पसरे;सेवक घरे कमला केलिकरे
परिगल पुण्य भंडार भरे; जसुकिर्ति चिहुं दिसिकाजसरे ७
आतुर आरति रोग सोग समे; भय सातसही ततकालगमे
अडवीपडयां जे पूज्यजी नमे; ते कुसल कल्याणे पंथक्रमे ८
जे गुरु चरण कमल ध्यावे; सुत वंछे तेनर सुत पावे.
अष्ट महासिद्धि घरे ह्यावे; दुख सायर उत्तरी तट जावे. ९
वयर विरोध संताप टले; गुरु समर्यां वैरीना मान गले;
नवि भूत न प्रेत पिशाच छले;ग्रह गोचरभुंडा जाय विले. १०
नयर योधाणे शोभा सुणी; वली नागोरविकानेर पूजाघणी
सानिधकरोपूज्यजीसंघतणी;मुनिमेघराजभणेसुखलाभगणी.

॥ श्री सद्‌गुरुजी स्तुति ॥

श्री पार्श्व चंद-सूरीसा वंदु अधिक जगिसा;
गाउं गुण निशदीशा; पाउं सुख वीश्वावीसा. श्रीपास.
पुर हमीर संपद भर्युं; वेलग साह उदार;

विमलादे नंदन भलो प्रागवंश शणगार. . श्रीपास. १
लक्षण रुप कला घणी सोहग मयण अनुपा,
चंद्र गच्छे चडती कला;सोहम स्वामि सरुपा. श्रीपास. २
नयणे सारंग हराव्यो ए मुख पुनमका चंदा;
गतिजिति राज हंसकी तेजे जीत दिणंदा. श्रीपास. ३
पंडितराज सभा कथी, आगम अमृत गंगा,
नवरस धर्मकथा सदा, श्रावक श्राविका चंगा. श्रीपास. ४
किर्ति बहुली विस्तरे, महिमा मेरुसमान,
गुणसागर गुणदीपता, माने रायने राण श्रीपास. ५
कवए पाट ए ते पढे, वादीनर कव जीता,
कवए ग्रंथजोडे लखे, ए गुरु जगत्र वदीता. श्रीपास. ६
समकित संजम साधेए, बावीस परिसह सहणा;
जिनशासन दीपावीओ,कीधी साच सद्दहणा.श्रीपास. ७
बोल इग्यार प्रगट कर्या, सूत्रसोधी बहुमर्म;
मिथ्यामत उथापिओ, साध्यो जिणवर धर्म. श्रीपाम. ८
ठाम,ठाम आदर घणा, ठाम ठाम सनमान,

ठामे ठामे पूजा घणी, ए गुरु लब्धि निधान. श्रीपास. ९
वचनसिद्धि जसुजागती, जैसा वयरकुमार;
भविकजीव वहु तारीया, कीधा पर उपगार. श्रीपास. १०
वोधिवीज सुरसुख मुदा, लहीए शिवगति ठाम,
विमल चारित्र वाचक भणे,मुज हैडे तुमनाम-श्रीपास.११

॥ श्री पार्श्वचन्द्र सूरि गुरुजीनी सजाय॥

श्री सूरीश्वर सुरतरु, श्री पार्श्वचंद्र सूरि राजेरे;
सद्गुरुना गुण गाइये,जीम संकट सवि भाजेरे. श्रीसूरि. १
वेलगवंशे दीपता, विमलादे जसु मातारे;
विमला किर्त्ति विस्तरी,त्रिभुवन मांहि विख्यातारे.श्रीसूरि. २
साचो धरम हृदये धर्यो, साधु रतन गुरु पासेरे;
संयम समता मन धरी, विद्या सकल अभ्यासेरे. श्रीसूरि. ३
धन जिनशासन सायरे, अभिनव प्रगट्यो चंदोरे;
नाम जपंतां जीभडी, पामे अधिक आणंदोरे. श्रीसूरि.४
ज्ञान क्रियाए शोभता, भवियण चित्त विकाशेरे;
जेहवा जिणवरे वागर्या,तेहवां वचन प्रकाशेरे. श्रीसूरि.५

मरुधर गुज्जर मालवे, जीण दिसे पूज्यजी सिधावेरे;
तिणदिसे भवियण बूझवे,श्रीजिन आण मनावेरे. श्रीसूरि६.
पूरव पुन्ये गुरु मल्या, मुनिवरमांहि महंतारे;
पंचमकाले पामीया, ते सेवक पुन्य वंतारे. श्रीसूरि. ७
श्री गुरुना गुण उजला, जे जन कंठे गावेरे;
ते नरनी चढती कला,दिन दिन दोलत पावेरे. श्रीसूरि. ८
सत्तर सें पन्नरोतरे, मांडल गाम चउमासेरे;
श्रीजयचंद्र सूरींद्रना, श्री पद्मचंद्र सूरि भापेरे. श्रीसूरि. ९

॥ श्री पार्श्वचंद्रसूरि गुरुजीनी सज्झाय ॥

सुमति जीणंद समरी करीरे,समरी श्रीगुरु नाम. गणराजारे.
गच्छपति गिरुओ गाइएरे लाल, धन्य घडी धन्य जाम. गण.
तुं हम सुखकारी सदारे लाल, श्री पार्श्वचंद्र सूरींद्र. गण.
भविक कमल प्रतिबोधवारे लाल,प्रगटयो परम दिणंद. गण.१
नयर हमीर हरावतोरे लाल, अमरावती अभिराम. गण.
वेलग शाह वसे तिहांरे लाल, विमला ललित नाम.गण.२
पुत्र पवित्र प्रशव्यो तिणेरे लाल,जीम प्राची दीसी सूर. गण.

घर घर मंगल गाइएरे लाल, ओछव आंणंद पूर. गण.३
कुमर कलागुण आगलोरे लाल, सुंदर देह सरुप. गण.
नाम दीयो हरखे करीरे लाल, श्री पार्श्वचंद्र अनूप.गण.४
सारिंग वदन सोहामणोरे लाल, सारिंग नयन रसाल. गण.
सारिंग शिखासम नासिकारेलाल,सारिंगसरिखीचाल.गण.५
साधु रतन सुख कारीयारे लाल, पासे सुणि उपदेश. गण.
लघुवय संजम संग्रह्योरे लाल, छोडी करम कलेस. गण.६
चउद विद्या चतुराइसुंरे लाल, भणे भणावे शुद्ध. गण.
युगप्रधान जग जागतोरे लाल, वाणी साकर दूध. गण. ७
च्यार कषाय निवारतोरे लाल, पंच महाव्रत भार. गण.
विषय कषाय न पीडीओरे लाल. दया क्षमा भंडार. गण.८
नाम तुम्हारे पूज्यजीरे लाल, होवे परम कल्याण. गण.
रोग सोग दूरे टलेरे लाल, पामे अविचल पाण. गण. ९
मात पिता तुं तुं धणीरे लाल, तुं ठाकुर गुरुराय. गण.
तुं तारक तरणी समोरे लाल.लब्धिलब्धि प्रणमुं पाय.गण.१०
गुण तोरा गुंण सागरुरे लाल, कहेतां नावे पार. गण.

वलिवलि एहज विनतीरे लाल,कर कर मोरी सार. गण.११
सेवकने सुरतरु सहीरे लाल, ताहरुं नाम सूरीस. गण.
वाचक श्री देवचंदजीरे लाल, प्रतपो कोडी वरीस. गण.१२
संवत सोल बिडोतरेरे लाल, श्री जावला ग्राम मांहि. गण.
सद्‌गुरुना गुण संथव्यारे लाल, वीरजी मन उछांहि.गण.१३

॥ श्री पार्श्वचंद्रसूरि दूहा. ॥

गजमुख गनमति ग्यानगुरु, लंबोदर लिवलाय;
ग्यान पुन्य वंछ प्रगुणी, तउ गवरी नंदन गाय. १
तुं समरंतां शारदा, निजमति निरमल ज्ञान;
तपगच्छ गाइसे गुरुतिलो, धरीसुं केवल ध्यान. २
पार्श्वचंद्र पट्टोधरण, प्रसिद्ध समुद्रां पार;
कासमीर कंकण कनोज, कहिधर कोट कंधार. ३
धर जंगल जेसाण धर, सोम मकइ धर संघ;
परता पूरण पार्श्वचंद्र, प्रसिद्ध समुद्रां कंध. ४
नदि वहे जेवि पंच नदि, वदे फीरंगी वाद;
वित्त समुद्रां लेवले, पार्श्वचंद्र परसाद. ५

धरसोदां जाडे चधर, यात्र धराधर जाम;
पछिमनेमेतो पादुके, पार्श्वचंद्र परणाम. ६
सोरठ गुज्जर सरधर, गढ शेत्रुंज गिरनार;
पार्श्वचंद्र गावे पृथ्वी, माने वरण अढार. ७
धरती उत्तम दक्षिण धर, केके भाखा गच्छ;
निज अंतरिख जुहारिये, साय घडी सक्रंयच्छ. ८
शेतबंध रामेस्वर, लंक परेपर लंक;
राज समिपे वानरा, एह विधाता अंक. ८
जण तुं नारि पुत्रजणि, जीम हालीहल जाय;
सीस चांधि प्रीतम सूझ सूआवडि सीराय. १०
ढाकगाजे हणमंतनी, वसे पताले वगि;
प्रसिद्ध तुम्हारी पार्श्वचंद्र, जागी सार जगि. ११
वलि काशी वाणारसी, भोमि प्रगटे भाण;
पूरव हाजीपूर पट्टणे, पार्श्वचंद्र परिणाम. १२
हंस शामल उज्जल कगा, मानव घोडा मुख;
पार्श्वचंद्र तो पादुके, सेवक पामे सुख. १३

सूरज किरणे सीझवे, अगनि पखाणो अन्न;
समझे अक्षर वासने, पहेरे वलि तरुपन्न. १४
केसर रुंखे घर ठवे. पहिरे वसत पस्सम्म;
पार्श्वचंद्र पाथोरीयो, धरतेती जीन धरम्म. १५
पार्श्वचंद्र सारी पृथी, आपती धर्म आण;
उपदेशे जन आवता, देशपती दीवान. १६
गढपति राजा मालदे, छत्रपतीआं छत्रछाय;
वडा महीपति वंदता, पार्श्वचंद्र दतो पाय. १७
गढपति मालदेव गति, वाचे आ वचन्न;
पार्श्वचंद्र रीखेश्वर मेटीए, सोही दहाडा धन्न. १८
वणराये जीम कल्पवृक्ष, जेम परवते मेर;
सात समुद्रे खीर सर, तेम रुखे पासेर. १९
नदी आंमणि गंगानदी, शास्त्र मणि सिध्धंत;
सतीयां मणि सीता सती, तिम पारिगे पुन्पवंत. २०
इसो संवच्छर आवीयो, इलि आयो आसाढ;
कोरो श्रावण भाद्रवो, तिलर रलके ताढ. २१

अन्न सुके गो नूमरे, सरवर पडिया ठाल;
जोडे घास न सालगा, महासचिंतो माल. २२
पंडित ज्योतिप पूछे जइ, नित खरचीजे दाम;
माल कहे रहेसे नहि, मेह पखीणी मान. २३
खेडा देवता पूजीया, जगे कीधा मेह जाल;
कमध घणी आरती करे, मेह पखीणी माल. २४
वहिसि संजोडा बोलीया, पुहि मोटा परधान;
पार्श्वचंद्र सरिखो पृथिवी, रुखी दुजा राजान. २५
आयो राय उपासरे, वडुं वरावांथट्ट;
हय दल गयदल घाघट, गाजे द्वारि गरट्ट. २६
राय विनय भरि बोलीयो, पूज्य चरणे धरि नेह;
मालधणीए विनति, मही वरसावो मेह. २७
वैदक ज्योतिप व्याकरण, शास्त्र सूत्र सिद्धंत;
मंत्र तंत्र यंत्र जागवा, वलि एहवा बुद्धिवंत. २८
संयम पालांधर सूयां, मागी करां आहार;
पूज्य पयंपे माल प्रति, इंद्र किणारे सार. २९

उवराएयं पयिआंगमां, दुःखमां रांखो देह;
पर उपगारी जीवडा, म्हां किम आवे मेह. ३०
चित चलणे चखि लोचने, नमीओ माल नरिंद;
पार्श्वचंद्र गाजोपखे, आराधे कुंण इंद. ३१
कीधो आगम कासटा, जपिया जाप जिणंद;
बारह पद ते धारिया, वंदण चंद मुणिंद. ३२
अंबर कसि डंबर कीयो, वलीउ मोटो वयण;
वलिकि चढी एक वादली, गाज सहेनी गयण. ३३
वाटे वेलावो लीजे, जग आयो जलधार;
सर भरीया नदी खलकीया, पाणी पडे अपार. ३४
नदीयां पूरह मालीयां, रेणु भ्रवी वणराय;
पुरि पुरि लोक पुकारीयो, वरसे इंद्र सवाय. ३५
कै मंदिर कै मालीयां, कै प्रसाद अनूप;
धानवहे कोठा ढहे, मेह चत्र गुणै रुप. ३६
उदधि सहि उलटीओ, के अंबर फाटे जाम;
राय पधारो रावटी, नही मेहरो काम. ३७

छाजामुहि पाणी पडे, पृथवी पडि पोकार;
आयो राव उपासरे, वरसंते जलधार. ३८
परतो पुगो पार्श्वचंद्र, दुखम चारित्र देह;
वरसण तिण एक वचन, वारह मलिया मेह. ३९
दीह सभोगाव उलजइ, सुभिख होय संसार;
आवे राय उपासरे, दिन उगे दोय वार. ४०
माल पयंपे गुरु सुणो, अवतारिक अथाह;
माहरे एक मोटो पिसुन, सूर जीसो पतिसाह. ४१
वहुविध माल वीभंसीयो, का उत्तम मति कीध;
वान एक वायो जोण, सघला कारिज सिद्ध. ४२
वचनतणी महिमा वधी, शत्रु आथमीयो सूर;
मालहर महि गाजीया, ढोल ददंमा माहातुर. ४३
पार्श्वचंद्र पट्टोधरण, समरचंद्र गुरु सूर;
परते गुरुने पालीया, पंच महाव्रत पूर. ४४
समरचंद्र गुरु सारिखा, राजचंद्र तिणरात;
खडगधार चारित्र खरो, चढे धरालग वात. ४५

गच्छधोरी गाजे गुहिर, विमलचंद्र वडिवार;
पट्टोधरण प्रगटीयो, जयचंद्र जगे आधार;
जे राजा परजाहजे, सहुको नामे शीप.
जयचंद्र आयो जोधपुर, पुगी सवहि जगीस.

श्री पार्श्वचंद्रसूरीश्वजीनी स्तुति.

वंश इलागे राजीओ. ए देसी.

श्री गुरु गच्छपति गुणनिलो, गुरुओ गुणह भंडारोजी;
वर तपगच्छ वर शिरतिलो, शासणनो शिणगारोजी. १
युग परधान जगे दीपतो, श्री पार्श्वचंद्र सूरींद्रोजी;
नामे नवनिधि संपजे, चरण नमे नर वृंदोजी. युग० २
प्रागवंश प्रगट कर्यो, वेला शाह मल्हारोजी;
लघुवय संयम आदरी, सकल जीव सुखकारोजी. युग० ३
किरिया आदरे आकरी, उपदेशे जिनधर्मोजी;
सांभलि भवियण आदरे, पामे ते शिव शर्मोजी. युग० ४
सवालख मरुधर मालवे, मेदपाट मेवाडोजी;

---

१ आ दुहानी मत एकज होवाथी यनता प्रयत्ने सुधारेल छे.

गुज्जर सुंदर ठेकाणे, प्रगटी गुण अवतारोजी. युग० ५
गाम नगर बहु संचरी, बुझवे भवियण जाणोजी;
मिथ्या मत तम वारियो, उग्यो अभिनव भाणोजी. युग० ६
जोध नयर गुरु आवीया, साथे बहु परिवारोजी;
संघ सहु अति हरखीया, मांडे ओछव सारोजी. युग० ७
सोल बारोत्तर वत्सरे, उचरी अणसण सारोजी;
मृगसिर सुदि त्रीजे लह्यो, उत्तम सुर अवतारोजी. युग० ८
संघ सकल भगति करे, कीधो थुभ विसालोजी;
चरण कमल तिहां थापीया,महिमा अति विस्तारोजी.युग० ९
दुष्ट कष्ट अरि दुह टले, रोग शोग भय भीतोजी;
नाम प्रभावे तुम तणे, लहीये सवले जीतोजी. युग०१०
सुरतरु सुरमणिनीपरे, पूरे वंछित सारोजी;
श्री रायचंद्र सूरि विनवे, श्रीपार्श्वचंद्र गणधारोजी. युग०११

॥ श्री पार्श्वचंद्रगुरु सज्झाय ॥

कुंमर सुबाहु वखाणीयेजी. ए देशी.

श्रीजिनशासन जाणीयेरे, युगप्रधान जयवंत;

जिनशासनको वाहरुरे, दीठो ए मतिमंत. १
सुगुरुश्री पार्श्वचंद्र सूरीश; (ए आंकणी.)
भाव धरीजे ओलगेरे, पूरो मनह जगीश. सुगुरु. २
जणकी वाणी सांभलीरे, जाये पातक दूर;
मनवंछित सहुए फलेरे, तरिये भवजल पूर. सुगुरु. ३
पंच महाव्रत शुद्ध धरेरे, नवविध पाले बंभ;
पंचेइंद्रि वस करीरे, छंडयो सवकुछ दंभ. सुगुरु. ४
चउकपाय अरियण दल्यारे, मोह मनाव्यो आण.
पंच प्रमाद जीणे परिहर्यारे,मनमथ मर्यो माण.सुगुरु. ५
सूत्र अरथ शुद्धा कहेरे, तिण कारण गीयथ्थ,
भवजल पडतां वेलडीरे, तारण तरण समथ्थ. सुगुरु. ६
सोम्यगुणे शशि जाणीयेरे, तेजे दीवाकर सोय;
सुखकर नाम श्रवणे सुणीरे,सफल जनम इम होय.सुगुरु.७
विमल शंख खीरे भर्योरे, दीसे तारो नार;
ज्ञानक्रियासुं संजुत्तारे, सोहे उभय प्रकार. सुगुरु. ८
पाप पंक लागे नहीरे, सोवन वन्न शरीर;

परिसहानलेडोले नहीरे, मेरु तणी परे धीर. सुगुरु. ९
मैत्री सविहो जीवसुंरे, शत्रुनको संसार;
सेवे जे जन अहनिशेरे, तसु मन शंसयहार. सुगुरु. १०
तप जप संयम आगलारे, वाणी अमिय समाण;
मिथ्या तम रिपु नासवेरे, उग्यो अभिनव भाण.सुगुरु. ११
विद्या सघली जे जगेरे, तिण का जाणे मर्म;
त्रिणि तत्त्व निरता कहेरे, देव गुरु सुधर्म. सुगुरु. १२
भावजोग किरिया सदारे, निरमल दीसे जास;
धर्म देखाडे तिणि परेरे,जीम निरवद्य होय भास.सुगुरु.१३
वादी गजघट केसरीरे, जाणो जगह वदीत;
कूड कपट छल केलवीरे, कीणे हारे नहु जीत. सुगुरु.१४
अढार सहस सिलांगधरुरे, दसविध मुनिवर धर्म;
क्षमाआदि पाले खरोरे, अशुभ निवारे कर्म. सुगुरु. १५
महा मंडलि मुनि परिवर्याजी, विहरे साहसधीर;
सूरि शिरोमणि जाणीयेरे, सायर जेम गंभीर. सुगुरु. १६
मन मोरो चातक परेरे, देखी अभिनव मेह;

वरसे बारह मासडारे, भींजे जनमन देह. सुगुरु. १७
नागोरी तपगच्छे भलोरे, साहुरयण गुरुशीप;
दिनदिन दीसे दीपतारे, जाणो विसवावीस. सुगुरु. १८
प्रागवंश कुले चंदलोरे, सकल कला संपन्न;
गिरुओ ए गुण आगलोरे, वेलाशाह सुतन्न. सुगुरु. १९
रयण अमूलिक जाणीयेरे, विमलादे उर खाण;
भविक जीव प्रतिबुझवेरे, बोले मधुरि वाण. सुगुरु. २०
एकण जीभे किम कहुंरे, गुणह नलाभुं पार;
श्री समरचंद इम विनवेरे, आपो भवनो पार. सुगुरु. २१

*श्री पार्श्वचंद्र सूरि सझ्झाय. राग मारुणी.

हवे बीजोरे श्रीगुरु तत्त्व विचारियेरे, जीण विण न लहे माग
प्राणीरे श्रीगुरु जेणे ओलख्यारे, तेहना जाग्या भाग. *१
श्री गुरुरे श्रीपार्श्वचंद्र सूरीसरुरे, अभिनव उदयो भाण;
वडतप गच्छेर नायक सहजे सुरतरुर, करे जिनआंण प्रमांण. २

---

* 'श्रीगुरु तत्त्व विचारीयेरे' आ पदनो समावेश न थवाथी मुकी शकायुं नथी माटे दरेक टुंके आवी रीते वांची लेवुं.

साचोरे भाखे ते गुरु जाणीयेरे, जीम कह्यो सूत्र मझार;
देशविरतीरे सर्वविरती मारग बन्हेरे, भाखे सूत्र आधार.३
इग्यारहरे वोल जेणे प्रगट कर्यारे; जीम कह्या वीपराय;
सद्दहणारे सुद्ध जेणे प्रगट करीरे, मांने जे नरभाय. ४
विस्तररे कहेतां पार न पामीयेर, गुरु गुण अछे असंख;
सो जीमेरे सुरगुरु सरिखो जे कहेरे, तोहि नावे संख. ५
गुरु हिमकररे दिणयरसमगुणजाणीयेरे,गुरु वेलाशाहमल्हार;
विमालादेरे धन्नमात जेणे जनमियारे,प्रागवंश शिणगार. ६
तसुपाटेरे समरचंद्र सूरिराजीयारे, जे हुआ वाल ब्रह्मचार;
तसुपाटेरे विजयवंत गुरु गणधरुरे, नाम रायचंद सूरिधार.७
केशीगुरुरे परदेशीजीम तारियारे, तिणे पांम्यो अमर विमान;
वाचकरे मानचंद्र इणिपरे भणेरे, ए गुरु तत्त्व प्रमाण. ८

श्री पार्श्वचंद्र सूरि सज्झाय.

प्रणमुं तीर्थपति वर्द्धमांन जिनराया,
इग्यार गणाधिप नमीये तेहना पाया;
जेणे प्रगट कर्यो शिव मारग जनहितकारी,

बहुजीव उगार्या चउगइ दोप निवारी. ॥ १ ॥
वडतपगच्छ नायक थयसुं बहु गुणवंत,
जिणशासणमांहि वरते छे जयवंत;
श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वर शुद्ध प्रकाशक सोय,
जीण दुपम आरे मार्गठव्या बहु लोय. वड. २
ममताने माया छंडी कुमत निवारी,
दुकर व्रत लीधो वालपणे ब्रह्मचारी;
जीम शास्त्रे सुंणीये वयर कुंमर वेरागी,
तिम ए गुरु दीठा परतख सुभमति जागी. वड. ३
एक असंयम वरजे दुविध वंधण सविटाले,
दंड सयल नयणथी परहरे संयम पाले;
सोल कपाय चउवरजे महाव्रत पंच आराधे,
षट्काया राखे मुगतितणा सुख साधे. वड. ४
प्रागवंश यसुसरु वेला शाह मल्हार,
विमलादे जनम्या त्रिण भुवन शिणगार;
छ दरिशण केरो जाणे सघलो भेव,

पांचसुमतिं सुमता वांदीजे नितुमेव. वड. ५
इणे पंचमे काले वहुजण पड्या प्रवाह,
मनवेप आरंभे थाये एक उच्छाह;
विधि वादय जींणने माथे दीयेजे आल,
एक श्रीजिन प्रतिमा उथ्थापे छे बाल. वड. ६
एवमादि मनांतर जाणे सूत्र विरोध,
छांडीने लीधो मारग सूत्रकस शुद्ध;
धर्ममिश्रत आरंभ देखी रहे उदास,
यतिमारग निरतो पाली करे प्रकाश. वड. ७
भरते एम दुषम जुगपरधान इमजाण,
ज्ञान दरिसण चारित्र धारक मनुप वखाण;
भवतारण प्रवहण समवड सद्गुरु होय,
इमजांणी दिन दिन, समरिजे मनसोय. वड.
गुरु गौतम सरिखा गिरुवा गुण भंडार,
गुरुनाम जपंतां लहीये भवनो पार;
गुरु दिणकर सरीखा गुरुदीवो गुरुदेव,

गुरुशशीहर शीतल दीखावे सवि मेव. वड. ९
गुरु पंकज सरिखा कामभोगे नवि लीण,
नवकल्पे विचरे परीसह वलनविदीण;
रायरांणी सेवे जेनेनिजहित जांण,
एहवा गुरु सेवो उलट हैडे आंण. वड. १०
पुण्यउदयज लाधी एहवा गुरुपाय सेव,
देखाडीय जेणे धर्म सुगुरु सुद्ध देव;
चीरं प्रतपो मुझगुरु सपरिवार निशदीश,
मनरंगे पभणे श्रीसमरचंद्र निशदीश. वड. ११

श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वर सज्झाय.

अविचल वाचा पूज्यनीरे, मेरुतणी परे धीर;
उपशम रस आणे सदारे, सायर जेम गंभीर;
विवेकी पूज्य श्रीपार्श्वचंद्र सूरीन्द्र. १.
करजोडी वंदु सदारे, दीठडे आणंद पूर. विवेकी०
पातक नासे दूर. विवेकी० घर घर मंगलतूर. विवेकी०
पांमीए कूर कपूर. विवेकी० उल्लसे पूण्य
अंकुर. विवेकी० ए आंकणी. २.

जिनतणी आण पाले खरीरे, देखाडे जिनधर्म;
भविक लोक ते आदरीरे, पामे वंछित शर्म. विवेकी० ३
माया मोह विषय तजीरे, छंडे क्रोध कषाय;
पंचे इंद्री संवरेरे, कोमल सुंदर काय. विवेकी० ४
पंच महाव्रत आचरेरे, जेहवा पूरव साध;
भाव भगते सेवा करेरे, तेणे नरभवफल लाध. विवेकी०५
महिमा सागर कुलतिलोरे. जिनशासन शणगार;
वच्छराज मुनि जंपे मुदारे,धन धन एह अवतार.विवेकी०६

श्रीपार्श्वचंद्रगुरुगीत.

राग गोडी:

मोहनरूप तेजभरे दीपेरे, जीपे काम विकार.
युगपरधान गुरु राजीओ, छहकाय हितकार;
सूरीश्वर वंदीजे श्रीपार्श्वचंद्र सूरींद्र. १
दरिशण भंद अमंद, सूरीश्वर वंदीजे;
श्री पार्श्वचंद्र सूरीन्द्र ए आंकणी.
पुरवाडे कुलदीपक मुनिवर, वेलगशाह सुतन;
विमलादेमाता उर जनम्या, पंडितशिरोरतन. सूरि. २

साधुरतन गुरु जगेजश प्रगटयो, वडतप गच्छ शिणगार;
सुधा समाणी वाणी गुरुनी, निरमल गुणह भंडार. सूरि. ३
सकल शास्त्र तणा गुरु आगर, कुमति मतंगज सिंह;
शुद्ध सद्दहणाए गुरु दाखे, अनोपम अकल अबीह. सूरि.४
गंभीरिम गुणे सायर सरिखा, मंदरगिरि जेम धीर;
पंचमकाले एगुरु गोतम, जीत्यो मनमथ वीर. सूरि.५
गुज्जर मरुधर मालवदेशे, बोध्या भवि एके अनेक,
वादी मृगलां दीसे मृगपति दीठे सुछेक. सूरि.६
धर्म धुरंधर धोरी जगमें, दरिसणे दारिद्र दहीए;
वीरपटोधर तुमचा जे गुण, एके जीभे केम कहीये. सूरि.७
राय राणा सवि सेवासारे, पंडित प्रणमे पाय;
बीजो पुरुष कोण छे युगमें, जे तुम समवड थाय. सूरि.८
नयर जोधाणे सिधा सहगुरु देवथया गुरुराज;
सुख संपत गुरुनामे लहीये, प्रणमे मुनि मेघराज. सूरि.९

॥ सुविहित सुगुरु गीत मिदं ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तं ॥

यो लेभे गुरुसाधुरत्नकृपया पारं श्रुतांभोनिधे–

यों जैनागम संगतां सुललितां चक्रे हितां देशनां ॥
यः स्वान्योपकृते निमित्तमकरोत् ज्ञानक्रियास्वादरं;
तं सूरीश्वरमुत्तमं युगवरं श्रीपार्श्वचंद्रं स्तुमः ॥ १ ॥
श्रीमद्विक्रमभूपते र्हयगुणाचारोपधीशाब्दके ॥
(१५३७)यस्यानल्पगुणाकरस्य सुगुरो र्जन्माभवज्ञावुकं॥
स्वर्लोके गमनं करेंदुरसव्रवर्षेतथैवाभवन् (१६१२)
सर्वायुःकिल पंच सप्ततिसमास्तं पार्श्वचंद्रं स्तुमः ॥ २ ॥
आस्ते गुर्ज्जरनीवृतीय नगरः श्रीमान् हमीराह्वयो;
जन्मस्थानमहो सुधामविमलं यस्यार्बुदासन्नकः ॥
स श्रीप्रागकुलावतंसवणिजः शावेल्हकस्यांगजो;
जीयात् श्री विमलासुतो गुणनिधिः श्रीपार्श्वचंद्राह्वयः॥३॥
दीक्षां यो रसवेदबाणपृथिवीवर्षे (१५४६) ग्रहितशैशवे.
श्रीमत्पंडित साधुरत्नसुगुरोःपादस्य पादांतिके ॥
यः सूत्रोक्त सुयुक्तिपंक्त्यनुगतं सद्ज्ञानगर्भ क्रियो;
द्धारं बाणरसेषु भूप्रमितके वर्षे करोत् तं स्तुमः ॥ ४ ॥
चारित्रं प्रतिपालयन् जिनमतं प्रोद्भावयन् भूतले;

कुर्वन् मालवगुर्जरात्रिमरुपूदग्रं विहारंक्रमात् ॥
प्राप्तो योधपुरं पुरंदरपुरं विज्ञाय चायुः क्षयं,
कृत्वांतेनशनं समाधिमरणाद्यः स्वर्गतस्तं स्तुमः ॥ ५ ॥
ते धन्याः कृतपुण्यकाश्च खलु ते यैर्लब्ध ईदृग् गुरु;
र्हृत्संदेह हरो भवार्णवतरी गीतार्थ सार्थोत्तमः ॥
अस्माकं तु श्रुतोक्ति युक्ति लहरीलोलस्तदीयोवचः ॥
पारावारवरो वियोगजनितां तापं प्रहर्तुं क्षमः ॥ ६ ॥

द्रुतविलम्बित.

सुगुरुगीतमिदं रचितं मया,
वसुगुणांकमृगांकितवत्सरे ॥ १९३८.
जगति यावदिहेंदुदिवाकरौ,
विजयतात् खलु तावदहर्निशं ॥ ७ ॥

मालिनी छंद.

पठत पठत संतः संततं भक्तिमंतो,
रविविरचितमेतत् पार्श्वचंद्रीयगीतं;
शिवयुवतिविवाहे मंगलाभं सुलाभं,
सुगुरुगुणनिबध्धं सेतिहासं सुवृत्तं. ॥ ८ ॥

॥ श्री पार्श्वचंद्र सूरि सज्झाय देशी वींछीयानी.

शारद पाय प्रणमी करी, मन आणी आणंद पूर होलाल;
निजगुरुनागुण गावतां, वाधे अधिको नूर होलाल. १

श्री पार्श्वचंद्र सूरिवंदीये, वंदतां पहोचे आश होलाल;
सकल साधु शिरोमणि, मोटो महिमा जास होलाल. श्री०२

वैरागे मन वालीयुं, बालपणाथी जेह हो लाल;
देशना गुरुनी सांभली, चारित्र लीधो तेह होलाल. श्री०३

वयरसामी तणी परे, भणिया सूत्र सिद्धांत होलाल;
सास्त्र सघलां शीखीयां, सदा जे बुद्धिवंत होलाल. श्री०४

नंदिषेण सम देशना, तपेकरी धन्नो अणगार होलाल;
लब्धि गोतम सारिखो, क्षमा तणो भंडार होलाल. श्री०५

नाति चोरासी वाणीया, क्षत्री सवे सिरदार होलाल;
एम अनेक प्रतिबुझव्या, कहेतां नावे पार होलाल. श्री०६

गुजरात मरुधर मालवो, कच्छ सोरठ हालार होलाल;
सुद्ध समकित दीये सुखडी,करता उग्र विहार होलाल.श्री.७

श्री गुरुना पाय सेवीये, रहिये एक चित्त होलाल;
इहलोके सुख संपदा, परलोके मुगत मझार होलाल. श्री०८
राजनगर रही करी, मन आणी अधिक उल्लास होलाल;
सझ्झाय रची भणवा भणी,इच्छाचंदे सुविलासहोलाल.श्री०९

॥ श्री पार्श्वचंद्र सूरि गुरु स्तुतिः ॥

उज्वलगिरि नमुं नेम जीणंद. ए देशी.

शुभ अनोपम पगलां सुंदर, रुप मनोहर महिमा मंदिर;
चरण कमल वंदुं आणंदा,
धन धन श्रीपार्श्वचंद्र सूरीन्दा. चरण. ए आंकणी. ॥१॥
वेलगपिता विमलादेमाता,प्रागवंश गुरुजगत्रविख्याता.च.२
साधुरतनगुरुशिष्यशिरोमणि,गच्छपतिवडतपगच्छनभोमणि.
पंचमहाव्रत पंचाचारा, षट्कायजीव प्रतिपालनहारा. च. ४
मोह मदन भड वैरी जीता,पंच इंद्री जीत्त वदीता. च. ५
चिंहुं प्रकारे धर्म प्रकाशे,उत्तम भवियण चित्त विकासे.च.६
गुणसागर प्रतिबोध दिवाकर,सोमकला गुणे जीत निशाकर;
आगम निरवद्य मधुरी वाचा,बोधिबीज गुण दायक साचा.८

करणी साची ने बुद्धि साची,प्रगटी धर्म सामग्री जाची.च.९
निर्मल शिवपद मारग साधे,सुधी जिणवर आण आराधे.१०
श्रीपार्श्वचंद्रसूरि संकट चूरे,सकल कुसल वंछित फल पूरे.११
श्रीसंघ चतुर्विध सेवा सारे, वाहण सम भव सायर तारे.१२
पूज्यअचिंत्यचिंतामणिकहिये,विमलचारित्रसेवकसुखलहिये

श्री गुरु महाराजनी स्तुति.

सार नगर वर हमीर वरे, धण कण कंचण महिम भरे;
प्रागवंश वेलग शाह नरे, जसु विमलादे शुभ नार घरे. १
सुत जनम्यो साजन आशफली, घर घर महोच्छव रंग रली;
अंग लक्षणपूरा रिद्धि मिली,लहे विद्या वृद्धि विवेक वली. २
श्रीसाधुरतन गुरु वांणी सुंणी,लही अनुमति संयम लीधगुणी
हुआ पंडित आगम ग्रंथ भणी,पदपाम्या श्रीगुरु किर्ति घणी.३
हेडे जिनशासन भाव धरी, बहु देश विदेशें गुरु विचरी;
सद्दहणा शुद्धि प्रगट करी, भवियण पडिबोध्या बुद्ध खरी. ४
उपदेश न सावद्य लेशभजे, गुरु दूपण अढारे दूर तजे;
गुरुमहाव्रतसुमतिसहितभजे,गुरु गोयमसमवहिलब्धिभजे,५

श्रीपार्श्वचंद्रसूरिगुरुचित्तवस्या श्रीपार्श्वचंद्रसूरिमहिमाविकस्या
श्रीपार्श्वचंद्रसूरिकल्पवृक्षजीसा, श्रीपार्श्वचंद्रसूरिकामकुंभतिसा
गुरु वांद्यां गंजन भय टलिया, एहवा गुरु भागवसे मलिया.
गुरुदरसण देखीदिनवलिया, गुरु दरसण मनवंछितफलिया. ७
श्रीयोधनयर अणसण उचरी, पूज्य पाम्या सुख सुरलोयपुरी;
पगलां थुभ मंडै भगति करी, संघ पूजे जग महिमा पसरी. ८
नागोर नगीने थुभ जयो, थुभ मंडप रचियो पूज तणो;
पाउलांनितवंदेलाभघणो, धन्यजन्मसफलथयोतासगणो. ९
श्रीविक्रम नयरे थुभ जयो, पूज पगलां वंदित लाभ थयो.
सवि पाप तिमरभर दूर गयो, सेवक जन चित्त प्रमोद थयो.
गुरुना गुणगातां चित्त उल्लसे, गुरु भजता श्रावक चित्त उलसे;
गुरु परतिख परता फल विकसे, गुरु उत्तम हैडे रंग वसे. ११
गुरु नामे आपद दूर हरे, गुरु नामे कुशले पंथ वहे;
रिद्धि अष्टमहासिद्ध महमहे, पूज्य सूरशिरोमण शोभ लहे. १२
गुरु समर्यां संकट दूर हरे, गुरु समर्यां सायर हेल तरे,
वयरी मदछंडी सेव करे; वामासुत बंधव भगत धरे. १३

श्रीपार्श्वचंद्रसूरिगुरु चढति कला, उत्तमनरपावनगुणप्रबला;
पूज्यविमलचारित्रसेवकजमला,सुखसाधकपामेशिव कमला.

॥ श्री अष्टप्रकारी पूजा प्रारंभः ॥

अनुष्टुप् श्लोक.

१. अथ प्रथम जल पूजा.

स्मृत्वा गुरुपदांभोजं, नत्वा स्तुत्वा विशेपतः ॥
विधीयते गुरोरर्च्चा, द्रव्यभावप्रकाशतः ॥ १ ॥

दुहा–क्षीरोदधिजल अमृत निधि, गंगा गोमतिवार;
कंचन कामित कलश भर, चरण न्हवण करोसार. ॥२॥

ढाल–सेवक सारण वान वधारण श्रीगुरुराज;
चरण करण सुख न्हवण चरणलहे भविक समाज.
राजीत रूपे किनर कुमर रमण शिरसाज.
श्रेणि समान अमानगुणी घणुं मंगल काज.॥ ३ ॥

चाल–अमल जलकलश भरी कुमर आवे,
मधुर सुर रमणी गुण गीत गावे;

अशुभ मल विकल कल विकल काजे;
सुगुरु क्रम कमल स्नानें विराजे. ॥ ४ ॥

त्रोटक–काव्यं.

विदधे स्नपनं तपनोत्करभा, भरभासितसत्क्रमणस्य गुरोः
वरवारिभि रादरतस्त्वरितं, तरु पुष्पकलाप सुवासरसैः ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने परमदेवाय श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वर सद्गुरुभ्योः जलं समर्पयामि स्वाहाः॥इतिजलपूजा.

. २. अथ द्वितीया चंदनपूजा.

दुहा–कुंकुम चंदन चरचीयें, कस्तुरी घनसार.
सरस सुरभि द्रव्य मेलीये, करीयें विध विस्तार. ॥१॥

ढाल–सद्गुरु चरचित कमल विधे विधि वारंवार;
केसर घोली भरीय कचोलि पूजो सार.
पूरण अनुभव प्रगटे आतम कुमति नशाय;
उपगारी गुरु सद्गुरु चरण नमुं चित्तलाय. ॥ १ ॥

चाल.

मोटका पाप संताप कापे, परम आनंद कल्याण आपे;
सूरि पार्श्वचंद्र साधुरत्न पाटे, पूजीयें पूज गहगट्ट थाटे२;

द्रुतविलंबित-काव्यं.

सुरभिमिश्रितकुंकुमचंदनैः
सुगुरुपादमहांबुजसेवितैः
भविक पुन्य फलं लभते सदा,
प्रबल भक्ति प्रशादचिरं मुदा. ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने परमदेवाय श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वर सद्गुरुभ्यः चंदनं समर्पयामि स्वाहाः॥ इति चंदनं पूजा ॥२॥

३. अथ तृतीया पुष्प पूजा.

दुहा—चंपक जाइ मोगरा, केतकी फुल गुलाब.
सद्गुरु चरणे लाइयें, भरि भरि सुंदर छाब. ॥ १ ॥

ढाल—पूरण परमल आद्रित जाग्रत भ्रमर भुयंग,
निपट लपट नित लक्ष सहसदल कमल सुचंग;
माल कलावलि विकसित तेकली ठवे एह,
भविजन भावे आवे पावे सुख अछेह. ॥ २ ॥

ढाल—चरणभर निजर कर सरस फुले.
भविजना भक्ति भावे अमूले;

सकल मनवंछित काज सारे,
जेह गुरु चरण नयणे निहारे. ॥ ३ ॥

वसंततिलका काव्यं.

संपूरितै र्दशदिशो धवलाभिरुपैः
संमोहितालिगणगीतयुतैश्च पुष्पैः
यस्ते समर्च्चति पदं परमं लभंते,
श्री पार्श्वचंद्रगुरुपादविलासलीलं. ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने परमदेवाय श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वर-सद्गुरुभ्यः पुष्पं समर्पयामि स्वाहाः ॥ इति पुष्पपूजा ॥३॥

४ अथ चतुर्थी धूप पूजा.

दुहा—अगर तगर अंबर सुरभि, नंदन चंदन मोद;
श्रीपार्श्वचंद्र सूरींद्र गुरु, वासित परम प्रमोद. ॥ १ ॥

ढाल—ते गुरु चरण सुवासे वासित तेहना अंग,
गंध सुगंध सुचंग लहे नित देह अभंग;
पूरव करम प्रबल बल अशुभ उदय जो थाय,
ते पण दूर टले पार्श्वचंद्र सूरीन्द्र पसाय. ॥ २ ॥

चाल–धूजतां धूप गंधे सुगंधे, नवनवा स्वामिने उच्छरंगे;
दुर्मता दुर्गता दूर नासे, सुमति सद्भाव हैडे प्रकाशे. ३

त्रोटक काव्यं.

गुरुराजपदं वरवासमयै भविकः किल पूजयते प्रथितं;
निजदेवरुजं प्रलयंति खलु, बहुबुद्धिसमृद्धिनिधिः प्रथते. ४

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने परमदेवाय श्रीपार्श्वचंद्र सूरीश्वर-
सद्गुरुभ्योः धूपं समर्पयामि स्वाहाः ॥इति धूप पूजाः॥४॥

५. अथ पंचमी दीप पूजा.

दुहा–रतन जडित कंचन मयि, थाल ग्रही करमांहि,
मंगल दीप भलो धरी, अशुभ टले छिन मांहि; ॥ १ ॥

ढाल–अंजलि मध्ये त्रिकरण शुद्धे करियें एह,
ज्योति प्रकाशे निजघट भासे भासन रेह;
मंदमती गुण कूडा कुमति फीटे तेह,
एकमना थइ ध्यानालंबी रूपे जेह. ॥ २ ॥

चाल-चरण युगल निरखतां जेह प्राणी,
विधिसें रचे पूज मन भाव आणी;
प्रगट परिपूर्ण गुण आत्म हेतें,
सहज साधर्मी सर्वे समेतें. ॥ ३ ॥

उपजाति. काव्यं.

सुवर्णरुप्यादिसुवर्णपात्रे, निधाय दीपं च वरासखंडं;
यः श्रावको दीपमयां सुपूजां,भृशं विधत्ते सुतरां क्रमेण ॥४॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने परमदेवाय श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वर सद्गुरुभ्यः दीपं समर्पयामि स्वाहाः ॥इति दीप पूजा॥५

६. अथ षष्ठी अक्षत पूजा.

दुहा-अक्षत थाल रसाल भर, स्वस्तिक पूज करेइ;
स्वस्ति भली विधि नीपजे, आशु भय सर्व टरेइ ॥१॥

ढाल-अमल अखंडित अक्षर रहित भाव भरेय,
सद्गुरु आगल अक्षत थाल भरीय करेय;
नंद्यावर्त्तक कर्तक पाप पटल नित मेव,
सेवक लोक आनंद विधायक दायक सेव. ॥ २ ॥

चाल–समर कर चरण मन शुद्ध भावे,
स्वस्तिक पूर मंगल वधावे;
तेह निज गेह सुखश्रणि लावे,
पुत्रपौत्रादि संपत्ति पावे. ॥ ३ ॥

काव्यं–अमूल्यमुक्ताफलकैरखंडितैः
शितैर्घनै रक्षतकै विधीयतां;
श्रीमद्गुरुणां पुरतः सुभक्तितः
प्रसक्तये स्वस्तिककाममंगलं. ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्माने परमदेवाय श्रीपार्श्वचंद्र सूरीश्वर सद्गुरुभ्यः अक्षतं समर्पयामि स्वाहा ॥इतिअक्षतपूजा॥६

७. अथ सप्तमी नैवेद्य पूजा.

दुहा–मोदक केसरीया प्रमुख, पांचे ही पक्वांन;
सारा मधुर सुहामणा, परम अमीय समांन. ॥ १ ॥

ढाल–व्यंजन रंजन मंजन वदन शरोज विकाश,
नैवेद्य सद्य समुद्यत रचीय रसाल सुवास;

परमानंद प्रकाशक दायक वंछित काज,
लीला लहिर गहिर गुरु सागर सार समाज. ॥ २ ॥

चाल.

ढोकतां ढोक्य नैवेद्य सार, सयल दुःखह तणो करे निवार;
सेवकां सानिधि करण हार, जपे जे गुरु चरण वारंवार.॥३॥

द्रुतविलंबित. काव्यं.

मधुरसाधिक मोदक भोजनं,
विनयतो तनु ढोकयते गुरोः
सकलसौख्यभरंक्षुधितोजनः
सुलभमेव तमेति पुरः पुरः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने परमदेवाय श्रीपार्श्वचंद्र सूरीश्वर-सद्गुरुभ्यः नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहाः ॥इति नैवेद्य पूजा. ७

८ अथ अष्टमी फल पूजा.

दुहा—तरुवर फल वलि विमल सव, आंबा केला सार;
नारंगी नीबु प्रमुख, ढोवो ए निरधार. ॥ १ ॥

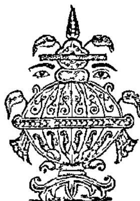
ढाल–विरचे श्रावक भाविक फलथी पूजा जेह,
लाभ क्रियाणे पगपग पामे परतक्ष तेह;
मंगल रंग सुचंग सदा निज गेह अमंद,
ध्यावे पावे भविजन भावे परमानंद. ॥ २ ॥

चाल–अर्च्चतां फल भरी पूर्ण भावे,
सुकृत फल सोभ शोभे सुभावे;
सकल मनवंछितापूर्णपामे,
सुगुरुश्रीपार्श्वचंद्रसूरीशनामे. ॥ १ ॥

॥ सदगुरु श्रीपार्श्वचंद्र सूरि दादानी आरती ॥

जयजयआरतिसद्गुरुजीकी, सकलसंघमिलगावोनीकी. जय.
वेलगशाह विमलादेनंदा, वडतपगच्छ श्रीपार्श्व सूरींदा. जय.
पंच महाव्रत पालन सूरा, गुण छत्रीस विराजत नूरा. जय.
आचारज पदगुरु अवतारी, श्रीजिन शासन आणंदकारी. जय.
जे नरनारी एकचित्ते ध्यावे, मनवंछित फल निश्चेपावे. जय.
प्रहउठी गुरु चरण नमिजे, विधिसुं पूजा आरती कीजे. जय.
करजोडी सेवक गुण गावे, लाभ सदा सुख संपद पावे. जय.

इति अष्ट प्रकारीसुगुरु पूजा समाप्त.



॥ श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वर सझाय ॥

॥ गरभावास राख्योरे कृपा तने बहु करी. ए राग. ॥

भवि तमे वंदोरे श्रीपार्श्वचंद्र सूरि,
पापनिकंदोरे निशदिन ध्यान धरी भवि. एटेक.
गीतारथ दरिया गुण भरिया, शांत दान्त अणगार,
जंगम तीरथ तपगण भानु, जिन शासन शणगार;
पंचानन प्रभु प्रगट्यारे विमलादे उदर दरी. भवि. १
सद्गुरु साधुरयण आज्ञाथी, कीधो क्रिया उद्धार
श्रुतसायरनुं मथन करीने, बोल रच्या इग्यार;
तार्या भवि नरनारिरे भूमंडल विचरी. भवि. २
बालबोध आगमनी रचना, रची कीधो उपकार,
छत्रीश गुणथी गुरु गुणवंता, लेश नहि अतिचार;
शीलांगरथना धोरीरे धारी धर्म धूसरी. भवि. ३
वरसावी सृष्टिमां वृष्टि, उपगारी गुरुदेव,
दुकालनुं दुःख दूर निवार्युं, सारे सूरनर सेव;
भूपति मालव देवेरे भक्ति स्तुति उचरी. भवि. ४

ध्यान गुरुनुं जे नर धरशे, तरशे ते संसार,
आधि व्याधि जशे उपाधि, थशे समाधिसार;
सात महाभय जाशेरे अरि दल बल विखरी. भवि० ५

चरण कमल सेवे ते पावे, अष्टसिद्ध नवनिध,
वंध्या पारणे पूत्र झुलावे, अंधनेत्र दीन रिद्ध;
भूतावल ग्रह पीडारे, नाशे बहूलि डरी. भवि० ६

सुविहित आचारज गच्छ नायक, पार्श्वचंद्र सूरिराज,
जे भवि नरनारी गुण गाशे, सफल थशे तस काज;
सहज कलानिधि कीर्तिरे धवल जगत पसरी. भवि० ७

अथ श्रीगुरु स्तुती.

(आवो आवो जसोदाना कंथ अमचेर आवोरे.—एदेशी.)

पूजो प्रेमधरी पार्श्वचंद्र सूरींद्र सदाइ रे,
हरे हरकत जेह हंमेश पूरे पुन्याइ रे;
धीरवीर अने गंभीर गुरु गुणदरियोरे,
शान्त दान्त अने भगवंत सुधारस भरियोरे. पूजो० १

भवि भावे भजो दिनरात गुरुगुणवंतारे,
पूरे परचा पूर्ण प्रताप प्रसिद्ध महंतारे;
फर्या माळवने मेवाड मरुधर देशरे,
वळी गुर्ज्जरमां गुणवंत दीए उपदेशरे. पूजो. २

भलो देश विशेप विख्यात मरुधर मांहिरे,
अति दीव्य सुशोभित तीर्थ मनोहर त्यांहीरे;
गीरी राजे अनोपम आज आवुजी ओपेरे,
तस निकट पुरी प्रख्यात हमीरा शोभेरे. पूजो. ३

जसवंत भूमीमां जन्मधर्यो गुरु राजेरे.
जेना गुण गणना निर्घोप दिगन्ते गाजेरे;
पिता पुन्य तणा भंडार वेलग शाहवंशीरे,
विमला माता उरहंस अहो अवतंशीरे. पूजो. ४

गुरुनाम छे पास कुमार सदा सुख कारीरे,
जस चंद्रवदन सुकुमाळ छबी मनोहारीरे;
सुख शान्ति सदा शोभंती गुरुजीनी कांतिरे,
हरे आधि उपाधि अनेक महा दुःख भ्रांतिरे. पूजो. ५

वय बाळपणे ब्रह्मचारी महाव्रत धारीरे,
ग्रही आगमने अनुसार संयम सुखकारीरे;
गुरु साहुरयण सुणी वयण प्रबोधने पामीरे,
थया शुद्ध प्ररूपक शास्त्रतणा पारगामीरे. पूजो. ६
मरुभूमीतणो मध्य भाग विकानेर जाणुंरे,
तस नजीक पुरी नागोर शहेर वखाणुंरे;
प्रतिबोध्या गोत्र अनेक मिथ्यामति छोडीरे,
जस जोधपुराधिप नित्य नमे करजोडीरे. पूजो. ७
गुरु जन्म धर्यो सदी पन्नर संतीश सालेंरे,
वय नव वरसनी मांय दीक्षा उजमालेंरे;
शत षोडश ऊपर बार नयर जोधाणेरे,
गुरु पाम्या स्वर्गावास वदे कल्याणे रे. पूजो. ८

श्रीपार्श्वचंद्रसूरीकृत

सत्तरभेदीपूजा विधिगर्भित स्तुतिः ॥

(छंद–वस्तुः) रयण कंचण रयण कंचण कलस भिंगार,
खीरोदधि वर जल भरिय आउसहस चउसठी अनोपम,

गंगा सिंधु महानंदी तिर्थ कुंड द्रह अमियरसमय,
भद्रसाल नंदन सुमन पंडक वापी वारि,
जन्म सनाथ अमर करे चउविह सुर परिवारि, ॥ १ ॥
विमल चंदन विमल चंदन घसिय घनसार,
केसर सार सुमेलवी भरिय रत्न कंचन कचोलिय;
अंग विलेपन विधि करिय द्रव्य गंध रस महि मेलिय,
पूजा द्वितीय प्रमोदभरी, निरखे नयण अलोल,
जिनमूरति अवलोकतां मुज मने हरख कलोल ॥ २ ॥
देवनिम्मिय देवनिम्मिय विमल दोइ वस्त्र,
अति उज्वल उद्योतमय सुगणगंध कासाय परिकर,
अखिल अव्यंग अमूल्यतर चंद्रकिरण सम विमल शीतल,
पाहराविय पवित्र चडे पूजा तृतीय जिणंद,
पेखी परमानंदसुं अनुमोदे सवि इंद ॥ ३ ॥
गंध सुरभि गंध सुरभि सखर कर्पूर,
आमोदित आकाशतल किरण बहुल निर्झणीय शशकर,
अति उज्वल तनु जिनतणुं करिय सार संजात मकर,
चरण कमले अरिहंततणे पूजा सकल सुगंध,

चउथी चिंतामणी समी फेडे बहु भवबंध. ॥ ४ ॥
कमल परिमल कमल परिमल कुंद मंदार,
पारिजात जाति सुमन सहस्रपत्र शतपत्र सुंदर,
कोरंटक केतकी सुदल बउलवेली गुलाबचंपक,
जल थलजात सुवर्णतर मुग्गर मुकलित फुल्ल.
पंचमी पूजा प्रकरिय पामीसुं सुह सुर तुल्ल, ॥ ५ ॥
विविध गुंफित विविध गुंफित हार सुविचार,
चारु चतुर नव सरसधर विमल भावि सुविजाति सुमनस,
मालापरिमल बहुमलित भ्रमरवृंद झंकार रव रस;
टोडर सार सुदामकरि छट्ठी पूजा नाम,
नयणे अमिरस पूरियां क्षणे क्षणे करिय प्रणाम ॥ ६ ॥
कुसुम वर्णक कुसुम वर्णक पीत शित नील,
मेघवर्ण तामरसमय पारिजाति दल फुल्ल मरुचक,
विविध जाति श्रेणीसभर वर्ण पूज सातमी मनोहर,
रचना रंग भरिय करिय पूज्या प्रभु वीतराग,
कुमत कूट चूरण करिय प्रगटयो शिवपुर माग ॥ ७ ॥
चारु चूरण चारु चूरण सुरभि उदार,

बावनाचंदन घन घसिय मांहि विमल कर्पूर मेलिय,
कुंकम नव रस रग भरि विपुल वास उल्हास केलिय,
अष्टम पूजा अतुलपरि चरचीय देव जिणंद,
अशुभ करम ऊडी गयां पामियो परमाणंद. ॥ ८ ॥
सहस जोयण सहस जोयण धजा धुरि दंड,
बहुल पताका परिकरित वर्ण रूप रस रंग अतिघन,
घंटा नाद सुघुघरिय पवन पुरिवाजीत शुभसन,
नयन श्रवण पेखीसुणीय धजातणो मंडाण,
नवमीपूजा निर्मली सोहे त्रिभुवनभाण. ॥ ९ ॥
जडित कंचण जडित कंचण भाल लक्ष मूल,
हीरा पोची प्रधानतर हंसगर्भ सौगंधि मेचक,
पोखराग सोभागकर रयणरासि कल्याणकारक,
मुगताफल मंडित मुगुट कुंडल हार विचित्र,
दशमीपूजा दीपती सोहे सार पवित्र ॥ १० ॥
पुष्प घरवर पुष्प घरवर सकल दिशि भाग,
मल्ल मनोहर सदल तर बंधभांति संठाण सम तम,
सकलवर्ण कंदक लता गुच्छ गुल्म चित्राम वन्नमम,

नाथ निरंजन पारवतीय पुष्पतणुं घर रम्म;
पेसी पूजा इग्यारमी सफल हुओ मह जम्म. ॥ ११ ॥
फुल परिकर फुल परिकर करिय प्रभु पाये,
पंचवर्ण दल पुष्पमय पुन्यरेख प्रासाद संतिय.
महियलिमंडितअतिविमलरणझणंतिदिशिविदिशिछप्पय,
द्वादशमी पूजा करिय फुल पगर उदार,
शम रस उज्वल अवतरिओ दीसे परतिख सार ॥ १२ ॥
शालि उज्वल शालि उज्वल आणिय अखंड,
दुव्वलिखंडिय वलिछंडिय मांहि सुरभि सुरतर सुवासीय,
दर्प्पण भद्रासण भरिय वर्धमान श्रीवच्छ मच्छक,
कलश अने स्वस्तिक विपुल नंदावर्त्त निवास,
तेरसमी मंगलकरण पूरे मननी आश ॥ १३ ॥
अगर उत्तम अगर उत्तम मांहि मृगमोद,
कुंदरुक्क तोरुक्कमय मघमघंत वर धूम दत्तिक,
कंचणरयण सुदंडधर धूपधान वैडुर्य चित्तक,
यत्न करी उखेविसुंए भोग भली परिवार,
चउदशमी पूजा निपुण तारे भव संसार ॥ १४ ॥

ताल मद्दल ताल मद्दल वंस वर वीण,
पडह भेरी झलरि तवल संख पणव घुघरीय घम घम,
शिरमंडल मह्हुयरि मरुज निपुण नाद रस छंद उत्तम,
दुंदुभि देवतणो गयणे वाजे सर गंभीर,
पन्नरमी पूजा करी पामीइं भवनुं तीर, ॥ १५ ॥
गीत गुणमय गीत गुणमय पाठ पदबंध,
ध्रूआ माठ त्रिपुठ वर जयत मंठ प्रतिमंठ तालक,
त्रिणि ग्राम स्वर सप्तमय एकविश मुरछा साधक,
तान मान गुण ग्यान लय निरमल नाद सुरंग,
सोलसमी पूजा करी पामे समरस चंग. ॥ १६ ॥
भरह भावे भरह भावे निपुण नरनारि,
नव रस नाटक सुर करे सूरियाभ चमरिंद सुरपति,
प्रभावती राणी प्रमुख भव्यजीव निज भाव भगते,
मन वचन काया करी कर्म खपंति अनंत,
नृति कला सतरसमी पूजा श्री अरिहंत. ॥ १७ ॥
शांतरसमय शांतरसमय अरथ उदार,
अष्टोत्तरमय कवित्त रचे करिय देव अरिहंत गुणमय,

सात आठ पग ओसरी धरिय पाणि सर कमलिनिय दोय,
त्रिणिवार मस्तक धरीय, भूमीतल नीय जाणु,
चउरंगुल उंचे भणे नमुत्थुणं सुअनाण. ॥ १८ ॥
एह विधिवर एह विधिवर सत्तर गुण भेद,
पूजा परमेश्वरतणी करे देव नर नारि श्रावक,
समकितधारि भगति भरी वीगराग शासनप्रभावक,
स्वर्ग मर्त्य पाताल सुर श्रीजिनभवन मझार,
सकल भगति अनुमोदना पार्श्वचन्द्र हर्ष अपार. ॥१९॥

श्री पार्श्वचंद्रसूरीश्वरस्तुति.

(जगदीपकनी आगळेरे, दीपकनो उद्योत–ए राग.)
प्रणमी महसमे प्रेमथीरे, श्री संखेश्वरराय;
गुणीजनना गुण गावतांरे, समकित शुद्धि थाय हो भविका;
वर्तमान श्रुतनो धणीरे,
युग प्रधान शिरोमणीरे, श्री पार्श्वचंद्र सूरींद्र;
वंदो भविजन भावथीरे भावाचार्य मुनींद्र हो भविका;
वर्त्तमान. ए आंकणी. १
नागपुरी तपागच्छे रे, जैनशासनश्रृंगार;

प्रगट्यो भवि तम हारणोरे,
सहस किरण मनोद्दार हो भविका. वर्तमान. २
शुद्धक्रिया जेणे उद्धरीरे, स्वरूप समाधिवंत;
जिनमत परमत जाणतारे,
चौद विद्या गुणवंत हो भविका. वर्तमान. ३
आबु तीरथ पासमेंरे, हमीरपुर उदार;
पोरवाड वंशे दीपतोरे,
वेलगशाह दातार हो भविका. वर्तणान. ४
तसु घरणी विमलामतिरे, विमलादेवी अनूप;
पन्नर (१५३७) सेंत्रीशें जमनीयारे,
देव कुमार स्वरूप हो भविका. वर्तमान. ५
साधुरत्नगुरु हाथथीरे, दीक्षा ले (१५४६) गुरुराय;
उपाध्याय पद (१५५४) पावीयारे,
संघ दे (१५६५) पद सूरिराय हो भविका. वर्तमान. ६
मालदेव मालवपतिरे, देश मेवाड महाराज;
जगत शेठादिक बुझव्यारे,
गणधर जग शिरताज हो भविका. वर्तमान. ७

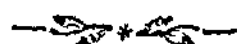
सोमविमलसूरि आदियेरे, सलक्षणपुर विशाल;
युगप्रधान पदे थापीयारे,
पनर नवाणुं (१५९९) साल हो भविका. वर्तमान. ८
देवगवि कुंभ वृक्षथीरे, वांछित अधिक दातार;
विद्यानिधि वयर स्वामियारे,
गौयम सम अवतार हो भविका. वर्तमान. ९
संवत (१६१२) सोलबारोतरेरे, मागसर शुदि त्रीज स्वर्ग.
अणसण सूद्धो आदरीरे,
टाल्या षट् अरि वर्ग हो भविका. वर्तमान. १०
ओच्छव रंग सोहामणारे, भाविक भक्तोये कीध;
देव गुरु भक्ति करीरे,
नरभव ल्हावो लीध हो भविका. वर्तमान. ११
सुविहित आचारज वडोरे, श्री भ्रातृचंद्र सूरिंद;
पूज्यपाद गुरु तारजो रे,
*कहे मुनि सागरचंद्र हो भविका. वर्तमान. १२

---

* रची १ "विक्रम सवत्-१९७१ ना मागशर सुद गुरु बीज स्थल-राजनगर शामलानी पोल "

॥ अथ श्री ॥

श्री पार्श्वचंदसूरीश्वर दादानो छंद.



॥ शिखरणी छंद. ॥

मदाशा पूरोजी मन वचन काया शुचि करी ।
तुमारी सेवाकुं अहनिशि करुं ध्यान धरके ॥
महाज्ञानी ध्यानी परमपददानी गुरु तुमे ।
सुपार्श्वाख्यंचंद्रो दिनकर युतो मोद कुरुते ॥

— —

दुहा.

जिनवरजीके चरण युग, वंदी लाय विवेक;
पार्श्वचंद्रगच्छपतितणा गुण, गाइशुं अनेक. १
सकल सिद्धिदायक सुधि, सुखकारक श्रीकार;
कलियुग मांहे कल्पतरु, भवभयभंजनहार. २
भरतक्षेत्र मांहे भलो, पुर हमीर अभिराम;
वेलोशाह तिहां वसे, नारी विमळदे नाम. ३

संवत १५३७ पनर सेंतिसमें, उपना कुल अवतार;
पूरण पून्ये पाइये, ज्यों मानव अवतार. ४
शुभ तिथि वार नक्षत्र शुभ, सखर जोग श्रीकार;
करण लग्न शुभ ग्रह करी, जन्म हुवो तिणवार. ५
मात पिता मुख निरखकर, हरखित हुवा अपार;
नाम दियो नीको निरख, पासचंद धरी प्यार. ६
चंद्र जेम चडती कळा, वधे गुणे विधुमुख्ख;
नाम जपे नर नारि जे, दूर करे तसु दुःख. ७

कवित्त.

साधुरतन पन्यास आव्या तिण अवसर वन्नह,
निरखी बाळ रतन्न शुद्ध मारग सुवचन्नह,
प्रतिबोधि बहु प्रेम दीधी दीक्षा अती सारी,
आगम शास्त्र अनेक तर्क व्याकरण चित्त धारी,
नाटक छंद ज्योतिष निरुक्त काव्यशास्त्र कविये कह्यां,
बुद्धिबळे जाण्या विविध जोग जुगतिस्युं जिण लह्या. ८
प्रथम शिष्य पासचंद्र पव्वो दुज्जो पभणीजे,
शांति त्रीजो सुखकार साधु इह ओपम दीजे,

ज्ञानवंत गुणवंत साधुगुण शोभे सदाइ,
पासचंद्र गुरु पेख संत मन होय सवाइ,
शीलवंत मांहे सखर तपतेजे तनु दीपतो,
क्षमा खडग कर संग्रीह मोहसुभट मद जीपतो. ९

एक दिवस क्षेत्रपाळ रात सुहिणामांहे आयो:
कहे सुणि पासचंद्र देखी तोर्क्कुं सुख पायो,
घर आयो बहु लंघ हिवे जो थानक थप्पे,
तो हुं थै खुशियाल वले तुं जापह जप्पे,
कह्यो जेम कीधो तिमहि प्रातःकाळ ऊठी तरत,
क्षेत्रपाळ प्रत्यक्ष हुवो ज्ञानवंत जाणी नमत. १०

गुरु पूछी धर ज्ञान शुद्ध मारग सुविचारह,
क्रियाकरण मन खंत शुद्ध मन आण उदारह,
कीध क्रियाउद्धार पनर पेंसट्ठा वरसे; १५६५,
आगम अर्थ अनेक विविध कीधो बहु रसे,
सुभटपुरे आवी सखर बहु श्रावक कीधा वली,
ज्ञानवंत गुरुने नमे श्रावक सहु मननी रुली. ११

राह छंद मोतीदाम जेवो.

स्थीशुं वंदे वहुला राव, वलि नर नारी वधंते भाव;
पेख्यां मुख आनंद होत पंडूर, नमुं पासचंदसूरींद सनूर. १२
कथावंतमांहे सुकेली करंत, सदा गुण संत मुदा पभणंत;
दुखी जननां दुख करे सव दूर, नमुं. १३
आगे जे मोटा हुवा अणगार, तिहांरी ओपम लीधी सार;
कर्म विकट करे चकचूर, नमुं. १४
रतनह तीन लिये रुषिराय, दयावंत मांहे आवे दाय,
मदनह मन गमावे दूर, नमुं. १५
तपे तप द्वादश भेद सदीव, पाळे खटकायतणा जे जीव;
शोभे तनु तेज सदा जिम सूर, नमुं. १६
विकट्ट तरक्क पूरण भेद, भणे नितु आप भणावे वेद;
वादि वहु वाद भांज्या जिण सूर, नमुं. १७
वडा वडा पंडितमांहि विदीत; सहु कोय नमे शुभ चित्त;
भाखे इम लोक अहो गुरु पूर, नमुं. १८

कवित्त.

इण अवसर आषाढ मास मनमान्यो आयो,

श्रावक कीध अरज पूज चोमासो ठायो,
रली रंग उछरंग गीत, गुणीजन नित गावे,
वसु खरचे वळी बहु पूजा देहरे करावे,
आगम वाण वखाणसुं श्रावक सौ हरखीत थया;
पासचंद गुरु पेखनां, दुख दोहग दूरे गया. १९

दुहा.

वर्षारुतु आवी वही, तिण अवसर जमीमांह्य;
मेह खिच कीधी घणी, लोक चिंतातुर थाय. २०
सरवर पाणी सुस गया, थोडे नीठा घास;
भूखे भाग्या लोक बहु, धन विन हुवा उदास. २१
जतीयां मांहे केइ जती, चारित्र लीधो चंग;
ढोर शोर करता फिरे, के पाळे धरी रंग. २२
मालदेव मनमें घणी, चित करे तिण वार;
पूछया पंडित ज्योतिषी, वसु खरच सुविचार. २३
मंत्र जाप वळी विविध परे, कीधा वळी इंद्रजाळ;
अवनीपति आरति करे, वरसे इंद किवार. २४
पंडित सर्व मळी प्रगट, वात कहे सुण वीर;

प्रतापी पासचंद्रह समो, धरमांहे धर धीर. २५

क्षेत्रपाळ जिमकुं खडो. सेव करे कर जोड;

सो सुप्रसन्न हुवां हुवे, मद महीमें दोड. २६

राह भुजगी छंद जेगो.

जनां मुखथी वात सुणी राव माले,

लिया आपुरा उमराव सर्व लारे;

पूज्य वांदवा आवीयो प्रेम मोटे,

हुवा लोक साथे बहु कोड कोटे. २७

हाथी उपरां राव मालह हसंतो,

बेठो लोक जे जे रव मुख उच्चरंतो;

लुले आय सुरंदरे पाय लागे,

करे वीनती राव कर जोडी आगे. २८

सिधां साधकां मांहि तुं सूर दीपे,

नहीं कोइ एहवो नर तुम्ह जीपे;

प्रभु नाम लीयाँ छुटे पाप सारा,

तुम नाम पीयूषधारा उदारा. २९

सुणो अर्ज एक माहरी स्वामी साची,
　　मही मांहि नहीं मेह ए वात काची;
जिण नगरमें स्वामी सरिसा विराजे,
　　तिहां मारि ने काळ ये दोय भाजे. ३०

सदानंदकारी नमें साधु मोटो,
　　तरे धान पाणीतणो किसो तोटो;
तिणे कारणे स्वामी वरसाव मेह,
　　मही मांहि ज्युं माहरी रहे रेह. ३१

सुणी वात गुरु बोलिया मीठी वाणी,
　　वडा राव राणामांहे भव्य प्राणी;
सुणी रावजी मेहनी वात मोटी,
　　वणावी कहांसुं हुवे इहां खोटी. ३२

जिके मांगी भीक्षा भरे पेट भारी,
　　तिहां मेहनी वात लागे अकारी;
खिंचे मुंछ दाढीतणा जेह केस,
　　तिके मेह अणावे कहो क्युं नरेश. ३३

दुहा.

माल कहे पूज्य सांभळो, तुमसम अवर न कोय;
  जोगीश्वर तुम जगतमें, मुज सन्मुख तुं जोय. ३४
अवतारीक जीके खरा, जे करे पर उपकार;
  तिण कारण करुं वीनती, सूरीश्वर बहु वार. ३५
गुरु वोल्या गहकी करी, सुण तुं माल नरींद;
  धर्म पसाये सुख हुस्ये, जास्ये लोकना दंद. ३६

छंद नाराच.

सुणीय वाण मन्न आण राव माल रीज ए,
हरंत कठ तुठ मठ झट्ट कार्य सिद्ध ए;
कला विलास सविलास मुःख भास दीप ए,
सूरींद पासचंद्र संत सुद्ध बुद्ध वंदए. ३७
तरंग गंग अंग चंग देह रंग निम्मलं,
विसाल भाल भूप जाल आय पवलं नम्मे ए
वदंत माल दिगपाल लाल टाल वंदीये. सुरींद. ३८
उदार कारचित्त धार ज्ञानरंग दीप ए,
विकट्ट कट्ट कर्म भट्ट झट्ट मर्व जीप ए;

वलिंद मद रद्दकीय हेलि लब्धि भंद ए,
आगम्म सार चित्त धार भव्य जीव मोह ए
संदेह जेह कीध.छेद जीत फुनी लोह ए;
विशाळ शीळ डील धरी जीत कामकंद ए,
तत्व नंद वेप धार पट्टकाय पाल ए,
सुमति पंच व्रत्त रत्त सत्व सत्य धार ए;
भावन्न भाव धर्मताव तोडी कर्मफंद ए,
अनेक मंत्र जंत्र तंत्र जाण जग्ग मोह ए,
सुदंत संत भेत भंत भाख मुख मोह ए;
विघन्न चूर आश पूर कहे माल इंद ए,

दुहा.

अति आग्रह जाणी करी, कहे सूरि सुण रा
वसुधामें वर्षा हुस्ये, मत चिंतातुर थाय.
काम नहीं ए माहरो, तो पण करणो एह;
धर्म हेत साधे बहु, लब्धि प्रयुंजी जेह.
गौतम विष्णुकुमार फुनि, वीर छद्मस्थ जान

लब्धि फोरवी कारणे, में पण करश्यां मान. ४५
हरखित हुवो नरपति नमी, पहुंतो निज घर जाम;
जाप जप्यो इष्ट देवनो, शिष्य प्रत्ये कहे ताम. ४६
गयणं गणमें वादळी, छे कांइ तुं जोय;
अर्धचंद्र सिरसीअ छे, शिष्य पयंपे सोय. ४७

छंद रामचंद.

बहु जाप जपंतां ध्यान धरंतां गयणंगण वादल पसरे,
मंडितहां घट्टा आइ उमट्टा छुटी छट्टा धरणी तले;
दीसे उद्दामा सीज्या कामा धामं धामं हर्षभरं,
पासचंद सूरिंदं नमे नरिंदं पूनिमचंदं सोभधरं. ४८
गंगंगं गर्जित नादे तर्जित वर्जित माना वालपरं,
झंझंझं झलकित चंचं चलकित पुलकितविद्युत्कर पसरं
संसंसं सौकेआयो झौकेवाळक कूके रमलभरं, पासचंद. ४९
खंखंखं खलहलधरण पडे भलगयण लगोघर विणसंता;
दंदागिड गिडदा दूद करंदा पथ्थर गुडंदा दीसंता,
तहां वदे रे नितु नारी निकर सुशब्दआणी रिदे दर प्रेम
भरं; पासचंद. ५०;

छंद्या गिड गिडदा पाणी रूलदा ऊछाजा उपर पसरंता,
परनाला पाणी वहे ऊधाणी वाण सुहाणी जनकंता;
फुहारा छूटे तापह तूटे दुख्खह घट्टे प्रीतिकरं, पासचंद.५१
वरसे घण मेहं नावे छेहं कीजे केहं लोक कहे,
चूवें रंधाणी अन्न वहाणी जावे ताणी केम रहे;
नारी वहु भीजेसोरह कीजे लीजे वस्त्रह पेमकरं,पासचंद.५२

दुहा.

रात्र मालख्युं वीनती, करे महाजन जाइ;
राख राख स्वामी हवे, वरसें इंद सवाइ.
पदम सरोवरख्युं चल्यो, पाणी पृथ्वी उडार;
शहेरमांहि अति जोरख्युं, करे विगाड अपार.
करिणी ऊपर बैठे कर, आव्यो माल नरींद;
वड उमरामां थट्टख्युं, वंदणकुं सूरींद;
पय प्रणमी भूपति कहे, तुं साचो जोगींद;
छत्रधारी छाजे सखर, हिवे राखो थे इंद.
फुनी ममरण करतां थकां, वादला दिज विसराल;

हुवो दर्पण सारीखो, गयणां गण तिणवार. ५७
योजन बार लगें, इला, वर्षा हुइ अपार;
खबर करी राय मालने, चर मेली लही सार. ५८
जगमांहे जस विस्तर्यो, सूरीतणो जन मुःख;
पय प्रणमें सहु तेहना, दूर कियो इण दुख. ५९
दराहुकम दूरे कियो, मांडवगढ में मेल;
पातशाह प्रतिबोधतां, जन थाये बहु जेर. ६०
चित्रकूटमें चातर्या, कुमति लाग्या पाय;
रीझायो राणा भणी, वास्तुक शास्त्र दिखाय. ६१

कवित्त.

राव माल एक दिन सूरींरे पाये लागो,
अरज करो कर जोडि स्वामि मुज चिंता भागो;
पातसाह हिव सूर आयो मो ऊपरि चल्हि,
किजे किस्यो उपाय वात दीसे सहु ढिल्हि;
जोर साथ साहमो सबळ बारकोस लसकर पडे,
कहो पूज तिण कारणेमुज सैन्या किण विध लडे. ६२

सुगुरु कहे सुण राव मकर मन चिंता कांइ,
सर्व हुस्ये कल्याग भाण सम तेज सवाइ;
बंदिवान सव छोडी विविध वळ पूज रचावो,
शत्रूकार सखर जीव वंध दूर करावो,
कहि वात कीधी तुरत सूरशाह पराभव थयो,
ढोल नगारा वागीया माल घरे मंगळ भयो. ६३
दिन प्रति उगते सूर सवे दरसणकुं आवे,
अति हरखे सूरींद प्रेमशु तास बुलावे;
देश गाम पुर पट्टण शोभ सघले महिमांहे;
श्रावक लोक अनेक जास वंदेवा जाए,
सूरतिवंत मोटो मरद, सकल लोक मुख उच्चरे,
धन्य दिवस धन्य सा घडी एह सुगुरु वंदां जरे. ६४
सुभटपुरे श्रावकां किया नागोर नगर फुनी,
विकानेर माळवे वळी मेडते शहेर भनी;
रतनपुरी मेवाड वळी कृष्णदुर्ग वखाणुं;
मालपुरे संग्राम शहेर. अर्बुदपुर जाणुं,

योगिनी दक्षिण जालंधर राजनगर खंभायते,
श्रावक प्रतिबोध्या बहु जेणे जिनवरने मत्ते. ६५
सोळसें संवत अधिक फुनी बारह १६१२ वखाणुं,
मगशिर शुदनी त्रीज जोधपुरमांहे जाणुं,
स्वर्गलोक मझार गए सुरींद मेरुपति,
सेवे जे नर नारी दिये सुख बहुली संपति,
समरचंद पाटे सखर प्रतप्या तेजे दिनमणी,
श्रावक प्रह उठी नमे तिण घर रंग वधामणी. ६६
रायचंद वडि रीत चित्त धरी पाटे थापे,
शीळवंत शिर मुकट कुमति मारग उत्थापे;
विमळचंद विधु वदन सौख दे संघ सदाइ,
पाटे श्री जयचंद्रसूरि सम तेज सवाइ;
ज्ञानवंत गुरु गुणनिलो क्रियावंत कवियण कहे,
भक्तिवंत जे नर भजे दोलति ते हेले लहे. ६७

निसाणी.

जयचंद्रसूरि गुण गाइशुं आणी बहु भक्ति,
सुखकारी सिद्धवंत दीपे शिर रत्ति;

जन मोटा दे मान वडा भूमिपत्ति,
जोग जुगतिस्युं जे वहे वंदे वहु जत्ति;
सुरतिमांहे शिखर जाणे रति पत्ति,
क्रिया सखर विवस्युं करे दोप टाळ रत्ति;
वंदे श्री जिनदेव जे करी एकह चित्ति,
कर्म कठिन जड तोडवा ऊग्या वहु क्रीत्ति,
करे विविध तप आकरा वसी तिंनह गुत्ति,
विकानेर मांहे वसे शाह जेत्तो सत्ति;
जेतलदेव सुभार्या जयो शुभ मत्ति,
शीळवंत मांहे शिरे शोभे गच्छपत्ति;
ज्ञानी गुरु गाजे गुहिर जन वोले वत्ति,
काम क्रोध लोभ मोहकी जिण मेली तत्ति;
चंद जेम दीपे कळा चढती दीपत्ती,
सिद्धवंत मांहे शिरे शिर सोहे छत्ती;
पदमचंद पाटे थप्या थिर राखण थित्ति,
सोलेमें निवाणुए श्रावक करी वहु भत्ति.
स्वर्ग लोक पहुंता सुखे करे जनम पवित्ति. ६८

(दुहा.)

पदमचंद मुख प्रदमसम, सोहे सूरतवंत,
वैराग्ये संजम ग्रह्यो, आणी मन अति खंत. ६९

घण जिम वाणी गाजती, सोहे जास विसाल;
मोह्या नर नारी निकर, रवि जिम दीपे भाल. ७०

पाट आपणे थापीया, श्री मुनिचंद्र सुरींद;
चंद्र जिसि चडती कळा, वंदे नरना वृंद. ७१

तसु पाटे गुरु थापीया, नेमिचंद सुरींद;
वर्तमान विचरे मही, जाणे सज्जनवृंद. ७२

संवत सतरसें वरस, वीते वरस बयाल;
मागशिर सुदतीजे रच्यो, छंद एह सु विशाल. ७३

श्री जयचंद्र सुरीदना, शीष्य वाचक हिरचंद;
तसु शिष्य जगचन्द इम कहे, श्री गुरुना गुणवृंद. ७४

सुणे भणे जे दिन प्रते, श्री गुरुना गुण जेह;
मन वंछित सुख बहु लहे, जगमांहे जन तेह. ७५

इति श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वरनो छंद समाप्त.

चैत्यवंदनम्. "त्रोटक-छंदः"

मतिरोधक मल्लिश्री शांति सदा, नमि राशि लहो शुभ मेषमुदा;
अजित प्रभु कुंथु जिनेश्वरनी, वृषमें लहो राशि जिनइष्पनी. १
अभिनंदन शंभवनी मिथुने, कहि कर्कमु धर्मनी राशि गुने;
सुमति शुभ सिंह समानविभू, महावीर मुनेमजी पद्मप्रभु. २
जिन ए त्रगनी कहि कन्यकपा, तुल राशि सुपारस पार्श्व यथा;
जिन अष्टम वृश्चिक राश भली, सुविधि अह शीतल नाथ वली. ३.
प्रथमेश्वर ए जिन त्रेगतणी, धनराशि कहि गुणवंत भणी;
मुनिसुव्रत श्रेयसुवंस नमुं, मकरे लही राशि जिनं मणमुं ४.
वसु पुज्यनी राशि सुकुंभ भली, अरनाथ अनंत सुविमल वली;
सुमनीनतणी मधुराशि कही, चउवीश जिनेश्वर श्रेय लही. ५.

॥ श्री चतुर्विंशति जिन स्तुति. ॥ वसंततिलका छंद॥

श्री तीर्थराज विमळाचळ नित्यवंदो,
देखी सदा नयनथी ज्यम पूर्णचंद्रो;
पूजे मळी सुरवरो नरनाथ जेने,
धोरी सदा चरणलंछनमांहि तेने. १.
श्रेयांसना घर विषे रसइक्षु लीधो,
भीक्षाग्रही निज प्रपोत्र सुपात्र कीधो;
माताते विनयभाव धरी प्रभूए,

अर्प्यु अहो परम केवल श्री विभूए ॥ २.

देवाधिदेव गजलंछन चंद्रकान्ति,
संसार सागरतणी हरनार भ्रान्ति;
ए। जिनेश्वरतणा युगपाद पूजो,
दीठो नहि जगतमां तुम तुल्य दूजो. ॥ ३.

जन्मातणी नयरी उत्तम जे अयोध्या,
ताता नरेश प्रभुना जीत शत्रु योद्धा;
देदीप्यमान जननी विजयाखिकारी,
सेवो सदा अजीत नाथ उमंगकारी. ॥ ४.

वाधे न केश शिरमां नखरोम व्याधि,
प्रस्वेद गात्र नहि लेश सदा समाधि;
छे मांस शोणित अहो अति श्वेतकारी,
हे स्वामि संभवछ संपद गात्रतारी. ॥ ५

छे श्वास अंबुज सुगंध सदा प्रमाणे,
आहारने तुम निहार न कोइ जाणे;
ए चार छे अतिशयो प्रभु जन्म साथे,
वंदुं हमेश अभिनंदन जोडी हाथे. ॥ ६.

भूमंडले विहरता जिनराज ज्यारे,
कांटा अधोमुख थइ रजशुद्ध त्यारे;
छे एक जोजन सुधी सुगंधी सुदी,

एवा नमुं सुमति नाथ सदा सुबुद्धि. ७

वृष्टि करे सुरवरो अतिसुस्मधारी,
जानु ममाण विरचे कुसुमो श्रीकारी;
शब्दो मनोहर सुणी शुभ श्रोत्रमाहि,
श्री पद्मनाथ मभुने मणमुं उछाहि. ८.

सेवा करे युगल यक्ष सुहंकरोने,
विंजे धरी करविषे शुभ चाम्मरोने;
वाणी सुणे सरस जोयण एक सारी,
वंदु सुपार्श्व पुरुषोत्तम मीतिकारी ९.

जल्पे जिनेंद्र मुख मागधि अर्धभाषा,
देवो नरो तिरिगणो समजे स्वभाषा;
आर्यो अनार्य सघला जन शान्ति पामे,
चंद्रमभु चरण लंछन चंद्रनामे १०.

वैरि विरोध सघळा जन त्यां विसारे,
मिथ्यात्विओ विनयी वाक्य मुखे उचारे;
वादी कदि अविनयी थइ वाद मांडे,
देखी जिनेश गुणनिधि जन गर्व छांडे. ११.

जे देशमां विचरता जिनराज ज्यारे,

भीती भयंकर नहि लवलेश त्यारे;
ईती उपद्रव दुकाळ ते दूर भाजे,
नित्ये करुं नमन शीतळ नाथ आजे. १२.
छाया करे तरु अशोक सदैव सारी,
वृक्षो सुगंध शुभ शीतळ श्रेयकारी;
पचीश जोयण लगे नहि आधिव्याधी,
श्रेयांस नाथ तुम सेवनथी समाधि. १३.
स्वप्नो चतुर्दश लहे जिनराज माता,
मातंगने वृषभ सिंह सु लक्ष्मीदाता;
निर्धूम अग्नि शुभ छेवट देखी ने ते,
श्रीवासु पूज्य प्रभुता शुभ स्वप्नथी ते. १४.
जे प्रातिहार्य शुभ आठ अशोक वृक्षे,
वृष्टि करे कुसुमथी सुरनाद दक्षे;
बे चाम्मरो शुभ सुखासन भास्करो ते,
छे छत्र हे विमळ नाथ सुदुंदुभी ते. १५.
संस्थानछे सम सदा चतुरस्र तारुं,
संघेण वज्र ऋषभादि दीपावनारुं;
अज्ञान क्रोध मद मोह इर्यां तमोए,

एवा अनंत प्रभुने नमीए अमोए. १६.

जे कर्म वैरी अमने बहु पीडनारा,
ते कर्मथी प्रभु तमेज मुकावनारा;
संसार सागरथकी तमे तारनारा,
श्री धर्मनाथ पदशाश्वत आपनारा १७.

श्री विश्वसेन नृप नंदन दीव्यकान्ति,
माता सुभव्य अचिरा तस पुत्र शान्ति;
श्रीमेघना भव विषे सुर एक आवी,
पारेव सिंचनकर्तुं स्वरुप बनावी. १८.

पारेवने अभय जीवीत दान आप्युं,

रत्नो चतुर्दशनिधान उमंगकारी,
बत्रीस बद्ध नित नाटक थाय भारी;
पद्मानन्नी सहस चोसठ अंगनाओ,
तेवी तजी अरजिनेश्वर संपदाओ. २२.

नित्ये करे कवल क्षेपन कंठ सुधी,
षट् मित्रने तरण काज निपाइ बुद्धि;
उद्यान मोहन गृहे रची हेम मूर्ति,
मल्लिजिनेश पडिमा उपकार कर्ति. २३.

निस्संगदान्त भगवंत अनंत ज्ञानी,
विश्वोपकार करुणानिधि आत्मध्यानी;
पंचेंद्रियो वश करी हणी कर्म आठे,
वंदो जिनेंद्र मुनिसुव्रत तेह माटे. २४.

इंद्रो सुरो नरवरो मळी सर्व संगे,
जन्माभिषेक समये अति भक्ति रंगे;
विश्रा धरी सुरवरी शुभ शब्द रागे,
संगीत नाटक करे नमिनाथ आगे. २५.

राजेमती गुणवती सती सौम्यकारी,
तेने वमे त्यजी थया महा ब्रह्मचारी;
पूर्वे भवे नव लगे हुम स्नेहधारी,
हे नेमिनाथ भगवंत परोपकारी. २६.

सम्मेत शैल शिखरे प्रभु पार्श्व सोहे,

शंखेश्वरा अमीझरा फलिद्धंड मोहे;
श्री अश्वसेन कुलदीपक मातु वामा,
नित्ये अचिंत्य महिमा प्रभु पार्श्वनामा. २७.
सिद्धार्थ राय त्रिसला सुत नित्य वंदो,
आनंदकारक सदा चरणारविंदो;
जे शासनेश्वर तणो उपकार पामी,
पूजुं प्रभु चरण श्री महावीर स्वामी. २८.
श्वेतांबरी शुभ परंपर आत्र जेनी,
संवेग जैन रसरंगित आत्म तेनी;
शास्त्रोक्त शुद्ध उपदेशक मुख्य सूरि,
श्री पार्श्वचन्द्र गुरराज प्रताप भूरि. २९.
चंद्रार्ध शोभित विशाल कपालकांति,
श्री हर्षचंद्रसूरि राज स्वभाव शान्तिः
शिष्यो थया तस पदे सूरि हेमचन्द्रो,
छे जेष्ट भ्रात कुशलेंदु सुमुक्तिचन्द्रो. ३०.
पट्ट परंपर युगंधर उग्रभागी,
ऋषि परिग्रह महामद मोह त्यागी;
ते विद्यमान विचरे गुणवंत आजे,
श्री भ्रातृचंद्र गुण निर्मल सूरि राजे. ३१.
विख्यात श्री गुरु सदा हरचंद्र हेते,
तेना प्रताप सुपसायथी शान्ति चित्ते;
द्वात्रिंसिका स्तुति जिनेंद्र भक्तकाव्ये,
श्रेयो वसन्त तिलका कृति शुद्ध भाव्ये. ३२.

(द्रुतविलंबित-छंद.)

कलश–नयर वीरम गुर्जरमां भलो, अजित नाथ जिनालय निर्मलो;
शशि महर्षि निधि वसुधाशनि(१९७१)वदित्रयोदशी फाल्गुण मासनी. ३२.

(इतिश्री चतुर्विंशतिजिनद्वात्रिंशिका स्तुतिः)

॥ सरस्वति माताजीनी स्तुति (वसंत तिलका छंदः)

चंद्रानना कमळनेत्र महास्वरूपी, वीणाविनोद मधुर ध्वनि दीव्यरूपी;
शान्ति सदा शुभमति अति बुद्धिदाता, आपो दयाकरी विशारद सुज्ञमाता १
काश्मीरदेश तुजवास विलासकारी, वस्त्रोभर्यांअतिशुशोभितशुभ्रधारी;
पद्मासनी विमळवाहन हंसराजे, जे पुस्तकाकरसुकोमलमां विराजे. २
गातां गुणो तुमतणा नहि पार आवे, वाचाविना जन कहो वयम बोल फावे;
माता अगाध गुण पूर्ण भर्या तमोमां, शक्ति नहि किमपि लेश अरे अमोमां;
जे बाळको वचन अज्ञपणे प्रकाशे, मातापिता मन विषे अति हर्ष थाशे;
ते तुल्य जो सुजविषे तुम प्रेम आणो, तो शिघ्रसेवक विषे प्रभुता पीछाणो.४
दे दिप्यमान वरदाइ कृपा करीने, आपो अमोमति निरंतर धी धरीने;
विद्याविनोद कविता करवा सुरंगे, कल्याणने अहनिशे चडता उमंगे.५इति

वळी कंटक तीक्ष्ण रे अधोमुख थाय सहि,
सुगंधिक पुष्पजरे जानु प्रमाण लहि. जग. ५
युग यक्ष समिपे रे चामर हस्त ग्रही,
प्रभुजीनी वाणी रे जोयण गामी कही;
अर्ध मागधी भाषा रे पर्यपे श्रीमुखथी,
सुरनर तिरि समजे रे करे स्थिरता सुखथी. जग. ६
कदि आर्य अनारज रे सुणे एक चित्त करी,
द्वेष इर्षा निवारे रे वैर विरोध हरी;
परतिर्थि ही आवी रे कदि अभिमान धरे,
थइ सरल स्वभावी रे चित्त समाधि करे. जग. ७
पंचविंशति जोयण रे अतिशय पूज्यतणां,
इति भीती उपद्रव रे टळे दुःख दूर घणा;
प्रभुना गुण पठतां रे सिद्धि समृद्धि मळे,
चौत्रीश अतिशय रे गुणतां पाप टळे. जग. ८
एम मूळथी चारज रे एकादश कर्मक्षये,
एक उगणीस विंशती रे करे सुर भक्ति मये;
सर्वे मळी चोत्रीश रे अतिशय एह कह्या,
दिन रात्र सुणंतां रे नित्य कल्याण लह्या. जग. ९

अजीतजिन स्तवन.

(विमला नव करशो उचाट के वेला आवशुंरे-ए राग.)

श्री अजीत जिनेश्वर वंदो भविजन भावशुंरे. भविजन
निरखी नयणे श्रीजिनराज सदा गुण गावशुंरे सदागुण.
जीनशत्रु नृप नंदनभारी, विजया माता छो मनोहारी;
गजलंछन चरणे प्रभुधारी, करजो कृपानिधि तुम शरणे
प्रभु आवशुंरे. श्री अजीत. १

दोष अढार रहित छो प्रभुजी, रागद्वेष जीत्याछो जिनजी;
कनक उपलमां सरखी मरजी, नहि तुम सरिखा दीठा
दीव्य प्रभावशुंरे. श्री अजीत. २

माघ सुदी अष्टमी दिन स्वामी, जनम अयोध्या नयरी पामी;
विजय विमानथी अंतरजामी, स्वामी नहि इक्ष्वाकु वंशी
स्वामी वधावशुंरे. श्री अजीत. ३

सार्धे चार शत धनुष बीराजे, देहमान प्रभुजीनुं राजे;
कनक वर्ण देखी दुःख भाजे, लखबोतेर प्रभुजी पूरव आयुखुंरे.
श्री अजीत. ४

राग रहित रागीने तारो, भवोदधिथी मुज पार उतारो;
शरण ग्रह्याने स्वामी उगारो, तुम विण नहि कदि अवरने
ध्यावशुंरे. श्री अजीत, ५

भवभय भंजन तुं भगवंता, जय जगत्राता छो गुणवंता;
सिद्ध स्वरुपी छो जयवंता, तजी मोह कपट करी दूर
कल्याण कहावशुंरे. श्री अजीत, ६

श्री केशरीयाजीनुं स्तवन.



मेमे पणमुं महसमेरे, ग्रामजीयो मुज मनरमेरे श्री केशरीयो लाल;
आठ महाभय टालजोरे, आलजो सिद्धि दयाल हो जिनजी. १
तुम शरणे हुं आवीयोरे, दरिशन प्रभुनो पावीयोरे, भावीयो भावस्वरूप;
धुलेवानगनदेश्वररे, आपजो भूपना भूप हो जिनजी.तुम शरणे० आंकणी.२
तुम आगळ प्रभु शुं कहुंरे, जागग जिन साखी घहुंरे, कर्म कर्या रे अनंत;
निंदा सुगिजन देवके रे, द्वेष धर्यो मति मंद हो जिनजी. तुम. ३
जीवदया सत्य नवि धर्युरे. पापे निम आतम भर्युरे, चोरी मैथुन धारी;
परिग्रह रात्रीभोजनेरे, पसरजी मवी न नीवारी हो जिनजी.तुम शरणे. ४
संजम भावना नवी रहीरे, आशा दासी मन रहीरे, सेव्या पाप अढार;
हेय ज्ञेय उपादेयनोरे, जाण्यो नवी ते सार हो जिनजी. तुम शरणे. ५
करुणानिधि करुणा करोरे, भवोभवनी चिंता हरोरे, साधिष्ठायिक देव;
चोसठ फागुण मासनीरे, वदी अष्टमी करी सेव हो जिनजी. तुम. ६
सुविहित क्रियानो धणीरे, प्रगटयो जैनमां दिनमणिरे, श्री पार्श्वचंद्र सूरीन्द्र;
श्री भ्रातृचन्द्रसूरि तारजोरे, भणे मुनि सागरचंद्र हो जिनजी.तुम. ७

समाप्त.

॥ चोत्रीश अतिशयनुं स्तवन ॥

(मनमंदिर आवोरे कहुं एक वातडली-ए देशी.)

जगनायक जिनजीरे अतिशय आपतणा,
समवायांग सूत्रेरे भांख्या भेद घणा;
नख केश न वाधेरे नही मल रोग कदा,
सुरभि पय सरीखोरे शोणीत श्वेत सदा. जग, १
जस श्वास सुगंधीरे पसरे पद्मकली,
विधि आहार निहारे रे नही कोइ जाणे वली;
जिन जन्मथी सायेरे अतिशय चार कह्या,
गीतारथ पासेरे सुणी श्रवणे सद्दह्या जग. २
धरम ध्वज चक्रनरे दीपे देदीप्य रवी
छत्रत्रय गगनेरे वीराज कामगवी;
स्वेतचामर शोभेरे शशी राम सुंदरता,
पायपीठ सुआसनरे आगळ जइ ठरता.
ध्वज दंड प्रचंडरे जोयण सहस्रतणो,
मोहमल्ल ते देखीरे भाजे दूर घणो;
कल्पवृक्षनी छाया रे प्रभु शीर नित्य ग
प्रभा मंडल पाछळ रे पूर्ण प्रकाश करे,
भूमंडल जोयणरे वायुथी शुद्ध करे,
जल सूक्ष्म वरसे रे रजोकण दूर करे,

प्रस्तावना संबंधी शुद्धिपत्र.

पृष्ठ	अशुद्ध.	शुद्ध.	लिटि.
१०	रपिः	रपि	१५
११	अंध	अंत	१२
१२	अत्मि	अभि	४
१३	जेमोने	जेमोनी	१०
१३	जेकोने	जेकोनी	१५
१५	न	ना	१९
१६	गणोत	मुणोत	५
१६	सालव	मालव	१०
१६	तेआ	तेओ	१०
१९	धित	धीत	५
१९	नीत	दीत	९
१९	येन	यैन	२१
२५	रू	रूः	९
१६	श्रृत्वा	श्रुत्वा	१४
२७	नस्त	न्रस्ते	१६
२८	रू	रूः	६
३१	सव्व	सव्वे	१४
३५	०॥	श्रीपार्श्वचन्द्रे डमसंयवीर.	

ग्रन्थ संबंधी शुद्धिपत्र.

पृष्ट.	अशुद्ध.	शुद्ध.	लिटि.
१	सद	सद्	२
१	काह्य	काद्य	५
३	जतम	जनम	१६
६	सप्ता	सप्त	१९

आ पुस्तक उपयोगवाला सज्जनभाइयो लइ शके ते हेतुथी आनी फक्त एक आनो कीमत टपाल खर्च जुदु ए प्रमाणे राखवामां आवेल छे अने जे उपज आवसे ते गुरुस्थुभ खाते. वापरवामां आवसे. जेम बने तेम पुस्तकनी अशातना टालवी एवी वाचकवृंद प्रते नम्र विनति छे.

ली. मं–ल.

श्री पार्श्वचन्द्र सूरिवरस्तुतिः—

अंतिम मंगलम्.

शार्दूल विक्रीडितं—वृत्तम्

श्रीमन्नागपुरीय विश्रुततपा—
गच्छाच्छवार्धीदवो
येऽङ्गांगाहशरद्यवाप्तसकला—
र्हद्वाक्य सद्युक्तयः ॥
येषामाख्यकयैव संप्रति जग—
त्याख्यायते सद्गण—
स्तावत्ते भुवि सूरयः समभवन्
श्रीपार्श्वचन्द्राह्वयाः ॥ १ ॥

इति श्री पार्श्वचन्द्र सूरीश्वर चरित्रं समाप्तम् ॥
शान्ति २ सर्वसुखाय भवतु
